ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

पोष-माघ, संवत् नानकशाही ५४८
वर्ष १० अंक ५ जनवरी 2017

संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ
गुरप्रीत सिंघ भोमा

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

Final

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

देहरा मसीत सोई पूजा ओ निवाज़ ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है ॥
देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है ॥
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सभै एक ही बनाउ है ॥१६॥८६॥

दशम गुरू श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा उच्चरित ये पावन पंक्तियां उनकी पावन बाणी 'अकाल उसतत' में अंकित हैं। इन पावन पंक्तियों में गुरु जी विभिन्न धार्मिक मतों एवं संप्रदायों के धर्म-स्थलों, पूजा-उपासना की विधियों और धार्मिक ग्रंथों की विभिन्नता में विद्यमान तात्विक एकता दर्शाने का परोपकार करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि धर्मसाल/मंदिर और मस्जिद/मसीत एक ही हैं अर्थात् इनमें मूल रूप में कोई अंतर नहीं है। हिंदू धर्म की उपासना-विधि 'पूजा' और इस्लाम की बंदगी के प्रचलित रूप 'नमाज़' में मूल रूप में भिन्नता बिल्कुल नहीं है। उनका आराध्य या इष्ट वह परमात्मा एक ही है। वे अपनी-अपनी विधि से उसी सृजनहार प्रभु को ही याद करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि मनुष्य समूचे विश्व में मूल रूप से एक की रचनाकार की रचना है मगर इस एक ही रचनाकार की रचना, मनुष्य पर अलग-अलग धर्मों, देवी देवताओं और सांप्रदायों का प्रभाव है। किसी को देवता और किसी को राक्षस कहा जाता है, कोई पक्ष और कोई गंधर्व कहलाता है, किसी को हम तुर्क कह देते हैं तो किसी को हिंदू कहते हैं। इनमें जो भी अंतर बाहरी रूप से दृष्टमान है यह इनके विभिन्न प्रकार के भूमंडल के विभिन्न प्रभावों के कारण है।

वैसे इनके नयन, कान, शरीर के अन्य अंग तथा इनकी बोलने की शक्ति समान है। सभी शरीर मिट्टी, हवा, अग्नि और जल आदि तत्वों से निर्मित हुए हैं। वह अल्लाह, हिंदू और मुसलमान के भेस से ऊपर है। उसी एक परमात्मा से ही समस्त विश्व का निर्माण हुआ है। मनुष्यों को कदापि धार्मिक सांप्रदायों की कटु सांप्रदायिक दृष्टि के धारक बनकर आपस में लड़ना-झगड़ना, घृणा एवं वैर भाव रखना उचित नहीं है।

संपादकीय

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का रूहानी मिशन

गुरु साहिब का रूहानी मिशन देश कौम की हदबंदियों से ऊपर समूची मानवता को अपने कलावे में लेकर सर्वसांझा भाईचारा सृजित करना था। इस सर्वसांझे भाईचारे के लिए धर्मी राज्य तथा धर्मी समाज की ज़रूरत थी, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, असमानता को खत्म कर अमीर-गरीब, ऊंच-नीच के पक्षपात को मिटाकर सबमें *'न को बैरी नही बिगाना'* तथा *'एकु पिता एकस के हम बारिक'* का रूहानी एहसास जगाया जा सके।

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी तक इस मिशन की पूर्ति के लिए गुरु साहिबान को लंबा संघर्ष करना पड़ा, जिसमें दो गुरु साहिबान को अपनी शहादत भी देनी पड़ी। अब दशम नानक के रूप में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा आरंभ किए इस रूहानी मिशन 'नानक निर्मल पंथ' की 'गुरु खालसा पंथ' के रूप में सम्पूर्णता करनी थी, इस लिए अकाल पुरख ने विशेष बख़्शिशों से निवाज कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को इस जगत में भेजा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस जगत में आने के मंतव्य के बारे में बताते हुए बचित्र नाटक में लिखते हैं :

हम इह काज जगत मो आए ॥ धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥ दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥

गुरु साहिबान के इस स्वःकथन से स्पष्ट हो जाता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस जगत में अधर्म का खातिमा करके धर्म का राज्य स्थापित करने के लिए आए थे। गुरु जी के इस मिशन की पूर्ति के आगे जो भी दुष्ट-दोखी अड़ा चाहे वह मुगल हकूमत थी, चाहे पहाड़ी हिंदू राजे गुरु जी ने शस्त्रबद्ध संघर्ष करते हुए इन दुष्ट-दोखियों को पछाड़ा तथा सदैवकालीन धर्मी राज्य तथा धर्मी समाज को कायम करने के लिए जूझने हेतु आदर्शक मनुष्य की सम्पूर्णता तहत खालसा पंथ की सृजना की।

यदि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समूचे जीवन पर संक्षिप्त दृष्टि डालें तो बचपन में गुरु पिता जी को धार्मिक स्वतंत्रता के लिए शहादत की तरफ भेजना, जुल्म तथा अन्याय के विरुद्ध जंगें लड़नी, बुज़दिल हो चुकी भारतीय मानसिकता के अंदर वीर रस पैदा करने के लिए वीर रसी साहित्य की रचना करना, खालसा पंथ की सृजना करना तथा पंथ की खातिर अपना सरवंश कुर्बान कर देना। अंतिम समय तख़्त श्री हजूर साहिब में शबद गुरु, श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु स्वीकार करते हुए सिक्ख संगत को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के लड़ लगाने तथा आगे से देहधारी गुरु-परंपरा को खत्म कर के 'नानक निर्मल पंथ' की 'गुरु ग्रंथ' तथा 'गुरु पंथ' के रूप में सम्पूर्णता करते हुए बदी के विरुद्ध निरंतर संघर्ष के लिए पांच सिंघों सहित बाबा बंदा सिंघ बहादुर जी को पंजाब की तरफ भेजना यह सब इतने महान कार्य एक जामे वो भी मात्र ४२ वर्ष की आयु में सम्पूर्ण कर लेने गुरु जी की अगमी शख़्सियत तथा अकाल पुरख की निवाज़िश का कारण ही था।

Final

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का इस जगत में आगमन उनके संघर्ष तथा 'खालसा पंथ' की सृजना को किसी विशेष श्रेणी की रक्षा हेतु किए गए कार्य सिद्ध करने के यत्न श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के रूहानी मिशन को सीमित करने के यत्न हैं, जिससे सुचेत रहने की ज़रूरत है। गुरु जी का इस जगत में आगमन किसी विशेष श्रेणी की रक्षा करना नहीं बल्कि ज़ालिमों को सोधकर मज़लूमों तथा मानवीय अधिकारों की रक्षा करना और लोगों को खुद अपनी इज़्जत व अपने हकों के रखवाले बनाना था।

दूसरा, गुरु जी को भारतीय परंपरा में रखकर देखने के यत्न भी गुरु जी की अज़मत को नीचा करना है। गुरु जी का आशय अवतारवादी *स्व:पूजा 'ते कहै करो हमारी पूजा ॥ हम बिन अवरु न ठाकुरु दूजा'* के उल्ट *'आदि अंति एकै अवतारा ॥ सोई गुरु समझियहु हमारा ॥'* वाला था, जो गुरु जी के मिशन को भारतीय अवतारवादी मिशन से अलग कर गुरु जी के मिशन की विलक्षणता पेश करता है, जिसमें पूजा अकाल की, परचा शबद का, दीदार खालसे का वाला आदर्श शामिल है। सदियों से देश की गुलामी का कारण देश वासियों में एकता की कमी थी। इस एकता की कमी का मुख्य कारण अवतारवादी इष्ट अनेकता ही थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मानवता को समझाया कि यह अवतारवादी अनेक पूजा किसी प्रकार भी मानसिक तथा शारीरिक गुलामी के उद्धार का साधना नहीं बन सकती :

राम रहीम उबार न सकि है जा कर नाम रटै है ॥
ब्रहमा बिशन रुद्र सूरह ससि ते बसि काल सभै है ॥

इस लिए गुरु जी ने अवतारवादी कृतम की पूजा छोड़कर सारी सृष्टि के करनहार करतार को परमेश्वर मानने का उपदेश किया :

बिन करतार न किरतम मानो ॥
आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसर जानो ॥

गुरु जी ने इष्ट अनेकता को खत्म करके इष्ट एकता के उपदेश से धार्मिक, आध्यात्मिक क्रांति लाई तथा एक पुरखी राज्य की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक गुलामी को ख़त्म करके पंच प्रधानी सिद्धांत को लागू किया।

आज मनुष्यता को दरपेश समस्याओं तथा हर प्रकार की बुराईयों के समाधान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की रूहानी विचारधारा में से तलाशे जा सकते हैं। इस लिए गुरु जी की विचारधारा को विश्व भर में पहुंचाने हेतु हमें एक लहर बनकर आगे आना पड़ेगा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ३५० वर्षीय प्रकाश गुरुपर्व मनाते हुए हमें खुद भी आत्म चिंतन करने की ज़रूरत है कि आज हम गुरु जी के उपदेशों को किस हद तक अपने व्यवहारिक जीवन में अपना सके हैं। आज हम जो सरदारियां तथा रुतबे का आनंद ले रहे हैं यह सब कलगीधर पिता सरवंशदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कुर्बानियों का ही सदका है। गुरु जी के शुक्र गुज़ार बने रहने के लिए हमें अलह यार खां जोगी के शब्द याद रखने चाहिए :

दिलाई पंथ को सर-बाज़ीओ से सरदारी,
बराइ कौम यि रुतबे लहू बहा के लिए।

Final

धर्म की सिरमौर सल्तनत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को परमात्मा ने संसार में हो रही धर्म की हानि के बारे में बताया और धरती पर जाने की आज्ञा दी क्योंकि धर्म की मर्यादा को बचाने का और कोई उपाय नहीं बचा था। परमात्मा ने उन्हें अपना सुपुत्र धारण किया *"मैं अपना सुत तोहि निवाजा"* और अपने सारे गुणों से विभूषित कर धरती पर भेजा *"पंथ प्रचुर करबे कहु साजा"* परमात्मा ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जो कार्य सौंपा उसके दो मुख्य पक्ष थे, पहला था धर्म की प्रतिष्ठा को स्थापित करना और दूसरा था धर्म की राह पर चलने वालों को संकटों, दुखों से उबारना। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पटना साहिब में प्रकाश होना धर्म की समर्थ सत्ता का प्रकट होना था। आज तक जो धर्म राजाओं, महाराजाओं, शक्तिशालियों पर आश्रित था उसके सर्व शक्तिशाली रूप के सामने आने का समय आ गया था। कलियुग में संसार की जो अवस्था हो गई थी उससे निपटने का यही एक उपाय बचा था परमात्मा के पास, जिसकी पूर्ति के लिए परमात्मा ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को चुना और अपने पुत्र के रूप में अंगीकार किया था। कलियुग कैंची की तरह मानवता को दुख, त्रास दे रहा था, राजा, शक्तिशाली लोग कसाई हो गए थे, सच का चंद्रमा झूठ-फरेब की घोर अमावस जैसी रात में छिप गया था। इससे उबरने के लिए गुरु शबद की देग और अन्याय को धराशायी कर देने वाली तेग से अदभुत चमत्कार करने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अधिक सुयोग्य और कौन हो सकता था, उनकी कठोर साधना और परमात्मा से एकरूप हो चुकी पुनीत आत्मा ही धरती पर सच के चंद्रमा को पुन: स्थापित कर सकती थी ताकि लंबी अमावस की रात का अंत हो सके।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, श्री गुरु नानक जोत के दसवें वारिस के रूप में संसार में आये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की धर्म स्थापना की राह श्री गुरु नानक देव जी पहले ही खोल चुके थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्वयं इसका उल्लेख करते हुए बचित्र नाटक में लिखा कि श्री गुरु नानक देव जी ने मानवता को सच के मार्ग से अवगत कराया। जो लोग उनके अनुयायी बने वे जन्मों-जन्मों के पापों, विकारों से मुक्त हो गये। श्री गुरु नानक देव जी के इस मिशन को आगे बढ़ाने में श्री गुरु अंगद देव जी से लेकर श्री गुरु हरिक्रिशन जी ने अमूल्य योगदान दिया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का बलिदान एक बहुत बड़ी घटना थी जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के धर्म चलावन के उद्देश्य का पहला अध्याय था। जब कश्मीर के ब्राह्मणों का दल पंडित किरपा राम के नेतृत्व में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के दरबार में आया उस समय बाल गोबिंद राय (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) की आयु मात्र नौ वर्ष की थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को मज़लूमों की रक्षा हेतु शहादत के लिए भेजा। अधर्म की ताकतों के लिए यह पहला सबक था कि धर्म की निडरता

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३*

Final

और दृढ़ता के सामने टिक पाना आसान नहीं होगा। दिल्ली के गुरुद्वारा सीस गंज साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के तन से उनका शीश अलग हुआ किंतु अधर्म और अन्याय के पैरों तले ज़मीन धंसनी आरंभ हो गई जिसका एहसास उन्हें तब हुआ जब सन् १६९९ ई की वैसाखी के दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा की साजना की।

श्री गुरु तेग बहादर जी की महान शहादत के बाद जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गुरआई पर आसीन हुए तो उनकी गुरु-शबद की देग और गुरु-कृपा की तेग दोनों ने साथ-साथ चलना आरंभ किया और संयुक्त रूप से वह कर दिखाया जो दुनिया ने कभी देखा या सोचा नहीं था। लोगों को लगता था कि ईश्वर मंदिरों, मस्जिदों, धर्म स्थानों पर है, उसकी कृपा मंत्रों, यज्ञों, अनुष्ठानों, तीर्थ स्नानों में बसती है। लोगों में भ्रम था कि परमात्मा वन में, गुफाओं में, पर्वतों पर जाकर, घर-बार, समाज त्याग कर ही पाया जा सकता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कलम उठी और बड़ी मज़बूती से इन सारी भ्रमक आवधारणाओं को धराशायी करती चली गई। जब गुरु साहिब की तेग चली तो लोगों के मन परमात्मा के प्रति विश्वास से भर उठे और उनकी निरीहता एक अविचल आशा में बदल गई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संसार में धर्म का जीवंत रूप बन कर आए। एक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ही थे जिनका पूरा जीवन धर्म की सच्ची व्याख्या था। धर्म के जितने भी रंग थे उनके व्यक्तित्व में किसी न किसी अवसर पर, किसी न किसी ढंग से खुलकर प्रकट हुए। गुरु साहिब के सामने सबसे बड़ी चुनौती सच की शक्ति को उभारना और संगठित करना था। इसके लिए उन्होंने बड़े ही नियोजित ढंग से चरणबद्ध शुरूआत की। उनके समय तक गुरु साहिबान की बाणी सिक्खों को कंठस्थ हो चुकी थी और नित्तनेम उनके जीवन का हिस्सा बन चुका था। साधसंगत में शबद-कीर्तन होता और गुरबाणी की व्याख्या का भी आरंभ हो चुका था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का लक्ष्य सिक्खों के जीवन में अमूल परिवर्तन कर उन्हें एक नया स्वरूप प्रदान करने का था जिसके लिए व्यापक चेतना और आत्म गौरव जाग्रत करने की आवश्यकता थी। गुरु साहिबान के अनुयायी बनकर और गुरबाणी से जुड़कर लोग धर्म को तो समझने लगे थे किंतु सदियों से व्याप्त सामाजिक, आर्थिक प्रभावों और दबावों से उबर पाना आसान नहीं था। समाज का ताकतवर वर्ग अभी भी शक्तिशाली हैसियत रखता था। उधर हिंदोस्तान में विदेशी आक्रमणकारियों ने स्थिति को और विषम कर दिया था। मुगलों के सत्ता में आने के बाद जबरदस्त धार्मिक अंतर्विरोध शुरू हो गए थे और बाद में इस अंतर्विरोधों ने जबरिया धर्म परिवर्तन और धार्मिक प्रताड़ना का रूप ले लिया था। श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर साहिब का बलिदान एक सशक्त चुनौती की तरह थे किंतु धर्म की मर्यादा बनाए रखने के लिए इस स्थिति का बदलना आवश्यक था। गुरु साहिब द्वारा स्थापित श्री पाउंटा साहिब और श्री अनंदपुर साहिब बौद्धिक चेतना और आत्मिक जागृति के केंद्र बन गए। गुरु साहिब ने स्वयं प्रेम और आग्रह सहित पूरे भूभाग के विद्वानों, कवियों, लेखकों को आमंत्रित किया और उनके रहने की उत्तम व्यवस्थाएं कीं। राजाओं, बादशाहों के दरबार मुसाहिबों, चाटुकारों से भरे रहते थे। सच्चे पातशाह का दरबार गुणी लोगों से सुशोभित होने लगा। गुणों की ऐसी सामूहिक प्रतिष्ठा पहली बार देखने को मिली थी। राजाओं, बादशाहों के दरबारों में उस राजा,

Final

बादशाह के झूठे-सच्चे गुणगान हुआ करते थे किंतु सच्चे पातशाह के दरबार में परमेश्वर की महिमा का गान गूंज रहा था। काव्य-साहित्य की बारीकियों से अनजान राजा-बादशाह अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर खुश हो जाया करते और मोहरें लुटाया करते थे। गुरु साहिब स्वयं सिद्धहस्त कवि थे और अनेक भाषाओं में निपुण होने के कारण शब्दों की गहरी समझ रखते थे। उन्होंने स्वयं कवियों को दिशा देकर श्रेष्ठ साहित्य रचने के लिए प्रेरित किया और उत्तम रचनाओं का भरपूर सम्मान किया। उन्होंने भाई नंद लाल जी की एक रचना बंदगीनामा का तो नाम ही बदल कर ज़िंदगीनामा कर दिया था जो इस बात का प्रतीक था कि वे अपने दरबार में रची व प्रस्तुत की जाने वाली रचनाओं को कितने ध्यान से सुनते और अपनी राय बनाते थे जो रचनायें, रची व पढ़ी जातीं उन्हें सुनकर सारी संगत अभिभूत होती। वास्तव में ये रचनायें संगत के लिए ही थीं। इससे सिक्खों को व्यापक दृष्टि विकसित करने में सहायता मिली। गुरु साहिब द्वारा चुने हुए सिक्खों को संस्कृत भाषा सीखने और अन्य विद्या हासिल करने के लिए ज्ञान के तत्कालीन केंद्र बनारस भेजना एक अहम निर्णय था। वे सिक्खों में ज्ञान के प्रति चाव पैदा करना चाहते थे और उनकी दृष्टि को विशद, उदार व पूर्ण बनाना चाहते थे। परमात्मा का भी यही मार्ग था *"उरधं बिरहत सिधं सरूप"* गुरु साहिब ने परमात्मा को निर्लिप्त, निराकार बताया।

जिह जात पात नही भेद भरम ॥
जिह रंग रूप नही एक धरम ॥
जिह सत्र मित्र दोऊ एक सार ॥
अच्छै सरूप अबिचल अपार ॥ (अकाल उसतत)

जब तक सिक्ख की दृष्टि ज्ञानवान, उदार और व्यापक न होती वे परमात्मा की इस महानता को समझ पाने में असमर्थ रहते। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जिस दार्म के राजा का संकल्प लेकर आए थे वह वास्तव में ज्ञान का राजा था और गुरु परमात्मा ज्ञान का अखंड स्रोत था। श्री गुरु अरजन देव जी इसे स्पष्ट कर चुके थे।

सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥
सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥
सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ ॥ (पन्ना १००)

धर्म की रक्षा के लिए आत्म विश्वास से भरपूर और अपने लक्ष्य के प्रति स्पष्ट लोग चाहिए थे। उन्हें हर परिस्थिति का सामना करना था क्योंकि जिनके हाथों में ताकत थी वे कसाई हो चुके थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इसके लिए भी उन्हें साथ ही साथ तैयार करते चल रहे थे। श्री पाउंटा साहिब और श्री अनंदपुर साहिब में सिक्खों के दिवस का एक पहर नाम जपने, गुरबाणी पढ़ने, सुनने और श्रेष्ठ साहित्य के सानिध्य में गुज़रता तो अगला पहर तेग के साथ हौंसले बुलंद करने में व्यतीत होता था। सिक्खों को शारीरिक तौर पर बलशाली बनाने के लिए कई कसरतें करवाई जातीं और युद्ध-कला सिखलाई जाती।

दशम पातशाह की सबसे बड़ी महानता थी कि वे सिक्खों से जो कुछ चाहते थे, पहले स्वयं उसके लिए उनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते थे। उन्होंने गुरु-शबद की देग चलाई तो सबसे पहले स्वयं उत्कृष्ट रचनायें विभिन्न भाषाओं संस्कृत, ब्रज, अवधी, फारसी आदि में भी रचीं जो आज भी समझी जा रही हैं। जब स्वयं माध्यात्म के रहस्यों को संसार के सामने खोल कर रखा तब दूसरों को उस ओर चलने के लिए कहा। दूसरी, गुरु साहिब ने कदम-कदम पर स्वयं सर्वोत्कृष्ट युद्ध-कला का प्रदर्शन किया तब

सिक्खों में वीरता के बीज बोये। गुरु साहिब ने सिक्खों में ज्ञान को पूर्ण रूप से प्रकाशित होने दिया और वीरता को इस ज्ञान का एक अंग बनाया। शक्ति जब अमर्यादित और निरंकुश हो जाती है तब विक्षोभ और विध्वंस होता है। प्राय: ऐसा ही होता आया था और समाज इसके दुष्प्रभावों से झुलसता, जलता रहा था। श्री गुरु नानक देव जी ने जगत को जलता हुआ देखकर ही प्रभु से कृपा करने की याचना की थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस दृश्य को बदल देने के लिए प्रभु की कृपा को सिक्खों में उतारने का महान उपकार किया। परिपक्व स्थितियों में सन् १६९९ ई. की वैसाखी के दिन श्री अनंदपुर साहिब में ८० हज़ार से अधिक सिक्खों को पूर्ण ज्ञानी बनाने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी म्यान से कृपाण निकाली तो इतिहास बदल गया। धर्म जो एक छोटे से खास वर्ग के रहमो करम पर सांसें लेने को विवश था लाखों ऐसे लोगों के कंधों पर उन्मुक्त विचरने लगा जिनके मन परमात्मा के लिए प्रेम से भरे हुए थे और जो सहजता और समदृष्टि से जीवन जीना जानते थे। उनके ज्ञान से अहंकार नहीं उदारता और विनम्रता के झरने प्रस्फुटित हो रहे थे और उनकी कृपाण की ताकत निर्भय होकर सच के मार्ग पर चलने का सहारा बन रही थी। खालसा संसार के सबसे उत्तम इंसान की पहचान बनकर उभरा। परमात्मा ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अपना पुत्र अंगीकार करते हुए अपने सारे गुणों से विभूषित कर धरती पर धर्म की मर्यादा कायम करने के लिए भेजा था तो दशम पातशाह ने अपना सारा स्वरूप खालसा में समाहित कर दिया "खालसा मेरो रूप है खास" आज तक दुनिया में गुरु अपना ज्ञान अपने शिष्यों में बांटते आए थे किंतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस रीति को बदल दिया अपने आप को ही सिक्खों में विलीन कर दिया। यह शक्ति की मर्यादा का सर्वश्रेष्ठ और अभूतपूर्व उदाहरण था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का धर्म की प्रतिष्ठा और ज्ञान की महिमा कायम करने का तेजी से पूरा हो रहा संकल्प अधर्म की जड़ें हिलाने लगा तो उन पर युद्ध थोप दिए गए। 'खालसा' की असली परीक्षा का काल आ गया था। श्री पाउंटा साहिब, श्री अनंदपुर साहिब और उसके बाद जितने भी युद्ध हुए उनमें जंग के मैदान में सिक्ख नहीं हज़ारों सिक्खों के रूप में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कृपाण का कमाल दिखाते नज़र आते थे। खालसा की ताकत अधर्म को रोकने के लिए थी और इससे अधिक कोई मंशा नहीं थी। बाग में खिले फूलों की मुस्कुराहट बचाने के लिए चारों ओर बाड़ लगाई जाती है। फूलों की मुस्कुराहट छीनने के इरादे से जो भी इस बाड़ को जैसे छूहता है उसे उसी अनुरूप खरोंचें लगती हैं। खालसा से टकराने पर वैसा ही हुआ और अहंकारी और अन्यायी मुगल साम्राज्य की चूलें हिल गईं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का 'खालसा' सच पर सदा अटल रहने वाली शक्ति का नाम था क्योंकि उसके अंतर में गुरु शबद गरूड़ के समान सारे भ्रम, अज्ञानता और विकारों का नाश कर उसे निरंतर सहज, स्थिर और आनंद की अवस्था में बनाए रखने वाला था। जंग के मैदान में लड़ रहा भूखा-प्यासा 'खालसा' लाखों की वैरी फौज से मुकाबिल मुट्ठी भर खालसा, जान हथेली पर रख शेर की तरह बहादुरी दिखाने वाला 'खालसा' कभी अपनी उस अवस्था से टूटता नहीं था और यही उसकी चढ़दी कला का राज था। ऐसा उसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से सीखा जो सारा परिवार और बड़ी संख्या में

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

Final

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी-सांझीवालता के प्रेरक

*-डॉ. परमजीत कौर**

मुगलों के राज्य काल में एक समय फिर ऐसा आया जब अत्याचार तथा जुल्म का बोलबाला होने के कारण धर्म का आधार डगमगा गया। स्वाभिमान की ज़िंदगी जीना घुड़सवारी करना, अच्छे मूल्यवान वस्त्र पहनना, अच्छा भोजन खाना, पालकी में बैठना, अपने नाम के आगे सम्मान सूचक शब्द लगाना गैर मुसलमानों के अधिकार में न रहा। ऐसे समय लोगों को अत्याचार से मुक्त करवाने के लिए, समाज में फैले विभेदीकरण तथा ऊंच-नीच की भावना को समाप्त करने के लिए सदियों से कुचले हुए, दबाए हुए लोगों को सिर ऊंचा करके जीने का तरीका सिखा कर उन्हें खुली हवा में सांस लेने का अधिकार दिलाने के लिए नौ वर्ष की आयु में अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर जी को मज़लूमों की रक्षा हेतु शहीद होने के लिए भेजने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश पटना शहर में सन् १६६६ ई. को हुआ। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन के पहले वर्ष पटना शहर में व्यतीत किए।

वर्ण व्यवस्था से उत्पन्न जातिगत तथा ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाने के लिए एवं परस्पर प्रेम, भाईचारा तथा सद्भाव को स्थापित करने के लिए गुरु साहिब सदा प्रयत्नशील रहे। सभी प्राणियों को समता का अधिकार दिलाने के लिए आपने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। ब्राह्मणों का आधिपत्य समाप्त करने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। संस्कृत पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मण वर्ण को है इस अवधारणा का खंडन करते हुए गुरु जी ने पांच सिक्खों को बनारस संस्कृत पढ़ने के लिए भेज दिया। जहां उन्होंने कई वर्षों तक संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया। अमृत की दीक्षा लेने के बाद उनके नाम भाई राम सिंघ, भाई कर्म सिंघ, भाई गंडा सिंघ तथा भाई वीर सिंघ वर्णित हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन का उद्देश्य सामाजिक तथा जातिगत भेदभाव दूर करके लोगों के मन में आत्मविश्वास पैदा करके उन्हें जुल्म, अत्याचार तथा बुराइयों के विरुद्ध डटकर मुकाबला करने के योग्य बनाकर उनके जीवन में इन्कलाब लाना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु आपको कई युद्ध भी करने पड़े क्योंकि मुगलों के साथ-साथ हिंदू (ब्राह्मण, क्षत्रिय) भी आपके उद्देश्य को न समझने के कारण आप जी के विरुद्ध हो गए थे तथा मुगल ताकत के साथ मिल गए थे। वे यह सोचने लगे कि सिक्खी के फलने-फूलने से उनके अधिकार समाप्त हो जायेंगे।

संकीर्णता ही जाति-भेद, विभेदीकरण की भावना तथा बंटवारे को जन्म देती है। यदि मनुष्य का इष्ट एक हो, जीवन लक्ष्य एक हो तो स्वयं उत्पन्न किए हुए बंटवारे समाप्त हो जाते हैं।

वेदों तथा पुराणों के बहुदेवतावाद तथा अनेक ईश्वरवाद के स्थान पर गुरु जी ने एक

***६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६*

परमात्मा की आराधना का आदेश दिया है :
भजो हरी ॥ थपो हरी ॥ तपो हरी ॥ जपो हरी ॥
(अकाल उसतत)

परमात्मा पत्थर आदि में नहीं है। वह तो सर्व व्यापक है :

जले हरी ॥ थले हरी ॥ उरे हरी ॥ बने हरी ॥
गिरे हरी ॥ गुफे हरी ॥ छिते हरी ॥ नभे हरी ॥
ईहां हरी ॥ ऊहां हरी ॥ जिमी हरी ॥ जमा हरी ॥
(अकाल उसतत)

एक परमात्मा की आराधना करने से मनुष्यों में परस्पर एक आत्मिक सांझ पैदा हो जाती है। बेशक वेशभूषा अलग हो, बोली अलग हो, उपासना का रास्ता अलग हो परंतु यदि जीवन का उद्देश्य एक है परमात्मा की भक्ति, परमात्मा का सिमरन तो सांझा होना स्वाभाविक है। गुरु जी ने हीन भावना से ग्रस्त लोगों को जागृत किया तथा समझाया कि चाहे कोई किसी वर्ण, जाति का हो, किसी भी धर्म का हो। उनमें कोई अंतर नहीं है। सभी सिर्फ मनुष्य हैं, सभी परमात्मा की संतान हैं सब की शक्ल, देश, वेश तथा बोली अलग हो सकती है परंतु रूप एक है। एक जैसी आंखें हैं, कान हैं, एक जैसा ही शरीर है तथा हिंदू मुसलमान सभी के शरीर में एक परमात्मा की ही ज्योति है, फिर भिन्न-भेद कैसा?

देहरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है ॥
देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है ॥
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सभै एक ही बनाउ है ॥१६/८६॥
(अकाल उसतत)

यदि मन में जागृति आ जाए तो ऊंच-नीच, गरीब-अमीर, हिंदू-मुसलमान, ब्राह्मण-शूद्र सभी में एक ही परमात्मा देखा जा सकता है। पूजा करने से, नमाज़ पढ़ने से परमात्मा की प्राप्ति का ही यत्न किया जाता है चाहे कोई हिंदू है या मुसलामान, ब्रह्मचारी है या सन्यासी या योगी सभी की एक है जाति है मानवता :

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥
करता करीम सोई राजक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ॥
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव
एक एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो ॥
(अकाल उसतत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हीन भावना से ग्रस्त, नीच समझे जाने वाले, प्रताड़ित लोगों में आत्म-विश्वास जगाकर उन्हें केवल समानता का अधिकर ही नहीं दिया वरन सम्मान भी दिया और कहा :

जुद्ध जिते इन ही के प्रसादि
इन ही के प्रसादि सों दान करे ॥
अघ ओघ टरे इन ही के प्रसादि
इनही की क्रिपा पुनि धाम भरे ॥
इन ही के प्रसादि सुबिदिया लए इन ही की क्रिपा सभ सत्र मरे ॥
इन ही की क्रिपा के सजे हम हैं नहीं मो से गरीब करोर परे ॥

आप जी ने लोगों को मानसिक गुलामी से आज़ाद करने के साथ-साथ चढ़दी कला में रहना सिखाया तथा *"निसचै कर अपनी जीत करों"* का जज़्बा दृढ़ करवाया।

गुरु साहिब ने उन सभी बुराइयों का त्याग करने का उपदेश दिया जो सांझीवालता के

Final

रास्ते पर चलने में बाधक होती हैं तथा उन गुणों को धारण करने के लिए प्रेरित किया जिनसे दूसरों के साथ अभेदता महसूस होती है। अहंकार, मेर-तेर की भावना वैर-विरोध रखने से ईर्ष्या पनपती है जिससे दूरियां बढ़ती हैं। गुरु साहिब ने विनम्रता का जीवन जीने के लिए बल दिया जिससे आपसी सांझ बढ़ती है।

गुरु जी ने आत्मिक विकास पर बल दिया। संकीर्णता को त्याग कर उदार वृत्ति को अपनाने के लिए प्रेरित किया तथा बंधुत्व की भावना का प्रचार करते हुए समझाया कि बल का प्रयोग परोकार तथा लोक कल्याण के लिए किया जाना चाहिए।

धंनि जीओ तिह को जग मै मुख ते हरि चित्त मै जुद्धु बिचारै ॥
देह अनित्त न नित्त रहै जसु नाव चढ़ै भव सागर तारै ॥
धीरज धाम बनाइ इहै तन बुद्धि सु दीपक जिऊ उजीआरै ॥
गिआनहि की बढनी मनहू हाथ लै कातरता कुतवार बुहारै ॥ *(क्रिशनावतार)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कश्मीरी पंडितों की पुकार सुनकर तिलक तथा जनेऊ की रक्षा के लिए अपने गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को शहादत देने के लिए भेज दिया। आप बिचित्र नाटक में इस शहादत का उल्लेख करते हुए लिखते हैं :

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥
साधन हेति इती जिनि करी ॥
सीसु दीआ पर सी न उचरी ॥

गुरु जी ने दुश्मन में भी परमात्मा की ज्योति देखकर उसको पानी पिलाने वाले अपने सिक्ख भाई कन्हैया जी पर प्रसन्न होकर उनको ज़ख्मों पर लगाने के लिए मरहम देकर वैदिक वर्ण विभाजन के विपरीत सारी पृथ्वी को परिवार समझो के नारे को क्रियात्मक रूप दिया। यही नहीं एक पात्र (बाटे) में अमृत छकाकर भिन्न-भिन्न जाति के पांच प्यारे सजाकर खालसा पंथ की साजना की तथा गुरु के सिक्खों के आगे एक मिशन रख दिया कि प्रभु का सिमरन करने वाले तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मानने वालों के लिए कोई मेर-तेर, जाति-पाति का भेदभाव नहीं है। अपने स्वार्थ के लिए जीने के स्थान पर दूसरों के लिए जीने की कला सीखनी ही सिर तली पर रखना है। आज भी प्रत्येक देश, प्रांत, मज़हब तथा जाति के लोगों को बिना किसी भेदभाव के अमृत छकने का अधिकार है। जो भी नियमों के पालन करने का प्रण करे, अमृत पान कर सकता है। संसारी होते हुए भी छल-कपट जाति-पाति, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, देश-प्रांत के भेदभाव से ऊपर उठकर सारी सृष्टि को एक परिवार के समान समझने वाला सेवा का पुंज, पवित्र जीवन वाला ही वास्तविक अमृतधारी कहलाने का अधिकारी है, तो ही वह 'वाहिगुरु जी का खालसा' है तथा उसकी फ़तहि 'वाहिगुरु जी की फ़तहि' है। गुरु जी ने यह दृढ़ करवाया कि जिसके हृदय में प्रेम नहीं वह परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग पर नहीं चल सकता :

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥

परमात्मा को प्रेम करने वाले को ही अपने अंदर बसने वाला परमात्मा सब मनुष्य में दिखाई दे सकता है। अंत में कह सकते हैं कि गुरु साहिब के उपदेश पर चलकर ही हम ऊंच-नीच, जाति-पाति, अमीरी-गरीबी, ईर्ष्या द्वेष के अंधकार पूर्ण रास्ते से सांझीवालता के प्रकाशमयी राह की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

Final

'तवारीख गुरू खालसा' कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन एवं शख़्सियत

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

जगत में दो शक्तियां आदि काल से ही कार्यरत रही हैं। एक शक्ति मनुष्य को शुभ कार्यों की तरफ प्रेरित करती है तथा दूसरी शक्ति उसे बुरे कामों की तरफ खींचती है। देवता और दानव इन शक्तियों का नेतृत्व करते हैं। जब समाज में धर्म, न्याय, शांति, प्रेम, भाईचारा, दया, क्षमा आदि भारी हो तो माना जाता है कि देवताओं का समाज में बोलबाला है तथा जब समाज में कलह-कलेश, द्वेष, ईर्ष्या, नफरत, वैर-विरोध, बेईमानी, लूट-खसूट आदि अग्नियां भारी होती हैं तो समझा जाता है कि दानव वृत्ति वाले लोग समाज पर भारी हैं। हिंदू धर्म में इस समय को 'कलयुग' का नाम दिया गया है। दुनिया का इतिहास यह बताता है कि जब भी ईर्ष्यालु तथा झगड़ालू वृत्तियां भारी पड़कर सामाजिक तानाबाना नष्ट करती हैं तो कोई न कोई मुक्ति-दाता या धर्म का पथ-प्रदर्शक समाज में आता है और स्वयं कष्ट सहन करके जनसाधारण का कष्ट निवारण करता है।

परमात्मा को सृष्टि का कर्ता, भर्ता एवं हर्ता माना जाता है। ईसाई धर्म में यीशू मसीह, इसलाम में पैगंबर मुहम्मद साहब तथा हिंदू धर्म में श्री रामचंद्र, श्रीकृष्ण जी को धर्म के चिन्ह माना गया है जिन्होंने अपनी जगत-यात्रा के दौरान जनसाधारण के दुखों को दूर करके उनको धर्म के मार्ग पर चलाने का कार्य किया। सिक्ख धर्म में भी इसी सिद्धांत को माना गया है। सिक्ख धर्म के आगाज से पहले समाज की हालत में इतनी गिरावट आ गई थी कि उस समय सामने आए धर्म के पथ-प्रदर्शकों को दस जामे (जन्म) धारण करने पड़े थे। श्री गुरु नानक देव जी के जगत-आगमन का कारण बताते हुए भाई गुरदास जी कहते हैं :

वरतिआ पापु जगत्रि ते धउलु उडीणा निसि दिनि रोआ।
बाझु दइआ बलहीण होउ निघरु चलौ रसातलि टोआ।
खड़ा इकते पैरि ते पाप संगि बहु भारा होआ।
थंमे कोइ न साधु बिनु साधु न दिसै जगि विच कोआ।
धरम धउलु पुकारै तलै खड़ोआ ॥ (वार १:२२)

भाई साहिब बताते हैं कि समाज का सदाचारक पतन इस हद तक पहुंच गया कि धरती का भार उठाये खड़ा धर्म रूपी बैल भी कुरलाने लग गया था। परमात्मा सदैव न्यायकारी भूमिका निभाता है। जब समाज की हालत में गिरावट आ जाए तो परमात्मा किसी महापुरुष को धर्म का मार्ग पुन: स्थापित करने के लिए भेजता है। जगत में श्री गुरु नानक देव जी का आगमन इसी श्रृंखला का एक हिस्सा है-*"सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ।" "राणा रंकु बराबरी"* का मिशन श्री गुरु नानक देव जी ने आरंभ किया था तथा उनके उत्तराधिकारी ने इसको सफलतापूर्वक आगे चला दिया था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भी जगत में आगमन का उद्देश्य धर्म की भावना को पुन: स्थापित करना बताते हैं--

"धरम चलावन संत उबारन दुसट सभन को मूल उपारन ॥"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म श्री गुरु

**सिक्ख विश्व कोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९८७२०-७४३२२*

Final

तेग बहादर साहिब तथा माता गुजरी जी के घर पटना साहिब में हुआ था। जब उनका जन्म हुआ तो पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब पूरब की यात्रा पर थे। पंजाब सहित सारे उत्तरी भारत में गुरु जी को बादशाह के जुल्म की खबर मिली तो वे पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी (बचपन का नाम गोबिंद राय था; गुरगद्दी पर बैठने तथा खालसे की सृजना के पश्चात श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नाम प्रसिद्ध हुआ) का दीदार करके शीघ्र ही पंजाब की ओर चल पड़े थे और परिवार को भी शीघ्र ही पंजाब आने का आदेश कर दिया था। कुछ वर्ष पटना साहिब में ही निवास करने के पश्चात माता गुजरी जी तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पारिवारिक सदस्यों एवं श्रद्धालुओं सहित पंजाब की तरफ चल दिये। पंजाब में अनंदपुर साहिब की धरती पर पहुंचने पर उनका भरपूर स्वागत हुआ। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की हर प्रकार की दुनियावी शिक्षा का प्रबंध किया गया। फारसी, गुरमुखी, संस्कृत तथा शस्त्र-विद्या के लिए उस्ताद नियत किये गये।

दिल्ली में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत के उपरांत अनंदपुर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को गुरगद्दी सौंपने की रस्म अदा की गई। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत के बाद सिक्खों में मायूसी की भावना आ गई थी जिसको दूर करने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उनमें जोश एवं उत्साह पैदा करने का कार्य आरंभ किया ताकि समय आने पर जब्र एवं जुल्म को रोकने के लिए अन्य नये यत्न किये जा सकें। गुरु जी ने समकालीन हालातों के मद्देनजर योजनाबंदी आरंभ कर दी थी। ढाडियों की वारों तथा साहित्य की सृजना ने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुरु जी ने वक्त के अनुसार अपना निवास-स्थान अनंदपुर साहिब से पाउंटा साहिब कर लिया था ताकि *'धरम चलावन संत उबारन'* के मिशन को आगे चलाया जा सके। उन्होंने ढाडियों, कवीशरों, लिखारियों को जोशीला साहित्य रचने तथा गायन करने का आदेश कर दिया था। 'तवारीख गुरू खालसा' का लेखक गुरु जी के दरबार में बावन कवियों/ढाडियों का होना बताता है जो इस प्रकार हैं--अंम्रित राय, कवरेस, मंगल, सैनापती, सुखदेव, चंदन, ईशर, आलम, उदे राय, हंस राज, रावल, राम, अल्लू, मधू, चंद, बल्लू, लक्खा, बिधीआ, नंद लाल, ब्रिज लाल, खानखाना, पिंडी लाल, रामदास, हुसैनी, निहाल, मदन लाल, धयान सिंघ, धरम सिंघ, दया सिंघ, रोशन सिंघ, माला सिंघ, आसा सिंघ, नंद सिंघ, सुक्खा सिंघ, धंना सिंघ, टहिकन, नंद राम, नानू, गुरदास, अचलदास, अणी राय, सयाम, सैना, सेखा, राम चंद, बालू, मानी, सुंदर, सोहन, जान, हीर, ठाकुर।

गुरु जी सिक्खों को शस्त्र तथा शास्त्र-विद्या में निपुण करना चाहते थे, क्योंकि शास्त्र-विद्या के बिना शस्त्र-विद्या मनुष्य के मन में एक तरफ जब्र तथा अहं का विकास करती है तथा दूसरी तरफ मनुष्य वहमों, भ्रमों, पाखंडों तथा कर्मकांडों में फंसा रहता है। शास्त्रों से प्राप्त किया आत्म-ज्ञान मनुष्य के मन में श्रद्धा, भावना, दृढ़ता, सब्र, संतोष तथा शूरवीरता के गुण भरने की सामर्थ्य रखता है। संस्कृत उस समय की देव भाषा मानी जाती थी। दीन-दुनिया के व्यवहार की बहुत सारी श्रेष्ठ बातें इस भाषा में लिखे ग्रंथों में कैद थीं। गुरु साहिब सिक्खों को इस कार्य में समर्थ बनाना चाहते थे ताकि वे गुरमुखी में विद्यमान गुरमति का दैवी तथा दुनियावी ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ अन्य धार्मिक ग्रंथों से भी सीधा ज्ञान हासिल करके अपने जीवन का विकास तथा समाज की भलाई कर सकें। भारतीय लोगों की समस्याओं

Final

के निवारण के लिए उनके धर्म-ग्रंथों का अध्ययन जरूरी था जो कि संस्कृत भाषा में रचे गये थे। हर एक व्यक्ति को इन ग्रंथों को पढ़ने की इजाजत नहीं थी। सिक्खों को संस्कृत विद्या प्रदान करने की सेवा गुरु जी ने रघुनाथ पंडित के जिम्मे लगाई। लेखक बताता है कि "जब उस पंडित ने सिक्खों की जाति पूछी तो सिक्खों ने बढ़ई, जिमींदार, नाई, छींबा, कुहार आदि अपनी-अपनी जाति बताई। तब पंडित ने पढ़ाना बंद कर दिया। फिर गुरु जी के कहने पर भी पंडित ने यही जवाब दिया कि "आपके सिक्ख 'शूद्र' ज्यादा हैं जिनको वेद-विद्या पढ़ने का अधिकार नहीं। धर्म-शास्त्र में लिखा है कि वेद-विद्या पढ़ने वाले शूद्र और शूद्र को पढ़ाने वाले के मुंह में सिक्का ढालकर उनको मार देना चाहिए। यह फल तो चाहे अब कोई राजा नहीं देता किंतु बिरादरी मुझे निष्कासित कर देगी।" लेखक बताता है कि संस्कृत विद्या प्राप्त करने तथा हिंदू धर्म-ग्रंथों का अध्ययन करने के लिए गुरु जी ने पांच सिक्ख बनारस भेज दिए। पाउंटा साहिब में शस्त्र तथा शास्त्र-शिक्षा का अभ्यास आरंभ हुआ तो शस्त्रों एवं शास्त्रों के बहुत-से धनी गुरु-दर्शन को आने लगे। समय की हकूमत से डरकर जिनकी ये ख्वाहिशें छुपी हुई थीं, गुरु जी की छत्र-छात्रा तले उनको प्रफुल्लित करने का मौका मिलने लगा।

गुरु जी की जीवन-शैली बहुत सारे लोगों को प्रभावित कर रही थी। आम लोग जहां गुरु जी से प्रभावित होकर सिक्ख बनते जा रहे थे वहीं पहाड़ी राजा इस बात से ईर्ष्या करने लगे थे कि कहीं ताकत हासिल करके गुरु जी उनके राज्य पर काबिज ही न हो जायें। भंगाणी के स्थान पर गुरु जी का पहला युद्ध इसी शृंखला का एक हिस्सा है। बहुत-से पहाड़ी राजा सामूहिक रूप से गुरु जी के विरुद्ध चढ़ आये थे। जो पहाड़ी राजा गुरु जी के विरुद्ध लड़े वे इस प्रकार हैं--भीमचंद, फतेहशाह, गोपाल चंद गुलेरी, क्रिपाल चंद कांगड़ीआ, बीरसैन मंडीवाला, केसरी चंद जसवालीआ, दिआल चंद काठगढ़ीआ, हरी चंद हंडूरीआ, करम चंद भंबोरीआ, उमैद सिंह जसवांदा, अनंत चंद प्रिथीपुरीआ, झगड़ चंद मनसवाला, भाऊ सिंघ सीबेवाला, धरमपाल कुटलैड़दा, दया सिंघ नूरपुरीआ, भाग सिंघ तिलोकपुरीआ, टेक सिंघ कसतवारीआ, सुधर सैण मंडी वाला, गुरभज इंदौरीआ, जै चंद बेझे वाला, ठोडी सिंघ संघरीवाला, संसार चंद नदौणीआ, हरी चंद कोटीवाला, लच्छू चंद कसौलीवाला, भूत सिंघ थयोग।

भंगाणी का युद्ध सिक्खों के लिए परीक्षा की घड़ी थी, क्योंकि राजाओं की फौज में शिक्षित सिपाही तथा जरनैल थे तथा गुरु जी की तरफ से लड़ने वाले सिक्ख उनके साधारण श्रद्धालु थे। भंगाणी के युद्ध में गुरु जी की ओर से ऐसे श्रद्धालु लड़ रहे थे जिन्होंने हथियार को कभी पकड़कर भी नहीं देखा था। लेखक दो ऐसे श्रद्धालुओं का जिक्र करता हुआ कहता है कि "लालचंद हलवाई तथा भाई नंद चंद के हाथ एवं हौंसला देखकर पठान दंग रह गए, क्योंकि इन दोनों ने भैंसें चराने या लकड़ी तौलने के बिना कभी कुछ किया ही नहीं था। इन्होंने बड़े-बड़े योद्धाओं जैसा जंग कर दिखाया तथा अनेकों को मौत के घाट उतार कर शहीदी पाई।" पीर बुद्धू शाह जैसे बंदगी करने वाले फकीरों ने युद्ध में हिस्सा लेकर यह सिद्ध कर दिया था कि धर्म के मार्ग पर चलते हुए जरूरत पड़ने पर शस्त्रों का सहारा भी लिया जा सकता है। भंगाणी के युद्ध ने सिक्खों के हौंसले बुलंद कर दिए थे जिसका वर्णन करते हुए गुरु जी 'बचित्र नाटक' में बताते हैं :

जुध जीत आए जबै टिकै न तिन पुर पांव ॥

Final

काहलूर मैं बांधियो आन अनंदपुर गांव ॥
(अध्याय ८:३६)

अनंदपुर साहिब में दूर-नजदीक की संगत गुरु जी के दर्शन को आने लगी थी। मसंद भेंटाएं लेकर गुरु-घर आने लगे तथा जो श्रद्धालु पाउंटा साहिब नहीं आ सकता थे वे अनंदपुर साहिब गुरु जी के दर्शन करने आने लगे। अनंदपुर साहिब में दोनों वक्त दीवान लगता था। अमृत वेले श्री गुरु नानक देव जी द्वारा आरंभ किया नित्तनेम होता। आसा की वार के गायन के उपरांत ढाडी वारें गाते थे जो संगत को विरासत के साथ जोड़ने के साथ-साथ उनमें वीर रस भी पैदा करती थीं। इसके अलावा गुरु जी अपने से पूर्व रह चुके गुरु साहिबान की शिक्षाएं संगत को दृढ़ करवाते थे। वे सबको यही उपदेश दृढ़ करवाते कि अकाल पुरख की रजा में प्रसन्न रहना, अपनी किरत करके तथा बांट कर छकना, गुरु-मंत्र का जाप करते रहना, मड़ी-मसाणी, गोर, मठ, मरे हुए पितर आदि की कल्पना, जो बिप्रों ने अपने गुजारे के लिए लोगों को भटकाने के ढकोसले रचे हैं, इन पर एतबार नहीं करना और न ही इनकी पूजा करनी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी श्री गुरु नानक देव जी के सदाचारी तथा परोपकारी मिशन का प्रचार कर रहे थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को शिकायतें मिलने लगीं कि मसंद गुरु-मिशन को आगे चलाने में बाधा बने हुए हैं। भले ही सभी मसंद ऐसा नहीं कर रहे थे मगर शिकायतें ज्यादा होने के कारण गुरु जी ने इस सम्बंधी दीर्घ विचार करनी शुरू कर दी कि या तो मसंदों को सुधारा जाये या फिर इनसे निजात पा ली जाये। मानवीय वृत्ति को काबू करना बहुत कठिन कार्य होता है। गुरु जी से परोक्ष होकर लोग यह सोचने लग जाते हैं कि अब उन्हें कौन देख रहा है। गुरु-परमेश्वर का भय ऐसे मनुष्य के मन में नहीं रहता बल्कि ऐसे मनुष्य धर्म तथा सदाचारक जीवन-जाच को नकारात्मक तौर पर लगातार प्रभावित करते रहते हैं। गुरु जी ने मसंद-प्रथा को खत्म करने का फैसला कर लिया तथा सिक्खों को आदेश कर दिया कि भेंटाएं सीधा गुरु-घर में अर्पित की जायें। लेखक बताता है कि "चार माह तक गुरु जी मसंदों, का बंदोबस्त करने में लगे रहे। मसंदों का बंदोबस्त करके आगे से हुक्म दिया कि कोई सिक्ख मीणे, मसंद, मेवड़े को गुरु की कार-भेंट न दे। जो कुछ अपनी श्रद्धा से देना हो वो अपने-अपने घर में ही गुरु की गोलक में जमा करते रहो। वर्ष, दो वर्ष बाद जब भी गुरु-घर आओ तो अर्पण कर जाया करो।"

गुरु साहिबान ने समाज में स्त्री की सामाजिक हालत को सुधारने हेतु बहुत यत्न किये थे। जिस देश की स्त्रियां इतनी बलवान हों उस देश के मर्दों को कायरों वाला व्यवहार शोभा नहीं देता। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय बहुत सारी सिक्ख बीबियों (महिलाओं) ने जंगों-युद्धों में सिक्ख नौजवानों की सहायता की थी तथा भाई भागो जैसी स्त्रियां आगे होकर तेग के जौहर दिखा रही थीं।

लेखक भी गुरु जी की शिक्षाओं का महिलाओं के जीवन पर पड़ रहे प्रभाव का वर्णन करते हुए बताता है कि माझे की संगत में एक महिला बीबी दीप कौर गुरु-दर्शन के लिए श्री अनंदपुर साहिब आ रही थी। रास्ते में वह संगत से आगे निकल गई। अकेली जान चार तुर्कों ने उसको घेर लिया। उनके पास तलवारें थीं। बीबी भी अमृतधारी सिंघणी थी। उसने अपना कंगन उतार कर नीचे फेंक दिया। एक तुर्क नीचे झुक कर कंगन उठाने लगा तो बीबी दीप कौर ने तलवार से उसको वहीं ढेर कर दिया। जब दो आदमी और आगे

आए तो उसने उनको भी झटका दिया। इतनी देर में पीछे से और संगत आ गई। उसने चौथे को भी मार दिया और सभी को कुएं में फेंक दिया। बीबी दीप कौर के दिलेरी भरे कारनामे सुनकर गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए तथा संगत में उसका सम्मान करते हुए गुरु जी ने अन्य महिलाओं को भी बीबी दीप कौर जैसी हिम्मत वाली बनने की प्रेरणा की। गुरु साहिब जहां सिक्ख महिलाओं की प्रशंसा करते थे वहीं वे सिक्खों को भी युद्ध के समय दूसरे धर्मों की स्त्रियों का सत्कार करने की प्रेरणा भी देते थे। गुरु साहिब का आदेश था कि जंग के समय किसी बुजुर्ग मनुष्य, स्त्री तथा बच्चों पर हाथ नहीं उठाना। गुरु जी जानते थे कि युद्ध तथा संकट के समय अक्सर ही स्त्रियों के साथ ज्यादती होती है। उन्होंने अपने सिक्खों को ऐसा करने से मना किया था। सपने में भी पर-स्त्री का संग न करने की प्रेरणा करने वाले गुरु जी सिक्खों को धर्म एवं सदाचार के नियमों की पालना करने पर जोर देते थे। लेखक बताता है कि एक सिक्ख राम सिंघ तुर्कों के हाथ लग गया। उन्होंने जबरन उस सिक्ख के केश काट दिये तथा उसकी सुन्नत कर दी। किसी तरह वह बचकर गुरु जी के चरणों में जा हाजिर हुआ। उसने तुर्कों द्वारा जबरन मुसलमान बनाने का प्रसंग सुनाया गुरु जी ने आदेश दिया कि "कड़ाह प्रशाद बनाओ। इसको अमृत छकाकर इसके हाथों से कड़ाह प्रशाद खालसे में बंटवा दो।"

गुरु-घर सिक्खों की टकसाल थी जहां से नाम-बाणी के अभ्यास के साथ-साथ संगत की हर प्रकार की सेवा करने का बल मिलता था। गुरु-घर के समूह पारिवारिक सदस्य वही कार्य करते थे जो गुरु मर्यादा के अनुकूल होते थे। संगत की सेवा को सबसे उत्तम माना जाता था। श्री अनंदपुर साहिब में भी गुरु जी का संघर्ष जब्र तथा अन्याय के विरुद्ध जारी था, इसलिए उनको कई युद्ध लड़ने पड़े थे। बड़े संघर्ष की तैयारी के लिए वे यत्न कर रहे थे ताकि एक बड़े संघर्ष के साथ समूचे देश की जनता को जगाया जा सके। अब गुरु जी का सारा ध्यान इस ओर था। गुरु जी समूह धार्मिक विश्वासों को मानने वाले लोगों को इस संघर्ष में शामिल करना चाहते थे, इसी लिए जिस भी धर्म का कोई श्रद्धालु गुरु जी के दर्शन को आता तो गुरु जी उसके साथ लोक-परलोक के संघर्ष की चर्चा करके उसको परमार्थ के मार्ग पर चलने की प्रेरणा करते थे।

गुरु जी का प्रताप दिनोदिन बढ़ रहा था। दूर-दूर से संगत गुरु-दर्शन को आती थी। इस मौके गुरु जी के आगे एकत्र होती माया (धन) से जहां सेवा तथा परोपकार के काम होते थे वहीं आधुनिक शस्त्र बनाने वाले भी क्रियाशील हो गये थे। गुरु जी निर्भय एवं निरवैर रहकर जनसाधारण के परोपकारी कार्य कर रहे थे, जिससे उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई थी। वैर-विरोध, ईर्ष्या, द्वेष आदि को गुरु-घर में कोई स्थान प्राप्त नहीं था। जो गुरु-घर से वैर रखते थे उनको समझाने का यत्न करके शांति तथा स्वाभिमान से जीवन बसर करने का मार्ग दर्शाया जाता था। शांतमयी कार-विहार को गुरु-घर की कमजोरी समझकर बलपूर्वक उनको दबाने या जीतने का जो यत्न करते उनको हमेशा हार का मुंह देखना पड़ता। पहाड़ी रियासतों की आपसी रंजिशों को गुरु जी ने दूर करने का यत्न किया परंतु ईर्ष्या एवं अहंकार ने पहाड़ी राजाओं की कोई पेश न जाने दी। वे बहुमूल्य मानवीय हितों की बजाय अपने छोटे-छोटे स्वार्थों तक सीमित थे। हर एक रियासत दूसरी को नीचा दिखाने के यत्न में लगी हुई थी। गुरु जी के साथ जो भी पहाड़ी

Final

राजा युद्ध करने की सोचता उसकी सारी योजना धरी-धराई रह जाती थी। गांवों के गांव गुरु जी के श्रद्धालु बनते जा रहे थे तथा गुरु जी की एक आवाज पर वे हथियार तथा अपने आदमी लेकर गुरु जी की सेवा में आ जाते थे। जो गलती श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के विरोधियों ने की थी वही गलती श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विरोधी भी निरंतर कर रहे थे। वे गुरु जी के इर्द-गिर्द जुड़ी संगत को साधारण समझ लेते थे तथा यह अनुमान लगाने लग जाते थे कि शिक्षित फौज के सामने राज-साज के बिना ये थोड़े-से अप्रशिक्षित लोग कितनी देर टिक सकते हैं? वे इस बात का विश्लेषण करने में सदैव फेल रहे कि गुरु जी द्वारा लड़ने वाले सिक्ख विश्वास एवं धार्मिक प्रेरणा के साथ लड़ते हैं जो यह समझते थे कि इस लोक में गुरु सहायी है तथा परलोक में भी मात्र गुरु ही रक्षा करेगा। लोक तथा परलोक में बहुत कम अंतर समझने वाले मृत्यु के भय से नहीं डरते तथा न ही उनको यह चिंता होती है कि उनके मरने के उपरांत उनके परिवार की देखभाल कौन करेगा। सारी चिंताओं से मुक्त होकर लड़ने वालों को जीतना आसान कार्य नहीं होता। इसी कारण गुरु जी के विरुद्ध की गई हरेक लड़ाई में पहाड़ी राजा हार का मुंह देखते रहे थे। गुरु जी के विरुद्ध अपने आप को बलहीन समझकर उन्होंने समय की मुगल हकूमत की मदद लेनी योग्य समझी। हकूमत के बहुत सारे सहयोगी कट्टरपंथी पहले ही गुरु-घर के विरुद्ध थे तथा वे लगातार यत्न कर रहे थे कि जैसे-तैसे इस लहर को खत्म करके इसलाम का झंडा पूरे भारत में लहराया जा सके। श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत ने उनके मंसूबों को अभी तक कामयाब नहीं होने दिया था, मगर वे अभी भी निरंतर इस दिशा में कार्यशील थे।

१६९९ ई को वैसाखी के अवसर पर गुरु जी ने खालसा पंथ की सृजना की थी। एक बड़े पंडाल में सजी हुई संगत में से गुरु जी ने एक के बाद एक पांच सिक्खों के सिरों की मांग की थी। अलग-अलग जातियों तथा भूगोलिक क्षेत्रों से संबंधित पांच सिक्ख गुरु जी को सिर भेंट करने के लिए आगे आये थे। गुरु जी ने उनको खंडे-बाटे का अमृत छकाकर खालसा पंथ की जत्थेबंदी का आधार बांधा था। अमृत तैयार करते समय माता जीतो जी द्वारा बाटे में बताशे डालना तथा पांच बाणियों का पाठ--"जपु, जापु, चौपई, सवैये, अनंदु साहिब" करना लेखक बताता है। इसी तरह गुरु जी ने अमृत छकाकर पांच प्यारों--भाई दया सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई हिम्मत सिंघ, भाई मोहकम सिंघ, भाई साहिब सिंघ को जात-पात तथा भ्रम-भेद से मुक्त करके एक जैसा बना दिया था। इस जत्थेबंदी में शामिल होने वालों के लिए कुछ सदाचारक नियम धारण करने आवश्यक थे जिनको 'रहित' कहा जाता है। गुरु जी द्वारा बताई हुई रहित के अनुसार रोजाना नित्तनेम के अलावा शस्त्र धारण करने आवश्यक थे। नित्तनेम आध्यात्मिक विकास के लिए जरूरी है तथा शस्त्र स्वाभिमान कायम रखने का प्रतीक हैं। अनेक प्रकार के शस्त्र गुरु जी के पास भेंट होने लगे थे तथा बहुत-से शस्त्र अनंदपुर साहिब में भी तैयार किए जाने लगे थे। गुरु जी तथा उनके सिक्ख जो शस्त्र इस्तेमाल करते थे उनमें कटारें, कुतके, खंडे, गुरज, जंजैलें, जमूरे, तमंचे, तलवारें, तीर-कमान, तेगें, तोपें (देसी), नेजे, पिस्तौलें, बंदूकें, बरशियां, भाले, रामजंगे आदि शामिल थे। अनंदपुर साहिब की सुरक्षा के लिए गुरु जी ने चार किले--अनंदगढ़, लोहगढ़, केसगढ़, फतेहगढ़ भी बनवाये थे।

गुरु जी की शख्सियत तथा योजनाबंदी इस तरह की थी कि उनके द्वारा किये गए हर कार्य

Final

से जनसमूह प्रभावित होता था। गुरु जी द्वारा खालसा पंथ की जत्थेबंदी से प्रभावित होकर पहाड़ी राजा भी गुरु जी के पास आए थे। गुरु जी ने उनको समझाया कि "वर्ण-व्यवस्था ने समाज को कमजोर किया है। परस्पर विश्वास की कमी तथा समाज में विभाजन हो जाने के कारण एकता कम हुई है। बाहरी ताकतों तथा मुगलों ने इसका भरपूर फायदा उठाया है। एकता तथा इत्तफाक रोटी-बेटी की सांझ के साथ बढ़ते-फूलते हैं तथा मजबूत होते हैं, अत: खालसा जत्थेबंदी में शामिल होकर इज्जत तथा स्वाभिमान वाला जीवन बसर करो।" राजाओं ने कहा कि "ऊंची कुल होने के कारण हम शूद्रों के साथ कोई सांझ नहीं रख सकते।" गुरु जी ने उनको समझाते हुए कहा, "जिन सिंघों को आप शूद्र कहते हो, अकाल पुरख के प्रताप से एक दिन यही आपके बादशाह होंगे तथा आप लोग इनके अधीन रहकर दिन गुजारोगे। अब आप इनके साथ रोटी की सांझ नहीं करते फिर बेटियां देकर सांझ करना चाहोगे।" खालसा जत्थेबंदी की स्थापना गुरु जी द्वारा जब्र एवं जुल्म करने वालों के विरुद्ध बड़े संघर्ष का आगाज थी। भाई नंद लाल जी गुरु जी द्वारा सृजित खालसे का उद्देश्य उजागर करते हुए कहते हैं :

खालसा सोइ निरधन को पालै।
खालसा सोइ दुषट को गालै।
खालसा सोइ नाम जप करै।
खालसा सोइ मलेछ पर चढ़ै।
खालसा सोइ नाम सिउं जोड़े।
खालसा सोइ बंधन को तोड़े।
खालसा सोइ जो चढ़े तुरंग।
खालसा सोइ जो करे नित जंग।
खालसा सोइ शसतर को धारै।
खालसा सोइ दुषट को मारै। (तनखाहनामा ५०-५४)

गुरु जी की शख्सियत का सबसे बड़ा गुण था कि वे बिलकुल हिम्मत हार चुके लोगों में नई जान डाल देते थे। उनकी प्रेरणा, जोश तथा उत्साह का सदका अल्पसंख्यक होते हुए भी सिक्ख बड़ी से बड़ी फौज का मुकाबला करने के समर्थ हो गये थे। जैसे शेर शारीरिक आकार पक्ष से तो हाथी से छोटा होता है परंतु दिलेरी एवं हौंसले का सदका वह हाथी को भी काबू करने के समर्थ होता है, उसी तरह गुरु जी के सिक्ख अल्पसंख्या में होते हुए भी मुगल फौजों तथा अनेकों पहाड़ी रियासतों की सांझी फौजों का सामना करने एवं उन्हें मात देने के समर्थ थे। गुरु जी के विरुद्ध जितने भी युद्ध हुए, अनंदपुर साहिब का युद्ध उनमें से विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यह युद्ध धर्म के मार्ग पर चलने वालों तथा धर्म-ग्रंथों की कसमें खाकर तोड़ने वालों के दरमियान था। इस युद्ध में मुगलों तथा पहाड़ी राजाओं की सांझी फौज गुरु जी के विरुद्ध चढ़ आई थी। अनंदपुर साहिब के युद्ध में गुरु जी के विरुद्ध चढ़ आई सांझी फौज में अलग-अलग रियासतों तथा केंद्रीय फौज के जो जरनैल शामिल हुए थे वे इस प्रकार बताए गए हैं : शेर मुहम्मद खां, खिजर खां, नजीब खां, रहमत खां, नवाब जलंधरी हिम्मत खां, उसमान खां, मुहम्मद कसूरी, करीम बख्श चौधरी, सभा चंद फगवाड़ीआ, फते मुहम्मद खां कुंजपुरीआ, जानी-मानी खां मोरिंडा के, सयादत अली सढौरे वाला, शमस खां बिजवाड़े का आदि। जो अलग-अलग क्षेत्रों की फौजें इस युद्ध में भाग लेने आई थीं वे इस प्रकार हैं: सरसा, रणीआ, फतिआबाद, बोहिआ, बुलाढा, आंडरू, अलवारा, समाणा, बहावलपुर, झंग, कहिलूरी, हंडूरी, कटोच, जसवाल, गुलेरी, चंबा, सुकेत, मंडी, कुल्लू, हरीपुर, नूरपुर, श्रीनगर, कैथल, दड़ोल, चंदेल, डढवाल, करोल, अरकी, भज्जी आदि। इसके अलावा अलग-अलग सूबों तथा

परगनों के बहुत-से चौधरी तथा मालगुजार गुरु जी के विरुद्ध चढ़ आए थे तथा उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब को घेर लिया था।

पहाड़ी एवं शाही फौज ने श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया था जो कई महीनों तक जारी रहा। शाही फौजों का खर्च पहाड़ी रियासतों के राजाओं के जिम्मे था जिस कारण रियासतें कंगाल हो गई थीं। दूसरी तरफ किले के अंदर चाहे दाना-पानी खत्म हो गया था परंतु फिर भी गुरु जी का अकाल पुरख पर भरोसा था कि वह सच के मार्ग पर चलने वालों को खुद मार्ग दिखाता है तथा धर्म-युद्ध में डगमगाने नहीं देता। परमात्मा के उद्देश्य को मुख्य रखकर उसकी रजा में किया गया कोई भी कार्य कभी असफल नहीं होता। इसी विश्वास का सदका वे सदा अपने सिक्खों को हौंसला तथा प्रेरणा देते हुए धर्म के प्रति दृढ़ता कायम रखने पर जोर देते थे।

दुश्मन फौज में हिंदू एवं मुसलमान शामिल थे। भारी मात्रा में नुकसान होता देखकर उन्होंने किला खाली करवाने की योजना बनाई। दोनों धर्मों के अनुयाइयों ने अपने-अपने धर्म-ग्रंथों की कसमें खाकर गुरु जी को समय के अनुकूल किला खाली करने के लिए मिन्नतें की थीं। दूसरी तरफ गुरु जी के सिक्ख भी किला खाली करने पर जोर दे रहे थे। गुरु जी को सांझी फौज द्वारा खाई हुई कसमों पर बिलकुल भरोसा नहीं था और वे किला खाली करने के पक्ष में नहीं थे, परंतु फिर भी सिंघों के बार-बार कहने पर उन्होंने किला खाली करने का मन बना लिया था। अनंदपुर साहिब से चलकर गुरु जी का काफिला अभी कीरतपुर साहिब तक ही पहुंचा होगा कि 'बिल्ली थैले से बाहर आने' की लोकोक्ति के अनुसार सांझी फौज ने गुरु जी पर हमला कर दिया। परमात्मा की रजा को हमेशा मीठा करके मानने वाले गुरु जी ने अनेकों युद्ध लड़े थे, परिवार एवं खालसे को अनेकों कुर्बानियां करनी पड़ी थीं, अनेकों मुश्किलों का सामना करते हुए कठिन मार्ग पर चलने के लिए मजबूर होना पड़ा था, किंतु फिर भी अति संकट की घड़ी में उन्होंने खालसे का मनोबल कायम रखा। श्री अनंदपुर साहिब छोड़ जाने के उपरांत हुए हमले ने सिक्खों को बिखर जाने के लिए मजबूर कर दिया था, किंतु फिर भी गुरु जी ने शीघ्र जो योजनाबंदी की थी वह सांझी फौज को गुरु जी तक पहुंचने से रोकने के लिए काफी थी। खालसा, गुरु जी तथा सांझी फौज के मध्य दीवार बन गया था। सिर-धड़ की बाजी लगाकर सिक्ख सांझी फौज को गुरु जी की तरफ बढ़ने से रोक रहे थे। खालसे का जान-माल का भारी नुकसान हुआ। सरसा नदी पार करके निहंग खां के घर से गुजरते हुए गुरु जी ने चमकौर की गढ़ी में मोर्चाबंदी कर ली थी। इस युद्ध में हर एक सिक्ख सांझी फौज के मिशन को असफल करने में योगदान डाल रहा था, यहां तक कि गुरु जी के साहिबजादों--बाबा अजीत सिंघ, बाबा जुझार सिंघ ने भी अपनी शहादत देकर शत्रुओं को सफल नहीं होने दिया था। गुरु जी तब तक चमकौर की गढ़ी में चट्टान की भांति डटे रहे जब तक खालसे ने गुरु जी को पंथ के महान हितों को मुख्य रख कर चमकौर की गढ़ी छोड़ जाने के लिए मजबूर नहीं कर दिया था। उनकी इस जांबाजी तथा प्रेरणा का सदका ही था कि उस भयानक युद्ध में लड़ने की क्षमता रखने वाला कोई भी सिक्ख विरोधी फौज के काबू नहीं आया था। सबने धर्म के मार्ग पर जूझते हुए शहादतें दी थीं तथा किसी ने भी विरोधियों की बात नहीं मानी थी। चमकौर की गढ़ी में आखिरी दो सिक्ख--भाई संत सिंघ एवं भाई संगत सिंघ इस बात

Final

की गवाही भरते हैं कि उन्होंने अपने आखिरी श्वास तक गुरु जी पर निष्ठा कायम रखी थी।

गुरु जी ने जिन हालातों का सामना किया आम मनुष्य का उस मार्ग पर चलते हुए डगमगा जाना स्वाभाविक है। परमात्मा द्वारा बख्शिश किए अनेकों पदार्थों को जल्द ही भूल कर छोटी-सी मांग पूरी न होने पर मनुष्य उसके साथ गिला करने लग जाता है। कई बार मनुष्य इतना खफा हो जाता है कि वह सदाचार का मार्ग छोड़कर दुराचार की तरफ रुचित हो जाता है। गुरु जी का प्रेरणामयी मार्ग सबके सामने है। गुरु जी हर संकट एवं स्थिति में परमात्मा का शुक्राना करते रहे तथा उसी का जाप एवं शिक्षायें ग्रहण करने पर जोर देते रहे। गुरु जी जिस मार्ग पर चल रहे थे, निश्चित ही वह जोखिम भरपूर था, परंतु उनका मिशन बिलकुल सही दिशा की ओर धर्म-मुखी तथा लोक-मुखी था। इसकी स्वीकृति इस बात से होती है कि चमकौर साहिब की गढ़ी छोड़ जाने के पश्चात वे जिन गांवों से गुजर रहे थे, बड़ी संख्या में लोग उनके श्रद्धालु बनते जा रहे थे। श्री मुकतसर साहिब का युद्ध चमकौर के युद्ध से कुछ समय बाद ही हो गया था। उस युद्ध में बेदावा दे गए चालीस सिक्खों के अलावा बड़ी संख्या में उस इलाके के सिक्खों ने शामिल होकर दुश्मन को जंग का मैदान छोड़कर जाने के लिए मजबूर कर दिया था। गुरु जी की नीति तथा हाकिमों की अनीति को लोगों ने अच्छी तरह से समझ लिया था तथा कुछ इलाकों के चौधरियों ने अपने हाकिमों के फरमान को रद्द करके गुरु जी का साथ देने का एलान कर दिया था। एक घटना में जब सरहिंद के नवाब वजीर खां को इस बात का पता चला कि मालवे के इलाके के चौधरी लखमीर तथा समीर गुरु जी का साथ दे रहे हैं तो उसने उनको गंभीर परिणाम भुगतने की चेतावनी दी जिसको चौधरियों ने रद्द करते हुए कहा कि "खान साहब! हमारे गुरु विचरण करते हुए यहां आ गए हैं। जिस प्रकार आप अपने पीरों की सेवा करते हो उसी तरह हम भी अपने गुरु जी की सेवा करते हैं। तुमने जो लिखा है कि आप भी गुरु जैसा बनना चाहते हो, तो इतने बड़े भाग्य हमारे कहां जो गुरु जैसे बन जायें।" इसी तरह गुरु जी तलवंडी साबो के चौधरी भाई डल्ले के पास निवास कर रहे थे तो वजीर खां यह सुनकर बड़े क्रोध में आ गया। उसने तुरंत धमकी भरे लहजे में भाई डल्ले को लिखकर भेजा था कि "गुरु जी को पनाह देना बादशाह के साथ शत्रुता मोल लेने वाली बात है, इसलिए तेरे लिए यही योग्य है कि गुरु जी को पकड़कर ले आ, नहीं तो तेरी गढ़ी की ईंट से ईंट बजाकर तुझे तेरे गुरु सहित पकड़ लाऊंगा।" लेखक बताता है कि वजीर खां की इस चिट्ठी के जवाब में भाई डल्ले ने वीरतापूर्वक लिख भेजा था कि "पहले ही तूने गुरु जी के प्रति कोई कसर नहीं रखी और अब भी न रखना। गुरु मेरे प्राणों के साथ हैं। तेरे लशकर को वही हाथ दिखाएंगे। एक को भी जिंदा नहीं जाने देंगे।" गुरु जी के धर्म-प्रचार तथा प्रसार का प्रभाव चारों तरफ नजर आने लगा था। मालवा क्षेत्र के लोग बड़ी संख्या में उनके श्रद्धालु बन गए थे तथा उनमें से भारी संख्या में अमृत छककर सिंघ भी सजते जा रहे थे।

तलवंडी साबो से गुरु जी नांदेड़ की तरफ चले गए थे। बादशाह औरंगजेब ने गुरु जी को मुलाकात के लिए बुलाया, मगर ऐसा संभव न हो सका, क्योंकि गुरु जी बघौर ही पहुंचे थे कि उनको बादशाह के देहांत की खबर मिल गई थी। यहां से गुरु जी सीधा दिल्ली आ गए थे तथा अपने स्वभाव के अनुसार सबको वैर-विरोध भुलाकर परमार्थ के मार्ग पर चलने की

Final

शिक्षा देते रहे। गुरु जी की यह शिक्षा उनके जीवन में से उस समय प्रकट होती है जब बादशाह औरंगजेब के बाद उनके पुत्रों में गद्दी के लिए युद्ध छिड़ गया था। बादशाह के एक पुत्र बहादुर शाह ने गुरु जी से गद्दी हासिल करने के लिए सहायता की मांग की थी। गुरु जी ने उसे गद्दी के योग्य जानकर उसको मदद देने का भरोसा दिया था तथा ऐसा करते समय उन्होंने उन सभी बातों को नहीं विचारा था जो मुगल हकूमत ने उनके साथ अनंदपुर साहिब, चमकौर साहिब तथा मुकतसर साहिब के युद्धों में की थीं। गुरु जी का उद्देश्य समाज को विकासशील पथ पर ले जाना था। उन्होंने अपने जीवन द्वारा यह संदेश दिया था कि समाज का विकास मात्र राज्य की प्राप्ति द्वारा संभव नहीं है बल्कि जो व्यक्ति इस कार्य को करने के लिए आगे आने का यत्न करे उसकी सहायता की जानी चाहिए। गुरु जी की सहायता से जब बहादुर शाह बादशाह बन गया तो वह गुरु जी के साथ किए इकरार से पीछे हटने लगा। उसे अपना तख्त बचाने की चिंता ज्यादा सताने लगी थी। गुरु जी राजाओं की कमजोरियों से भली-भांति वाकिफ थे। उन्होंने बादशाह का साथ छोड़कर नांदेड़ नामक स्थान से बाबा बंदा सिंघ बहादर को जुल्म का खातिमा करने के लिए पंजाब भेज दिया था। उसने पंजाब में आकर अपनी हकूमत कायम कर ली। बहादुर शाह जीते-जी उसको काबू नहीं कर सका। बहादुर शाह ने गुरु जी से किए वादे से पीछे हटकर समूचे उत्तर भारत में गड़बड़ी का माहौल पैदा कर दिया था।

गुरु जी की धर्म के मार्ग पर चलने की शिक्षा ने हर धर्म के पैरोकार को प्रभावित किया था। इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए जो सिक्ख एवं श्रद्धालु उनके जीवन में प्रमुख तौर पर आए, 'तवारीख गुरू खालसा' का लेखक ज्ञानी गिआन सिंघ उनके नाम भी बताता है। इन नामों को संख्या काफी लंबी है।

गुरु जी का जीवन-वृत्तांत सृजित करने के लिए लेखक स्थानीय मुहावरों का सहारा भी लेता है। लेखक एक तरफ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अकाल पुरख तथा गुरु नानक साहिब के खजाने में से श्रद्धालुओं पर बख्शिश करने वाला बताता है, दूसरी तरफ वह अलग-अलग इलाकों तथा वहां के लोगों की जानकारी भी साथ-साथ देता है कि किस क्षेत्र में वृक्ष कैसे हैं, मनुष्य कैसे हैं, उनकी आदतें तथा स्वभाव कैसे हैं, उनकी गुरु जी के प्रति श्रद्धा कैसी है, सिक्खी किस-किस क्षेत्र में फैल चुकी है, सिक्खी के प्रचार एवं प्रसार के लिए कौन-से ढंग अपनाये जा रहे हैं, लोगों का पहनावा कैसा है, श्रद्धालुओं का प्रेम कैसा है, लोग गुजारा कैसे करते हैं, कौन-से क्षेत्र में कौन-सा फल एवं सब्जी ज्यादा मात्रा में होती है, कौन-से क्षेत्र में दुराचार या सदाचार अधिक है, कौन-से क्षेत्र में किस तरह की मनौतें एवं वहम-भ्रम भारी हैं, बिप्रवाद के पंजे में लोक किस तरह जकड़े हुए हैं, सखी सरवर का किस-किस इलाके में प्रभाव है, लोगों के धार्मिक विश्वास और प्रभाव कैसे हैं आदि। लेखक गुरु जी के जीवन की हर एक घटना को एक कौतुक के रूप में देखता है तथा हर घटना के साथ एक शिक्षादायक व प्रेरणामयी साखी जोड़ देता है, जो पाठक को बोझिल नहीं होने देती तथा सारे वृत्तांत को निरंतर पढ़ने में रस बना रहता है।

शेष अगले अंक में . . .

Final

साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : अजेय व्यक्तित्व

*-डॉ. जगजीत कौर**

साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व विश्व इतिहास का अनूठा, विलक्षण और निराला व्यक्तित्व है। इसीलिए क्या भारतीय और क्या विदेशी सभी साहित्यकारों, इतिहासकारों ने खुले मन से गुरुदेव जी का प्रशस्ति गान किया है। इस अद्वितीय शख़्सियत का गुणानुवाद करते हुए मुसलमान कवि मिर्ज़ा अल्ला यार खां जोगी लिखता है :

. . .रुह फूंक दी गोबिंद ने औलाद कटा कर।
इनसाफ करे जी में ज़माना तो यकीं है।
कहि दे गुरू गोबिंद सिंघ का सानी ही नहीं है।
यिह पिआर मुरीदों से यिह शफक्ल भी नहीं है।
भगती में गुरू अरश है संसार ज़मीं है।
करतार की सुगंद है नानक की कसम है।
जितनी भी हो गोबिंद की तारीफ़ वुह कम है ॥

यकीनन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का कोई सानी ही नहीं है। क्या विश्व इतिहास में है कोई ऐसा व्यक्तित्व जो कुल मानवता के अधिकारों की रक्षा करता हुआ जुल्म और अत्याचार के खिलाफ़ जूझता हुआ अपने सरवंश को शहीद करवा दे। अन्याय और अधर्म का साथ देने वाले जाति अभिमानी पहाड़ी राजाओं और मुगलों की सम्मिलित सेना का श्री अनंदपुर सहिब के पावन स्थल पर महीनों लगातार कष्ट सहते हुए न्याय और आज़ादी की प्रतिष्ठा के लिए जूझते रहे और अंत में शत्रुओं के कस्में खाने पर किला खाली कर १७०४ ई की भयावह शीत रात्रि में जब सरसा नदी के तट पर पहुंचे और दुश्मनों ने कसमें भुला कर अचानक हल्ला बोल दिया साथ में आए सिक्ख योद्धे कुछ वीरता से दुश्मनों का मुकाबला करते शहादत को प्राप्त हुए और कुछ सरसा नदी में बह गए। पूरा परिवार बिछुड़ गया और गुरुदेव पिता जी दो बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी एवं ४० सिंघों सहित लड़ते-जूझते चमकौर की गढ़ी में पहुंचे; तब १७०४ ई. प्रात: ही विश्व का अनोखा युद्ध शुरू हुआ जिसमें एक ओर थके-हारे केवल ४० सिंघ और दूसरी ओर दस लाख की विशाल सेना लेकिन फिर भी आज़ादी का दिवाना तेजस्वी योद्धा थका नहीं, हारा नहीं। पूरा दिन डट कर शत्रु का मुकाबला किया और एक-एक करके अपने दोनों जिगर के टुकड़ों को अपने हाथों सुसज्जित कर रण-भूमि में भेजते रहे और जब विश्व को अचंभित कर देने वाली शूरवीरता दिखाने कृपाणों व अन्य शस्त्रों के विस्मयकारी करतब दिखाते हुए ये १८ और १२ वर्ष के युवा शूरवीर शहादत को प्राप्त हुए तब ये मानवाधिकारों का रक्षक डिगा नहीं, डोला नहीं उल्टा अकाल पुरख का शुक्राना किया कि :

मुझ पर से आज तेरी अमानत अदा हुई।
बेटों की जान धरम की खातिर फिदा हुई।

वाहिगुरु का शुक्राना किया *'आज खास भइयो खालसा सतिगुर के दरबार'* आज खालसा साजने का उद्देश्य पूर्ण हुआ। खालसा अब इतना शक्तिशाली हो गया है कि उसके वीर जवान

१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६

Final

देश-कौम की आज़ादी के लिए ज़ुल्म को समूल नष्ट कर सकते हैं। पांच प्यारों के आदेश पर गुरुदेव जी जब चमकौर की गढ़ी छोड़कर भाई दइआ सिंघ, भाई धरम सिंघ और भाई मान सिंघ के साथ चले परंतु विभिन्न दिशाओं में चलते गुरुदेव जी लंमा जटपुरे पहुंचे और यहां राय कल्ला ने अपने नौकर नूरा माही को माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबज़ादों का समाचार लाने को भेजा, जिसने आकर दर्दनाक विवरण दिया कि कैसे सरहिंद के नवाब ने अति क्रूरता से छोटे साहिबज़ादों को दीवार में चिनवा कर शहीद किया है और माता गुजरी जी को ठंडे बुर्ज में कैद किया जहां अत्यंत शीत सहन करते हुए माता जी शहादत को प्राप्त हुए हैं।

ऐसी दर्दनाक स्थिति का अनुमान सुधिजन पाठक स्वयं लगाएं कि ऐसा अजेय व्यक्तित्व जिनका परिवार तितर बितर हो गया है, लख़ते जिगर शहादत को प्राप्त हो गए हैं। सिंघ साथ भी नहीं हैं परंतु फिर भी यह अजेय अगम्य पुरष निरंतर चढ़दी कला में विचर रहा है स्वयं अपनी पावन बाणी जाप साहिब में जो गुण उस असीम परम ब्रह्म परमेश्वर की सामर्थ्य के बखान किए गए हैं यह *'परम पुरख का दास'* स्वयं उन असीम प्रचंड शक्ति का मुजस्समा है। जाप साहिब में गुरुदेव जी अकाल पुरख को *"अजीत हैं ॥ अमीत हैं ॥ . . अजे हैं ॥ अजादि हैं ॥"* बताते हैं कि अकाल पुरख अजेय हैं उसे विजित नहीं किया जा सकता, वह अजीत है। गुरुदेव जी का अपना व्यक्तित्व अजेय हैं उसे परास्त करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है। वह निरंतर अर्ध्व मानसिकता में विचरण करता है। चमकौर की गढ़ी निकल कर जब पैदल चलते-चलते किड़ी बहिलोल, पवात सहिजे माजरा होते हुए गुरुदेव माछीवाड़ा पहुंचते हैं तो यहीं उन्हें नबी खां और गनी खां मिले जो उन्हें उच्च दा पीर बनाकर मुगलों के घेरे से बाहर ले आए। दीने कांगड़ आकर गुरु जी ने ज़फ़रनामा लिखा जिसमें औरंगज़ेब को उसकी ज़ालिमाना हरकतें, अन्याय और धक्काशाही के विरोध में अत्यंत शक्तिशाली शैली में उसे झिंझोड़ा गया है उसे धर्म के मार्ग पर चलने की नसीहत दी गई है जिसका प्रभाव भी आगे चल कर पड़ा और वह दीन अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुआ। 'कलगीधर चमत्कार भाग २' में अत्यंत सुरुचिपूर्ण ज़फ़रनामा का ज़िक्र किया है। मूल भाव तो यह हैं कि यह बाणी इतना बताने के लिए पर्याप्त है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का अजेय तेजस्वी व्यक्तित्व नृशंस ज़ालिम औरंगज़ेब से भयभीत नहीं हुआ। उसकी दीनता स्वीकार नहीं की बल्कि उसे वंगारा।

ज़फ़रनामा में १११ शिअर हैं। पहले शिअर में प्रभु परमात्मा की महानता बताई गई है कि वह अलौकिक शक्तियों का शिखर परम कृपालु रिज़कदाता मुक्तिदाता रहमतें करने वाला, खुशियां बख़्शाने वाला है :

कमाल ए करामात काइम करीम ॥
रज़ा बखश राज़िक रिहाकुन रहीम ॥

गुरु साहिब के जीवन का उद्देश्य धर्म मार्ग का निर्देश कर जन साधारण को कष्ट मुक्त करना था किंतु जब ज़ब्रदस्ती कोई युद्ध करने पर मज़बूर करे तो हाथ में कृपाण उठानी जायज़ बनती है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत।
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत।

अपने धर्म का प्रचार-प्रसार करना बुरी बात नहीं है परंतु धर्म ग्रंथ की झूठी कसमें खाकर मानवता की तबाही मचाना उचित नहीं है। चमकौर की जंग में जो तबाही मची उसमें

खालसई फौजों का भी नुकसान हुआ और मुगलई फौज के भी बड़े-बड़े शूरवीर मारे गए :

हम आखिर बसे जख़मि तीरो तुफ़ंग।
दुसूए बसे कुशतह शुद बे दिरंग।
शुमा रा चु फरज़ असत कारे कुनी।
बमूजब नविशतह शुमारे कुनी।

झूठी कसमें खा धर्म की तौहीन भी हुई, चार साहिबज़ादे भी धोखे से मारे गए किंतु शेर को पकड़ने में फौजें फिर भी असफल रहीं :

चिहा शुद कि चूं बच्चगां कुशतह चार।
कि बाकी बिमांदा सत पेचीदह मार।

ऐसा करके बादशाह तुमने चिंगारियों को बुझा दिया लेकिन प्रचंड ज्वाला खालसा और भड़क उठा है :

चि मरदी कि अख़गर ख़मोशां कुनी।
कि आतिश दमां रा फ़रोज़ा कुनी।

औरंगज़ेब को धर्म के मार्ग पर चलने की सलाह देते हुए गुरुदेव पिता जी कहते हैं बेशक तुम शहंशाह हो, बलशाली शानो-शौकत के मालिक हो किंतु तुम सच्चे धर्म से दूर हो :

साहनशाह अउरंगज़ेब आमीन ॥
कि दाराइ दौर असत दूर असत दीन ॥

परंतु वह परमात्मा जो परम शक्ति है जो शहंशाहों का शहंशाह है वहीं सबके ऊपर है किंतु तुम्हें तो न उसका डर है न तुम धर्म-ईमान पर कायम हो न दीन की शरां पर तुम्हें मालिक की पहचान है न मुहम्मद साहिब पर यकीन तुम तो गरीबों को सताने वाले मनमाने फत्वे जारी करने वाले हो। *"न ईमां प्रसती न ओज़ाइ दी। न साहिब शनासी न मुहमद यकीं।"* गुरुदेव जी औरंगज़ेब को चेतावनी दे रहे हैं कि अंत में वह दिन भी आना है जब खुदा की कचहरी में मैं भी हाज़र होऊंगा और उस दिन वज़ीर खां के जुल्मों का लेखा-जोखा होगा और अपने कुकर्मों के लिए तुम्हें भी हाज़िर होना पड़ेगा, तुम्हें गवाही देनी पड़ेगी :

कि मा बारगहि हज़रत आयम शुमा।
अज़ां रोज़ बाशी व शाहिद शुमा।

इस प्रकार यह दोनों विजय पत्र बताने के लिए पर्याप्त हैं कि अदम्य शूरवीर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व अजेय, निर्भीक योद्धा का स्वरूप है, नित्य चढ़दी कला में विचरण करने वाली शख़्सियत हैं उनमें किंचित मात्र भी निराशा नहीं। यही आस्थावादी संदेश उन्होंने अपनी बाणी के माध्यम से हम सभी जन वर्ग को दिया है। उन्होंने हमें बताया है कि दुष्टता, शोषण, अनाचार, अत्याचार अधिक समय टिकता नहीं। अंत दुष्टता का नाश होता है न्याय सत्य और सद्गुणों की प्रतिष्ठा होती है। सत्य विजयी होता है :

दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविख भवान जपैंगे ॥
जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सभ थाप थपैंगे ॥
पुंन प्रतापन बाढ जैत धुन पान के बहु पुंज खपैंगे ॥
साध समूह प्रसंन फिरै जग सत्र सभै अवलोक चपैंगे ॥

(त्व प्रसादि सवैय्ये)

Final

हजूरी कवियों की रचनाओं में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा

*-स. सिमरजीत सिंघ**

दशम् पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कलम तथा तेग की शक्ति को भलीभांति प्रयोग करने की मुहारत रखते थे। गुरु जी चाहते थे कि उनके सिक्ख भी कलम तथा तेग की शक्ति से भलीभांति अवगत हों। यही कारण है कि जहां गुरु जी ने देश की रक्षा के लिए अच्छे खड़गधारी शूरवीर तैयार कर अपने पास रखे, वहीं साथ ही शास्त्रवेता विद्वान कलमधारियों को भी बहुत मान-सम्मान सहित अपने पास रखा। वास्तव में गुरु जी खुद ऊंची शख़्सियत के गुरु, वीर सेनापति तथा विद्वान कवि के संगम थे। गुरु जी ने खुद कलम भी चलाई और तेग भी। रूहानी दरबार भी लगाए तथा दुनियावी कार्य-व्यवहार भी अच्छी तरह से चलाए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरगद्दी पर बैठने से दो-तीन वर्ष बाद ही सिक्खों को हुक्मनामें भेजकर यह हुक्म किया कि यदि किसी भी क्षेत्र में लिखारी सिक्ख हो तो उसको श्री अनंदपुर साहिब भेज दिया जाए। इस तरह गुरु जी ने अन्य विद्वान साहित्यकारों को अच्छा मेहनताना देकर श्री अनंदपुर साहिब मंगवाने का प्रबंध किया। इस सम्बंध में स. केसर सिंघ छिब्बर बंसावली नामा के दसवां चरण में लिखते हैं कि :

जो ब्राहमण विदवान है चंगा, सो भिजवाणा।
जो खरच लगे सो गुरू के, घरूं लाणा।

इस बुलावे के अनुसार बहुत-से विद्वान, कवि-जन तथा लिखारी गुरु जी की हजूरी में आ गए। श्री अनंदपुर साहिब रौनक लग गई। इस समय के दौरान ही सन् १७३७ ई बिक्रमी को लखण ने सन् १७४१ ई बिक्रमी को तनसुख ने हितोपदेश का अनुवाद किया। सन् १७४० ई बिक्रमी को कवि गोपाल द्वारा लिखी 'मोह मरद राजे दी कथा' भी मिलती है। कुछ हालातों के अनुकूल गुरु जी को कुछ समय श्री पाउंटा साहिब में ठिकाना करना पड़ा, वहां पर भी ये गतिविधियां निरंतर जारी रहीं। कुछ समय बाद जब गुरु जी वापिस श्री अनंदपुर साहिब आ गए तो उन्होंने साहित्यक कार्यों की योजना बनाकर पूरे जोश तथा उत्साह से कवि-जनों को इक्ट्ठा करना आरंभ कर दिया। इस समय ही सन् १७४६ ई बिक्रमी में कवि प्रहिलाद जी ने गुरु जी के पास आकर उपनिषदों का तर्ज़मा करना आरंभ किया तथा काशी राम ने पांडव गीता का अनुवाद किया। सन् १७५० ई से सन् १७५३ ई बिक्रमी तक महाभारत का अनुवाद करवाए जाने के भी लिखित प्रमाण मिलते हैं। गुरु साहिब के दरबार में दिल्ली दरबार द्वारा सम्मानित कवि- आलम जी, सुखदेव जी, ब्रिंद चंद जी, काशी राम जी, कुवरेश जी, नंद राम जी तथा नंद लाल जी आदि श्री अनंदपुर साहिब में आए। प्रत्येक विद्वान गुरु जी के दरबार में पहुंचकर फ़ख़्र महसूस करता था। सारे विद्वान यह अच्छी तरह अनुभव कर रहे थे कि गुरु जी भारतीय सभ्याचार की पुनः स्थापित के लिए साहित्यक कार्य करवाकर नए इन्कलाब की बुनियाद रख रहे थे। इन कवियों को सिक्ख पंथ हजूरी कवियों के नाम से सत्कार देता है। इन ५२ कवियों के नाम संख्या कोश में-- उदे राय जी, अणि राय जी, अमृत राय जी, अल्लू जी, आसा सिंघ जी, आलम जी, ईश्वर दास जी,

**उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; फोन : ९८१४८-९८२२३*

Final

सुखदेव जी, सुखा सिंघ जी सुखीआ, सुदामा जी, सेनापति जी, शाम जी, हीर जी, हुसैन जी, अली जी, हंस जी, राम कल्लू जी, कुंवरेश जी, खान चंद जी, गुणीआ जी, गुरदास जी, गोपाल जी, चंदन जी, चंदा जमाल जी, टहिकिन धरम सिंघ जी, धंना सिंघ जी, धिआन सिंघ जी, नानू जी, निशचल दास जी, निहाल चंद जी, नंद लाल जी, पिंडी दास जी, बिधी चंद जी, बुलंद जी, ब्रिख जी, ब्रिज लाल जी, मथुरा जी, मदन लाल जी, मदन गिरी जी, मल्लू जी, मान दास जी, माला सिंघ जी, मंगल जी, राम जी, रावल रोशन सिंघ जी, लक्खा लिखे हैं।

आलम कवि बादशाह औरंगज़ेब के पुत्र शहजादा मुअज़्ज़म पास रहा था। वह अपने तुजुर्बे से कहता है कि जिस तरह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में कवियों को हर रोज़ धन-दौलत से मालामाल किया जाता है, वैसा राजा भोज के दरबार में भी नहीं था। वहां पर कभी-कभी ऐसा होता था, यहां गुरु-दरबार में ये दातें प्रतिदिन बांटी जाती हैं :

शोभा हूं के सागर नवल नेह नागर है,
बालं भीम सम शील कहां तो मिनाईए।
भुम के बिभूखन जु दूखन के दूखन
समूह सुख हूं दे मुख देखे ने अघाईए।
हिंमत निधान आन दान को बखाने जाने,
आलम तमाम जनम आठो गुन गाईए।
प्रबल प्रतापी पातिसाहु गुरू गोबिंद सिंघ जी,
भोज की सी मौज तेरे रोज़ रोज़ पाईए।

मंगल कवि श्री अनंदपुर साहिब की प्रशंसा करता हुआ अन्य कवियों को यहां आने का न्यौता देता हुआ कहता है कि यदि सच में कविता एवं ज़िंदगी का आनंद लेना है तो श्री अनंदपुर साहिब पहुंची :

पूरन पुरख अवतार अनि लीनी आप,
जा के दरबार मन चितवै सो पाईए।
घटि घटि बासी अबिनासी नाम जा को जग,
करता करनहार सोई दिखराईए।
नौमे गुर नंद, जग बंद तेग तयार पूरे,
मंगल सु कबि कहि मंगल सुनाईए।
आनंद दे दाता गुरू साहिब गोबिंद राइ,
चाहै जो अनंद तौ अनंदपुरी आईए।

हजूरी कवि श्री हंस राम जी उत्तर प्रदेश के गांव असनी के रहने वाले थे। इनका पोता चंद्र शेखर बाजपेई हिंदी का प्रसिद्ध कवि हुआ है। कवि हंस राम जी ने महाभारत का अनुवाद किया था। कवि हंस राम जी ने श्री अनंदपुर साहिब रहते हुए 'करन परब' का १६९५ ई. में भाषा अनुवाद किया था। इसके बारे में सूचना वह अपनी रचना में ही देते हुए लिखते हैं कि :

चार बरन चारों जहां आश्रम करत अनंद।
ता को नाम अनंद पुर है अनंद को कंद ॥
संबत सत्रां सै बरस बावन बीतन हार।
मांरग वदी तिथि दूज को तां दिन मंगलवार ॥
हंस राम तो दिन करयो वरन परब अरंभ . . .
(करन परब, पन्ना १)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इनकी रचना से प्रसन्न होकर इनको साठ हज़ार टके का ईनाम दिया था। इस सम्बंध में कवि हंस राम जी अपनी रचना 'करन परब' में ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि :

प्रिथम क्रिपा कर राख कर गुरू गोबिंद उदार।
टंका करे बखशीस तब मो को साठ हज़ार।
भाखा असथ विचित्र करि सुने सुकवि प्रबीन। . . .

कवि हंस राम जी की रचना वर्णन स्थिति के अनुसार ओज तथा प्रमाद दोनों गुण मौजूद हैं। इनकी उपमाएं बहुत ही अद्भुत एवं रूपक विधान कमाल का है। यह श्री अनंदपुर साहिब की खूबसूरती का वर्णन करते हुए अपनी रचना में लिखते हैं :

ता के किहि बिधि बरनिए नगर बाग बन ब्रिंद
कूप तड़ागन के लखे जल निधि लागर मंद।

हाट बाट बांधे सभै मानिक मेल अपार।
तां मै जटित भले किये मणि गण हीरा लाल।
रचना रची रचै अजौं विसु करमन की भीर।
धामन धरम धुजा बंधी शत रुद्रा के तीर।
नाना वेस विचित्र रंग चित्त नैन नही ठहिराहि।
चार बरण चारों जहां आस्रम करत अनंद।
तां को नाम अनंदपुर है अनंद को कंद
संगत, सिंघ, मसंद सभ हेर हरै पर पीर।
तहां बसत गोबिंद सिंघ धरम धरंधर धीर।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नगर (श्री अनंदपुर साहिब) के बागों, वनों की महिमा का वर्णन किस तरह करें? कुएं, तलाईयों को देखकर समुद्र भी मध्यम लगता है। बाज़ारों-घाटों में असंख्य मूल्य के हीरे-मोति लगे हुए हैं। जगह-जगह पर हीरे, लाल तथा मणियां जड़ित हैं। यहां बेअंत रचना रची गई है, तथा विश्वकरमा की भीड़ रचना करने में लगी हुई है। धामों पर धर्म के झंडे सतलुज के पास झूल रहें हैं। यहां इतने रंग-रूप हैं कि याद भी नहीं रखे जा सकते। चमकती हुई मृगजल की लहर-बहर पर आंख नहीं टिकती। जिस जगह पर चारों वर्ण व चारे आश्रम अनंद कर रहे हैं। जो अनंद के जड़ मूल वाली जगह है, उस जगह का नाम श्री अनंदपुर साहिब है। संगत, सिक्ख तथा प्रचारक जहां दुखी को देखते हैं तो उसका दुख दूर करते हैं उस जगह पर धर्म धुरंद्र (धर्म के धुरे को धारण करने वाला) धीर नायक (धीरज देने वाला नायक) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का निवास है।

हजूरी कवि कुंवरेश जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार का प्रमुख कवि है। भाई संतोख सिंघ जी ने सूरज प्रकाश के पन्ना ४९१० पर कवि कुंवरेश जी का ज़िक्र करते हुए इनको कवि केशव जी का सुपुत्र बताया है, परंतु कवि कुवंरेश जी रति रहस्य के पन्ना ४ पर अपने देश के बारे में सूचना देते हुए अपने आपको कष्यप वंशी ब्राह्मण, प्रयाग के पचास कोस तथा आगरा से अस्सी कोस पर, गंगा से नौ कोस तथा यमुना से चार कोस दूरी पर बड़ी ग्राम बताया है। कवि कुंवरेश जी अपने समय सुप्रसिद्ध विद्वानों में से एक थे यही कारण था कि औरगज़ेब उसको मुसलमान बना लेना चाहता था। कुंवरेश जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में आकर सन् १६९५ ई में द्रोण परब का अनुवाद किया। इसके अगले वर्ष सामुद्रिक की रचना हुई, जिसके बारे में उनकी रचना के पहले पन्ने पर दी गई सूचना से लग जाता है :

संबत सत्रह सै अधिक बावन बीते और
ता मै कवि कुंवरेश यां कियो ग्रंथ को तौर ॥

कवि कुंवरेश जी की मात्र तीन रचनाओं के बारे पता चलता है। एक महाभारत के 'द्रोण परब' का अनुवाद दूसरी 'रति रहस्स' का अनुवाद तथा तीसरी 'सामुद्रिक' है। अपनी रचना में कवि कुंवरेश जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा में लिखते हैं :

राजत है दिवज राज गिराजित वेद पढे सुभ पोथिन बांचै।
बाहुज बाहु बली बिसु है धनी सूद सहै इन की सब आंचै।
जैसे लखयो पुर गोबिंद सिंघ को ऐसो न और कही हम सांचै।
इंद्र कुबेर सराहत है तिहुं लोकन की तिहुं रेखन खांचै।

वाक्य विन्यास को जीत लेने वाले (गिराजित) पंडित लोग विराज रहे हैं जो वेद तथा शुभ पोथियों को पड़ते एवं विराचते हैं। क्षत्रिय जो बलवान बाजुओं वाले हैं, संसार में धनी एवं शुद्र हैं, सारे ही इनके तेज की आंच सहन करते है। सच कहते हैं जैसा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नगर (श्री अनंदपुर साहिब) देखा है ऐसा अन्य कहीं नहीं है। इंद्र एवं कुबेर इसकी शोभा करते हुए तीन लोकों की महिमा को उसके बराबर समझते हैं :

ऐल बिल इंद्र हूं को ऐसो नहीं सुर पुर

Final

असुर कहा है और बापुरे जे भरे है।
इद्र पथ इंद्र बारणी सौ लगै और भूतल मै
कौन महि पाल मेर परे है।
जैसे पुर स्री गोबिंद सिंघ जू को सोहै तीन लोकन मे
ऐसे कोऊ सोभा पुंज धर है।
नाना बिधि मनि जाल कुटम प्रोतली माल।
जा को पेख हाल और पुर हो तरै है ॥

पुरूखां का ठिकाना (पहले चंद्रवंशी राजा पूरूख की राजधानी प्रयाग के पास था, उसी में राजा का महल था) चूहे की बिल जैसा लगता है, देवताओं की बसती भी ऐसी नहीं, असुर बिचारे तो है कौन-सी गिनती में। इंद्र की रिहायश का रास्ता इंद्रायण (कौड़तुमे) के फल जैसा कड़वा लगता है तथा पाताल में कौन-सा राजा ऐसा है जो पास आता है। ऐसा नगर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का शोभा पाता है, तीन लोकों में ऐसी शोभा का पुंज अन्य कौन-सा हो सकता है? अनेक प्रकार की मणियों के जाल, दरवाज़ों, सड़कों पर मालाएं लटकते देखकर अन्य नगरों का हाल अपने आपको नीचा अनुभव करने लग जाता है।

देत मन इच्छत अरथ देव तुर मन इच्छा ते
अधिक मै न सुनयो दान कान मैं
देवता ऊ देत रिधि सिधि के निकेत पै
प्रथम लैत पूजा भाउ प्रयान गान मान मैं।
केवरेश ऐसे पै न कोऊ देव जाल हाल
करै जो निहाल नेकु नए ठान थान मैं।
ता ही ठोर पावै मन इच्छा ते अधिक स्री।
गोबिंद सिंघ पुर जहांन मैं जहा नमैं ॥

कल्प वृक्ष मन चाहा सवाल करने पर देता है, मन में जितना लेने की इच्छा हो उससे भी ज्यादा कोई किसी को दान करता हो मैंने ऐसा अपने कानों से भी नहीं सुना। देवते भी रिद्धियों-सिद्धियों के भंडार तो देते हैं, जब पहले पूजा भाव, ध्यान, कीर्तन तथा मान-सम्मान ले लेते हैं। कवि वरेश जी कहते हैं परंतु ऐसा कोई देवता नहीं जो मन में ज़रा-सी श्रद्धा से नमस्कार करने वालों को खुद चलकर, आकर, घर बैठे हुओं को निहाल कर जाए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नगर (श्री अनंदपुर साहिब) को जहान में जहां कहीं भी कोई नमस्कार करता है, वहीं जितनी मन में इच्छा है, उससे भी अधिक पा लेता है। यहां 'श्री' को दोनों तरफ प्रयोग किया गया है। एक बार दौलत के अर्थ में तथा एक बार वडिआई (उस्तति) वाले अर्थों में।

मंगल राय हजूरी कवि अपनी रचना 'शल्प परब भाखा' के आरंभ में लिखते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उसको बुलाकर उक्त ग्रंथ का अनुवाद करने की आज्ञा की थी:

गुरू गोबिंद मन हरख ह्वै मंगल लियो बुलाइ।
शलप परब आगिआ करी लीजै तुरत बनाइ ॥

ग्रंथ पूरा होने पर गुरु जी ने उसको बहुत ईनाम दिया :

शलय परब भाखा भयो गुर गोबिंद के राज।
अरब खरब बहुत दान दै कर कवियन को काज ॥

स. प्यारा सिंघ पदम ने मंगल कवि जी को पसरूर का निवासी बताया है। मंगल कवि की एक ही रचना महाभारत के 'शल्य परब' का अनुवाद मिलता है। हजूरी कवियों के पुराने छंद संग्रह वाले ग्रंथों में मंगल राय कवि जी के कुछ पंजाबी छंद भी मिलते हैं, जिनको भाषा-शैली तथा भाव उसके पंजाबी होने का अनुमान दृढ़ करता है।

कवि मंगल राय जी की रचना का ज्यादातर अंश सरल एवं आसान हिंदी में है। अनुवादक के रूप में अपने समय के अन्य अनुवाद करने वालों की तरह कवि मंगल राय जी भी शब्दार्थी अनुवाद नहीं बल्कि मूल की वस्तु को अपनी भाषा में (कथा तत्व को बढ़ाने-

Final

घटाने के बिना) वर्णन कर देते हैं तथा अपने इस कार्य में अच्छा सफल होते हैं।

सिमर भगौती जावलपा सूरन को सुखदाइ
गुरू गोबिंद सिंघ कौ सिमरि कै जहिं तहिं होइ सदाइ ॥ . . .
सिख संगति सेवत चरण सभ ठाढे रमदास।
गुरु गोबिंद पूरन पुरख पूरत की आस ॥

अग्नि की तरह तीखी चाल से आगे बढ़ने वाली भगौती को सिमरें जो शूरवीरों की सहायक है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को सिमरने से हर जगह सहायक होती है। सब सिक्ख संगत, चरणों की सेवक है तथा रमदास (मसंद) हाज़िर खड़े हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पूर्ण पुरख सब के मन की आशाएं पूर्ण करते हैं।

हजूरी कवि चंद जी के बारे में सिर्फ इतना ही पता चलता है कि वह स्वर्णकार थे। इन्होंने गुरु-दरबार में रहकर महाभारत के दो परवों का अनुवाद किया था। पहला अनुवाद 'करन परब' का था और दूसरा 'उदयोग परब' का था। एक रामायण भी इस नाम के कवि की लिखी मानी जाती है। कवि चंद जी के घर-बार, माता-पिता जी के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता। कवि चंद जी का जो छंद यहां दिया गया है वह त्रिया चरित्र वाली अधूरी पोथी में से लिया गया है, जिसकी कोई दूसरी पोथी अन्य कहीं देखने को नहीं मिलती। इस रचना की लोकोक्ति बड़ी सरल, चटपटी तथा खड़ी बोली के अधिक पास है, फिर भी युग प्रभाव के कारण इसमें से ब्रज भाषा की प्रधानता का प्रभाव है :

. . . मिहनत बिन राहत न देखिऐ जहान मैं।
पहिर परान वहीं नइओ होइ नाहि राओ रंक सभ लीन भयो भगवान मैं।
भूलिओ तिहि माइआ दुख उपजिओ अनंद सुख किरपा गोबिंद सदा वाही के बिआन मैं।
चंद सुखी सोई जाहि हरख सग बिआपत नहिं निस दिन अनंदता के रहित गुर गिआन मैं ॥

मेहनत के बिना संसार में सुख नहीं देखा जा सकता। पुराना वही पहनता है जिसके पास नया पहनने के लिए न हो, परंतु राजा तथा गरीब एक समान प्रभु में लीन होते हैं। जिस पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपा होती है, उसको माया के दुख भूल जाते हैं और आनंद के सुख प्राप्त हो जाते हैं। कवि चंद जी कहते हैं वही सुखी है जिसको हर्ष-सोग नहीं व्याप्त होता, उस पर रात-दिन आनंद का वास होता है, जिसके मन में सदा गुरु का बताया ज्ञान अगुवाई करता है।

हजूरी कवि हरी जी को भाई संतोख सिंघ जी 'भट्ट कवि' मानते है। इन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा में लिखा है :

रीझ तै दारिद दूर निकंदित खीझ हूं तै अरि कोटिक मारे।
औ हठ कै गुरू तेग तनै जिन कौतकि भूपनि के मद झारे।
हीर कहै कलि ईस मन महि जूठ दै केते अपाहम तारे।
लैबे कौ उदित औरन के करि दैवे को गोबिंद राइ तिहारे ॥

उनकी दृष्टि किसी की तरफ होती देखकर दरिद्रता दूर भागती है तथा खीझने पर करोड़ों अथवा कई कोटियां (प्रकार) के शत्रु मारे जाते हैं तथा जब कभी श्री गुरु तेग बहादर साहिब का पुत्र हठ कर बैठे तो कौतुकी राजाओं के हंकार चूर हो जाते हैं अर्थात् उन सभी अहंकारियों को नीचा देखना पड़ता है जो उनके साथ टक्कर लेने के चाहवान होते हैं। कवि हीर जी कहते हैं कि कलयुग में ईश्वर की भांति धरती की जूठ बख़्शकर कई अपाहिज तार दिए हैं। लेने के लिए कईयों में हाथ सदा फैलने के लिए बेचैन रहते हैं किंतु देने के लिए मात्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी आपके ही हाथ उठते हैं।

हजूरी कवि अणि राय जी के बारे में स. प्यारा सिंघ पदम का विचार है कि यह गुरु-घर के पुराने लिखारी थे। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब के हुक्मनामों में भाई अणि राय जी का नाम आता है। यह दोनों हुक्मनामें श्री पटना साहिब की संगत के नाम हैं। किंतु इससे यह पता नहीं चलता कि कवि भाई अणि राय तथा अणि राय एक ही व्यक्ति है या दो। स. रणधीर सिंघ ने अपनी खोज में कवि अणि राय जी को पाकपटन का रहने वाला बताया है। डॉ. भगवती प्रसादि ने कवि अणि राय जी को भट्ट बताते हुए अकबर के दरबार का कवि बताया है। कवि अणि राय जी की एक ही रचना 'जंगनामा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का' का मसौदा मोती बाग पटियाला के संग्रह में मिला था, जिसको स. शमशेर सिंघ अशोक ने अपने एक संग्रह में दिया है। इससे स. प्यारा सिंघ पदम तथा डॉ. जय भगवान ने देवनागरी लिपि में छापा था। स. शमशेर सिंघ अशोक ने इस रचना का काल १७००-१७०३ ई. का अनुमान लगाया है। शायद यह हिंदी में रचे गए किसी भी जंगनामे से पूर्बली रचना कही जा सकती है। इस रचना में कुल ६८ छंद हैं, जिनमें अंतिम भाग के पास पंजाबी भाषा की पउड़ियां भी दर्ज हैं। कवि अणि राय जी को गुरु-दरबार से अच्छा मान-सम्मान मिलता रहा है। वो अपनी रचना में कई जगह पर 'राय' छाप भी प्रयोग करते हैं, जिससे उसके भट्ट होने का अनुमान लगता है :

बांके बनैत मंडत जोधा सभै सज्जि सनाहि।
सिर खोल बकतर जिगै यागी बांध कै गजगाहि।
सूरे सिपाही सरस साचै बीर खेत खिलारि।
तरवार जमधर तीर बरछा सिपर ले हथिआरि।
बंदूक बान निसान बैरक सीस चमर ढुलंत।
पैदल घने जुझार आए कोटन हने जिही अंत।
बजंत मारूघोर दुंदभि चलयो अति रिस ठाठ।
रज रुंध धुंद अकास छायो गायो लोपत भान।
तीखे तुरंग मतंग मरदन पौन तै अगवार
दबके दलेर न बेर लावन सवामी काज संभार
भारथ मदयो तुव लोक मै गुर देव खंडे सूर।
सिर ताज सोढी सिंघ गोबिंद जगत साके पूर ॥

छैल-छबीले वर्दी धारक कट मरने वाले योद्धा, शस्त्रों एवं संजोओं सहित सजे, सिर तथा शरीर पर संजोअ पहन, जिगाह-कलगी धारण कर हाथियों, घोड़ों पर सुंदर वस्त्र बांधकर शूरवीर, वीर रस से भरे, सच्चे बहादुर, रण-भूमि के खिलाड़ी, प्रसिद्ध हैं। कृपाण, जमधर, तीर, बरछा, ढाल आदि हथियार लेकर निकले हैं। बंदूक, बाण, निशान, नेजों पर चढ़ाए छोटे झंडे साथ हैं तथा शीश पर चंवर झूलता है। साथ बहुत-से पैदल, लड़ाकू बहादुर आए हैं। जिनकी संख्या संभव नहीं। मारू बजता है तथा दुंदभियां (नगाड़े जैसा एक बाज़ा) की घनघोर लगी हुई है, मन में गुस्सा धारण कर चढ़े हैं। धूल उड़कर आकाश में धुंद की तरह छा गई है तथा सूर्य छिप गया है। तीखे तेज घोड़े जो मस्त हाथियों को हराते हैं हवा से आगे गुज़रते जाते हैं। दलेरों को दबाते हैं। स्वामी का कार्य संभालने में विलंब नहीं करते। आप जी सोढियों के सिरताज श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, जगत में साके पूर्ण करने वाले हो।

चारू भबूका बान छूटे गरज गोला तोप।
धर लुट्ट टुट्ट संजोहे बकतर जुट्ट जिरहा टोप!
इक घाइ घूंमै देखि झूमैं इक छोडै प्रान।
जिह बीर नचैं रुधर रचैं मचो कीचक खान।
सर सिल सुहल खिलार खिले इक मल्लै खग्ग।
गावत मंगल जोगणी जस रहयो जगमग जग्ग।
बरसंत केसर कुसम सुंदर बरत है बार हूर।
गोरी गनेश महेश अए डवरू शबद अपूर।
कीनी फते श्री साहिबां सतिगुरू गरीब निवाज।
सिरताज सोढी सिंघ गोबिंद रहयो जगमग छाज ॥

चमत्कार बाण, भबको की तरह छूटे तथा

गरजने तोपों के गोले छूटे। धरती लाशों से ढंकी गई तथा टूटे हुए ज़िरहा बकतर, संजोअ, लोह-टोप बिखर गए। एक जख़्मी करके जीत की खुशी में झूमते हुए मुड़कर देखते हैं तथा एक प्राण त्यागते हैं। बहादुर फेरियां डालते हुए लहु में भीगे हुए हैं धरती पर लाल-लाल चीकड़ हो गया है। कुछेक के खंड-खंड हुए शरीर खिले कंवलों की तरह लगते हैं, कुछेक के पास तलवारें हैं। जोगनियां मंगल गाती हैं तथा जुझारुयों का यश जहान में जगमगा रहा है। सुंदर फूल की तथा केसर की वर्षा हो रही है, (शहीदों को) हूरें (मृत्यु) पति रूप में वर रही हैं। सतिगुरु गरीब निवाज़ को, साहिब अकाल पुरख ने फ़तहि बख़्शी है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सोढ़ियों के सिर पर जगमगाने ताज की भांति जंच रहे हैं :

बान कपिदवज भीग भुजान क्रिपान सु मानस को मरदाने।
मार के मीर अधीर किए नित यौं डरपै कविराज बखाने।
श्री गुरू गोबिंद सिंघ चढ़े अरि के सुन के हियरे घहराने।
तेज के त्रास ते यौं तरफै धरके थिरिआ जयों पारद पाने ॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की चढ़ाई सुनते ही शत्रु बादशाह दिल से कांप उठे। गुरु जी के तेज प्रताप से इस तरह डोल रहे थे जैसे हथेली पर रखा हुआ पारा डोलता है।

अदल आलम शकल जोधा जग जानो।
नास होइ तिह बास रास जिह हुकम न मानो।
परी नाथ चहूं ओर तूं नर-नाथ भयो भुव।
करी सुजस दिग बिजै छिनक रावरे चरन छुव।
श्री गोबिंद सिंघ जग मैं बली सुकवि राइ पौरख प्रबल।
जहां मारि सु शाहि-अज़ीम क तखत छत्र दिन दिन अटल।

इन्साफ करने वाला, मन की जानने वाला तथा कलावान, योद्धा, संसार में अपनी मिसाल खुद ही जानो। जो उसका हुक्म नहीं मानता, उसके घर की सारी पूंजी नाश हो जाती है। चहुं कूटों को उसने नकेल डाली है तथा वह धरती पर बादशाह हो गया है। जिस किसी ने भी जितने समय में आपके चरण स्पर्श किए हैं, उसने यश में दिगविजह हासिल की है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, संसार में बड़े बलवान है तथा कवि राय जी कहते हैं कि उसकी मर्दानगी और भी बलवान है शाह-अज़ीम को मारकर (पराजित कर) जहान में (बहादुर शाह को) तख़्त छत्र अर्थात् राज्य की बख़्शिश की है :

तख़त बैठ अनीति को सुने न चित अकुलाइ।
ता को कर ता दिनन के किउ न लग फल आइ।
मुसलमान हिंदू करै दिओल ढहावै नित्त।
करिआद लगी दरगाह मै करता धरे न चित्त।
हुकम हुओ गोबिंद को उतरयो अवनी जाइ।
कुटल करम औरंग करै ता को देहु सजाइ।
धनुख चक्र खंडा धरे हिंदू पति सुलतान
सोढवंश अवतार हो गबिंद सिंघ बलवान ॥

तख़्त पर बैठकर भी जिसका चित्त अनीति की बात सुनकर बेचैन न हो जाए। उसको उन दिनों का फल क्यों न हाथ लगेगा अर्थात् ज़रूर फल मिलेगा। (औरंगज़ेब) हिंदुओं को मुसलमान बनाता था तथा प्रतिदिन देवताओं के मंदिर ध्वस्त करता था। लोगों की फरियाद दरगाह में पहुंची तथा वह (औरंगज़ेब) प्रभु के मन से उतर गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को हुक्म हुआ तो तब उन्होंने धरती पर जन्म लिया। औरंगज़ेब जो बुरे कर्म करता है उसको जाकर सज़ा दो। वह सोढ़ी वंश में धनुष चक्र व खंडा धारण कर अवतार धारण करके विश्व में आए :

जीते दिन दच्छन विचच्छन बनैत बाके।
नाकर निपट आदर सपाही को।
जा के त्रास बैरी बनबास निस बास लेत।

Final

छाडे सुख आस उपहास जाही ताही को।
जोधा गुरू गोबिंद उदार आयो राय कवि।
गहत ना बार कैई बर अवगाही को।
एक फौजै फेर एक ओर एहु जोर करै।
तेरी तरवार है बिरचि पतसाही को।

जिसने बड़े-बड़े चुस्त, चालाक व तजुर्बेकार योद्धा जीते हैं, सिपाहियों का बेजोड़ आदर किया है। जिसके भय से वैरी वनवास लेकर सांस भी नहीं निकालते; सुख की आशा छोड़कर, सब की तोमते झेलते हैं। कई बार अज़माकर देखा है, राय कवि कहता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ऐसे उदार योद्धा संसार में आए हैं जिनके वार को आगे-से कोई रोकने वाला नहीं है। एक तरफ फौज को खिंडा कर दूसरी तरफ विरोधियों पर जब दबाव डालते हैं तो लगता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपाण किस्मत लिखने वाली विधाता बन गई है :

पायो जोत पत्र सत्र पत्र जयो पुराने भए
एक उड गए एक पवन उडात हैं।
फूलै सुख फूल सूल उठे डर बैरिन के
चाहत अरन सो अरन बिललात हैं।
पायो फल प्रगट प्रताप पातशाही को
सु जोधा श्री गुबिंद रस कीरति चुचात हैं।
सूरन की लाज मुख पालप समाज आज
तेर तरवार रितु राज सी दिखात हैं।

विजय प्राप्त हो गई, दुश्मन पुराने पत्तों की तरह झड़ गए, कुछेक उड़ गए, कुछेक हवा अभी उड़ा रही है। सुखों की फुलवाड़ी खिल गई, वैरियों की छाती पर मूंग दल गई, जो अड़ना चाहते थे, वो मिन्नतें करते हैं। फलस्वरूप श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पातशाही प्राप्त की तथा यश का रस फैला हुआ है। शूरवीरों की लाज रही है, समाज के चेहरे पर नूर है, तेरी कृपाण आज बसंत का समय बांधती है :

तुरंग फ़ौज फौर ते मतंग मान मोर के
लरे करे अधीर सत्र जैत पत्र पान को
जिते समीप को गिने क्रिसन कोप जयो
हनै प्रचंड खंड कित्त मुंड तेज पुंज भान को
घटा छटा बिदारनी दीन धरा प्रहारनी
कंकाल बयाल काल कूट गूढ़ बयान त्रान को।
प्रसिद्ध दीप देस मै पुरी गनेस सेस मै
गुरू गोबिंद सिंघ की क्रिपान के समान को ॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपाण ने घुड़सवार फौज को खंडित कर, हाथियों का अहंकार चूर करके वैरी बेहाल कर दिए और जीत प्राप्त करने का प्रयत्न करती हैं। जो भी कोई पास आया फसल काटते किसान की तरह काट-मुकाया, सिर को अलग कर टुकड़े कर दिए, उसका तेज सूरज की भांति प्रचंड है। घटाओं के इकट्ठ को खिंडा देने वाली बिजली जैसी, धरती के राजाओं को मार देने वाली सांप जैसी लचकीली तथा ऐसी ज़हरीली है कि उससे बचाव का कोई साधन नहीं है। टापुओं, देशों, पुरियों में प्रसिद्ध है, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपाण के बराबर दूसरा कोई नहीं।

कवि सेनापति जी की लिखित 'गुर सोभा' अपने आप में एक अद्वितीय समकालीन लिखित है। इस लिखित की भाषा सरल ब्रज-प्रधान हिंदी है।

निरंकार आकार कर मनसा मन बीचार
मुकत करन संसार को प्रगट भयो करतार
करन करावनहार प्रभु समरथ सिंघ गोबिंद
कलाधार प्रगट भयो चहुं दिस भयो अनंद।

मन में विचार करने के बाद निरंकार ने आकार धारण करने की मंशा की तथा संसार को मुक्ति देने के लिए करतार खुद संसार में प्रकट हो गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सब कुछ करने-करवाने वाले हैं। ईश्वरीय कला धारण करके श्री गुरु गोबिंद सिंघ प्रकट हुए हैं, चहुं तरफ खुशियां मनाई जा रही हैं।

जीत संग्राम आनंद मंगल भयो आन गोबिंद गुन सबनि गाए।
धंनि हो धंनि प्रभू नाम तुमरो लीओ दुसट को

जीत डंका बजाए।
जीत अजीत अभीत जोधा वडे तोहि इक दिसट ते सबे घाए।
भयो जैकार त्रई लोक चउदा भवन जीत है सिंघ गोबिंद आए ॥

जंग जीतने की खुशी मनाई और सबने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के गुण गायन किए। हे प्रभु! आप धन्य हो, आपका नाम लेने से ही दुश्मन को जीत कर सफलता का डंका बजाया है। अजेय एवं निर्भय योद्धा जीते गए तथा आप जी की एक मेहर की नज़र पड़ते ही सब शत्रु मारे गए। तीनों लोकों, चौदह भवनों में जै-जैकार हो गई कि जंग को जीतकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी आए हैं :

कल मै करनहार निरंकार कलाधार जगत के उधारबे सिंघ आयो है।
असुर संघारबे को दुरजन के मारबे को संकट निवारबे को खालसा बनायो है।
निंदन को निंद दई सिखी दई सिक्खन को ता के महातम ते रैन दिवस पायो है।
खालसे के सिखन निंदकु जो निंद कर जानि बूझि नरक पटे ऐसो सो बतायो है।

कलयुग में सृष्टि को रचने वाला अकाल पुरख अपनी शक्ति से जगत का उद्धार करने हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के रूप में प्रकट हुआ है। देवताओं का विरोध करने वाले का नाश करने, बुरे लोगों को खत्म करने तथा दुखों को मिटाने हेतु गुरु जी ने खालसे की सृजना की है। निंदकों को निंदा बख़्शी ताकि भूले एवं दोष ढूंढकर प्रकट कटते रहें। सिक्खों को अच्छी शिक्षा दी है ताकि परमात्मा के महात्म को ढूंढते रहें। सिक्खों की जो निंदक जान-बूझकर निंदा करता है वह नरक में गिरता है :

कियो है प्रकाश लास चमकी चहूं ओर तहां जोति लाजवंत भयो सूरज अरु चंद है।
ता को दरसन ऐसे दुरमति मल सगल खोत बिनसत सकल पाप छूटति सभ बंद है।
खालसे सै सफुल सेव करत है सकल देव ऐसो जो बतायो भेव उपजत अनंद है।
कहो सिखो वाहगुरू वाहगुरू वाहगुरू सतिगुरू सतिगुरू सतिगुरू गोबिंद है ॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब प्रकाश धारण किया तो चारों तरफ ज्योति जगमगा उठी। सूरज तथा चांद जिन्होंने अपनी रौशनी का अभिमान था, शर्मा गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन ऐसे पवित्र करने वाले हैं कि बुरी मत वालों की सारी मैल दूर हो जाती है, सारे पाप व बंधनों से छुटकारा मिल जाता है। जो खालसा हो गए हैं वह सफल हो गए हैं, गुरु जी ने ऐसा गुप्त भेद बता दिया, जिससे अनंद उत्पन्न है। हे भाई सिक्खों कहो वाहगुरु, वाहगुरु, सतिगुरु, सतिगुरु।

गोबिंद सिंघ महा बल धार बिदार दए दल तुरकन के रे।
ऐसी भई प्रभू की रचना सभि भाज गए फिर आए न नेर।
राव बिसाली कौ आन मिलयो कर जोरि कहयो हम सेवक तेरे।
कीनी भया तिह ठउर प्रभू सु किये तिह ठांव तिही पुर डेरे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बल धारण कर तुर्कों के दल मिटा दिए। प्रभु की ऐसी कृपा हुई कि वैरी भाग खड़े हुए, दोबारा पास नहीं आए। बिसाली के राजा ने पास आकर साथ देने का वचन किया कि हम आप जी के सेवक हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उस पर मेहर कर उसी जगह उसी नगर में डेरा लगाया।

जो कहिआ करतार किउ बिरथा जावए।
जो मंने सो प्रवान इउं ही भावए।
सिर साहा दे साह हुकम मनावए।
मंने सो जिह जाइ पदवी पावए।
जी गोबिंद सिंघ धिआइ ता बण आवए ॥

Final

करतार ने जो कुछ कहा है, वह व्यर्थ कैसे जा सकता है। जो उसकी आज्ञा को मान ले वह प्रवान होता है, यही ही उसको भाता है। शाहों के सिर शहंशाह होकर हुक्म की पालना कराएगा। जो मानेगा वह जीत जाएगा व पदवी को प्राप्त हो जाएगा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जो सिमर ले उसकी परमात्मा के साथ बन जाएगी।

सीस पै ताज लै सोन कलगी धरी लाल हीरे ज़री जगमगावै।
हीरै पंना परे ओर मोती जरे झलक छबि सोभ तां की सुहावै।
झोक ऐसे लगे जोति फुंदन दिसै सोभ अपार नहीं बरनि आवै।
प्रगटि प्रचंडि त्रई लोक सोभा करै पेख तिह संत सुख सबि पावै ॥
चिलता कर कै सुब साज ही सों बरनों हथियार कहे सब ही।
कटि सो तरवार बनी जमधार अली बंद ढाल फबै जब ही।
दिस दाहन बान कमाण सजै कर मै बरछा चमकै अब ही।
सब दूतन छार करौं छिन मैं कहि गोबिंद सिंघ चढ़े तब ही ॥

सीस पर सोने की कलगी धारण की है जिसमें जड़ित लाल जगमगाते हैं। हीरे, पन्ने तथा सुच्चे मोती जड़े हुए हैं जिसकी विलक्षण आभा सुंदर लगती हैं। फंदों की झोक ऐसी ज्योति बिखेरती है जिसकी अपार शोभा वर्णन नहीं की जा सकती। तीन लोकों में चमक की तीव्रता शोभा देती है, जिसे देखकर सारे संत सुख प्राप्त करते हैं। सारे साजो-सामान से तैयार-बर-तैयार होकर चले हथियारों का वर्णन करता हूं। कमर के साथ कृपाण बंधी हुई है, जमधर, अलीबंदा तथा ढाल भी जंच रही है। दाईं तरफ कमान बाण सजे हुए हैं, हाथ में बरछा चमकता है। सारे दुष्टों को पल में मिट्टी में मिला देंगे, यह कहकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चढ़ाई कर की है।

भए भैमान पातार आकास कहयो करतार दिन दछि आनो।
कौन कारण प्रभू फेर दच्छन दिसा भए है सवार कैसे कि मानो।
सिंघ साधक सभो भए भैमान अब कौन की कान गुरू की नसानो।
डंक की घोर सुनि लंक कंपी चढ़े सिंघ गोबिंद सिंघ ऐसे बखानो ॥

आकाश, पाताल भयमान हो गए जब करतार ने कहा दक्षिण दिशा की तरफ आओ। फिक्र यह हुआ कि किस कारण प्रभु जी दक्षिण की दिशा की ओर सवार हुए हैं किस तरह इस भेद को समझें। सारे सिद्ध साधक भी भयमान हुए कि अब जब किसी ने गुरु की ईन मानने में ढील की तो किसकी पनाह लेकर अपना आप बचाएगा। डंके की घनघोर सुनकर शत्रु कांप उठे हैं, जब यह पता चला कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चढ़ाई की है।

ऐसो बिचार करो मन मीत गिरै भ्रम भति सोई बिधि कीजै।
संतन मै सुख होत निवास बिलास सदा तहां नाम जपीजै।
एक ही गुन गान सदा सु जहां जपु जापु बिखै तजि दीजै।
प्रेम की ठौर तहां नहीं और बिनां गुर गोबिंद कउन कहीजै ॥

हे मन! ऐसी विचार कर जिससे भ्रम की दीवार टूट जाए। संतों में सदा सुख का ठिकाना तथा मौज-मेला होता है, उनके पास रहकर सदा नाम जपें। जहां सदैव प्रभु के गुन गाए जाएं, जाप का जप हो तथा विषय-विकारों को त्याग दें। प्रेम का ठिकाना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बिना अन्य कोई नहीं है।

Final

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हजूरी कवियों में कवि अमृत राय जी का नाम भी आता है। कवि अमृत राय जी ने 'महाभारत' के 'सभा परब' का अनुवाद किया था। कवि अमृत राय जी के बारे में कहा जाता है कि यह भट्ट बिरादरी से सम्बंधित लाहौर के रहने वाले थे। इस कवि को अपने लाहौर निवासी कद्र करने वालों पर गर्व था, इस लिए यह किसी अन्य जगह पर नहीं था जाना चाहता। जब इस कवि ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा सुनी तो यह भी गुरु जी के पास श्री अनंदपुर साहिब आ गए। कवि अमृत राय की रचना में ब्रज भाषा प्रधान है। इस कवि ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा में लिखा है कि :

हिम गिरी हिम सी है भलयज जी भलयगिरि
हंसनी सी मान सर छीर निधि छीर सी।

हे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी आप जी की उस्तति बर्फ से ढंके हिमाला पर्वत में फैली बर्फ की तरह ठंडक देने वाली, चमकीली तथा निर्मल है। दक्षिण के पहाड़ जिस में चंदन के वन हैं। मल्य गिरि में चंदन की खुशबु फैलाने वाली, तिब्बत की पौराणिक झील मान सरोवर के हंसिनी की तरह उज्ज्वल दूध-पानी को अलग करने वाली, पुराणों में बताए गए दूध के सागर की तरह निर्मल व बेदाग है। पतालों में अपने हज़ारों मुंहों के साथ अकाल-पुरख का नए से नया नाम सिमर कर भक्ति करने वाले शेष नाग जैसी भक्ति तथा श्रद्धा की तरह नर्म एवं सुखदाई है। शिव के माथे पर चमकते चंद्रमा की तरह रौशनी देने वाली है जो दही के समुद्र से उपजा है। देवताओं की गले में पहनी फूल माला की तरह कोमल, शीतल एवं खुशबूदार होते हुए भी संसार जैसी सथूल है। यह कवियों की कविता की तरह विचित्र, सार्थक व अलंकारों से भरी पड़ी है, सर्सवती की वीणा की आवाज़ जैसी नशीली, सारे सुखों को देने वाली, चंद्रमा के अमृत-कुंड की तरह मृत लोगों को ज़िंदा करने की शक्ति भरी, रमापति (विषणु) के तन पर लिपटे हुए सफेद कपड़े जैसी निर्मल है।

गुनन सों गुनी कहै गिआन निधि मुनि कहै
दाता सभ दुनी कहै दारिद नसाइयो।
एक कहै दछन के लछन प्रतछ या मै
एक कहै छबि के बितान छिति छाइए।
एक बीर भारीक है एक उपकारी कहै।
एक धरम धारी कहै लोक लोक गाइए।
लाज के जहाज स्री गोबिंद सिंघ राजै आज
जग के समाज सभ रावरे मै पाइए ॥

सभी गुणी आप जी को गुणों के कारण ही गुणी कहते हैं, मुनि ज्ञान का खज़ाना कहते हैं। दुनिया वाले दाता कहते हैं, कृपा! मेरी गरीबी का नाश करो। कोई कहता है आप में सब कार्य में समर्थ दच्छन-नायक के सारे लक्षण हैं, कोई कहता है कि आपने तो साक्षात सुंदरता तथा शोभा का चंदोआ (शामियाना) धरती पर लगाया है। कोई भारी वीर कहता है, कोई परोपकारी कहता है, कोई धर्मधारी कहता है, इसी तरह तीनों लोकों में आप जी का यश गाया जा रहा है। आज लज्जा के जहाज के रूप में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी विराज रहे हैं तथा संसार के सारे समाज आप जी की शख़्सियत में मिल पाते हैं।

स्रोत पुस्तकें :

१) भाई कान्ह सिंघ नाभा : महान कोश
२) डॉ. रत्न सिंघ (जग्गी) : सिक्ख पंथ विश्व कोश
३) स. गुरबख़्श सिंघ केसरी : संख्या कोश
४) स. देविंदर सिंघ विद्यार्थी : श्री गुरु गोबिंद सिंघ अभिनव
५) स. केसर सिंघ छिब्बर : बंसावली नामा दसां पातशाहीआं का
६) स. प्यारा सिंघ पदम : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी रत्न
७) विसाखा सिंघ : मालवा इतिहास

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व और उनकी लासानी देन

*-स. सुरिंदर सिंघ निमाणा**

साहिब-ए-कमाल दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अज्ञानता के युग में सच्चे रूहानी ज्ञान का प्रसार करने वाले श्री गुरु नानक देव जी की पावन गद्दी के दशम उत्तराधिकारी हुए हैं। प्रथम सतिगुरु जी के आशय के अनुरूप हर प्रकार के अन्याय तथा अत्याचार को पूर्णतः समाप्त करने के दृढ़ संकल्प को समर्पित सिक्ख लहर दशमेश पिता जी के जीवन काल में शिखर पर पहुंची। इसी लिए इसे इस समय में 'खालसा' नाम प्राप्त हुआ। इस नश्वर तथा विभिन्न प्रकार के अवगुणों से अटे हुए संसार में 'खालसा' यानि पूर्णतः खालिस, शुद्ध होना लगभग असंभव ही लगता है परंतु यह असंभव दशमेश पिता जी के नेतृत्व में ३० मार्च, १६९९ ई को श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर मूर्तिमान हुआ। दूर अंदेश सतिगुरु जी ने इस अपूर्व उद्देश्य की प्राप्ति अकाल पुरख से असीम शक्ति लेते हुए की। तेग की धार पर सृजत हुए खालसे ने गुरु जी के नेतृत्व में बहुत ही अत्याचारी तत्कालीन मुगल शासन की जड़ों को हिलाकर रख दिया। दशमेश पिता जी के आशीर्वाद से बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में गुरु जी के साजे-निवाजे खालसे ने मुगल साम्राज्य के कई गड़ों को तोड़कर एक उपक्षेत्र में खालसई ध्वज झुलाते हुए खालसा राज्य ही स्थापित कर दिखाया जो पूर्णतः न्याय तथा लोकतंत्रीय गुणों से संपन्न था। फिर एक काफी विस्तृत क्षेत्र में सिक्ख मिसलों के पासार से होता हुआ, भारत वर्ष में महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा स्थापित सभी लोगों का सर्वसांझा कल्याणकारी खालसा राज्य कायम हुआ; जिसके गुणगान के अफसाने आज तक फिज़ा में गूंज रहे हैं। यह सब दशमेश पिता जी की ही देन है।

ऐसी तेजस्वी पावन आत्मा का प्रकाश नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी के गृह में माता गुजरी जी की पावन कोख से श्री पटना साहिब की सौभाग्यशाली धरती पर सन् १६६६ ई में हुआ। श्री गुरु तेग बहादर जी इस अवसर पर स्वयं उपस्थित न थे। वे लोगों को सच्चा गुरमति ज्ञान प्रदान करने हेतु प्रचार यात्रा पर थे। उन्हें सिक्ख संदेश वाहक के माध्यम से गृह में बाल के जन्म का समाचार प्राप्त हुआ। गुरु जी ने परमात्मा का शुक्राना व्यक्त किया तथा स्वयं नामकरण करते हुए नाम गोबिंद राय रखा।

माता गुजरी जी ने बाल गोबिंद राय की पालना तथा अच्छा मार्ग दर्शन करने का कार्य एक समर्पित मां के रूप में बाखूबी निभाया। निगरानी एवं सुरक्षा में मामा किरपाल चंद जी का बड़ा योगदान था। बाल गोबिंद राय में प्राथमिक बाल्य काल में ही नेतृत्व के गुणों को देखा तथा जाना-माना गया। आप जी श्री पटना साहिब की गलियों में अपने बाल सखों के साथ खूब खेलते थे। आप जी की प्रथम प्राथमिकता मसनूई लड़ाईयां लड़ना रही। उन दिनों शहर श्री पटना साहिब में हाकिम वर्ग के

५, हंसली कवाटर्ज, न्यू तहसीलपुरा अमृतसर। फोन : ८८७२७-३५१११

Final

मुसलमान चौधरी पालकियों में अधिकतर आया-जाया करते थे। लोग उनको नमन अथवा सलामें किया करते थे। आप जी अपने बाल सखों के साथ ऐसा करने से बागी अथवा इन्कारी होते हैं। होनहार बिरबान के चीकने चीकने पात। ऐसे बाल्यावस्था के खेलों तथा कर्मों में उनके आगामी जीवन की एक झलक अवश्य देखी जा सकती है।

सांसारिक विद्या का अपना अलग महत्त्व होता है चूंकि इसने जीवन भर विभिन्न साधनों, माध्यमों तथा स्रोतों से मिलने वाली शिक्षा तथा ज्ञान एवं जानकारियों का आधार बनना होता है। प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ जी ने 'गुर बिलास पातशाही १०' के प्रसंग सहित' गुरु जी को जहां चौसठ प्रकार की विद्याओं को प्रदान किए जाना लिखा है वहां उन्होंने भाई केसर सिंघ के बंसावली नामा के हवाले से गुरमुखी अक्षरों और फारसी अक्षरों का ज्ञान प्राप्त कराए जाना लिखा है। हरजस नामक राय सिक्ख परिज्जत विद्वान से गुरमुखी भाषा सीखने और एक अन्य फारसी विद्वान से फारसी के भाषा सीखने का विवरण दिया है। भाई हरजस गुरु जी के खिडावा भी थे। यह शिक्षा बाल गोबिंद राय जी ने छ: वर्ष की आयु में सीखनी आरंभ की। आप जी ने अक्षर ज्ञान तीव्र रुचि के साथ प्राप्त किया। एक वर्ष के भीतर सारा फारसी इलम और छ: मास में श्री गुरु ग्रंथ साहिब कंठस्थ कर लिया और गुहझ भाव भी समझ लिए।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने अपने होनहार सुपुत्र को शस्त्र विद्या विशेष रूप से सिखाने का प्रबंध किया। घुड़सवारी, तीरंदाज़ी और नेजाबाज़ी सिखाई गई। आप जी ने तैराकी भी सीखी। घुड़सवारी की सिखलाई भाई बज्जर सिंघ शाहदरा से सीखी। ९ वर्ष की आयु तक संसार की चौसठ प्रकार की सभी शिक्षाएं श्री गोबिंद राय जी ने सीख लीं। गुरु जी ने अपने होनहार सुपुत्र को राजनीति की विद्या सिखाने के भी विशेष भरपूर प्रयास किए, जो कि तीव्रता से परिवर्तित हो रहे देश के हालात के अनुरूप उत्पन्न आवश्यक समझा गया। प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ ने लिखा है कि "रात को परशादा छकने के उपरांत राजनीति की बातें होतीं।"

बाल गोबिंद राय जी के पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब के आदेश पर परिवार सहित श्री पटना साहिब निवास को छोड़ श्री अनंदपुर साहिब चले आये। मुगल बादशाह औरंगज़ेब ने वैसे तो सारे देश में इस्लाम का फैलाव करने के लिए अपने बहु-प्रकारी प्रयत्न किए परंतु हिंदू धर्म उसे विशेष रूप से नापसंद था। हिंदू धर्म के गुरु मुख्यत: ब्राह्मण थे। कश्मीर प्रांत ब्राह्मणों का बहुत बड़ा गढ़ था; जहां विशेषत: धर्म परिवर्तित के लिए बहुत बड़ा दमन चक्र चलाया गया। मुगल राज्याधिकारी इफ़तरवार ख़ान बादशाह के आदेश पर उन पर अथाह अत्याचार करने लगा। ब्राह्मण अत्यंत दुखी हो गए। इस लाचार स्थिति में जब वे पंडित किरपा राम के नेतृत्व में श्री अनंदपुर साहिब एक प्रतिनिधि मंडल के रूप में पहुंचे तो उन्होंने अपना दुख गुरु जी को करुणामय स्वर में खोल कर सुनाया। गुरु जी गहन चिंतत की मुद्रा में चले गए तो बाल गोबिंद राय जी ने उनसे इसका कारण जानना चाहा। सतिगुरु जी ने सारी स्थिति वर्णन की तो बाल गोबिंद राय जी ने अपने गुरु-पिता जी को दीन-दुखियों की समस्या का समाधान करने के लिए कहा, जिस पर सतिगुरु जी ने बादशाह औरंगज़ेब को दिल्ली जाकर अपनी धर्मान्ध नीतियों को रोकने के लिए प्रेरित करना चाहा परंतु उनको उनके

Final

तीन प्रमुख एवं प्रिय सिक्खों भाई मती दास जी, भाई सती दास जी तथा भाई दिआला जी सहित शहीद करवा दिया गया, इस अति विकराल स्थिति में बाल गोबिंद राय जी ने श्री अनंदपुर साहिब में सिक्ख पंथ की अगुआई करने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपने पर ले ली।

महा अत्याचारी तथा निपट स्वार्थ एवं निज अकांक्षाओं के अधीन शासन चलाने वाला औरंगज़ेब बहुत जिद्दी किस्म का होने के कारण श्री गुरु तेग बहादर साहिब जैसी महान आत्मा के द्वारा सर्व हित्कारी शासन विधि की ओर तो प्रेरित न किया जा सका परंतु इतिहास साक्षी है कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के संसार में वचित्रतम बलिदान से भारतवासियों में बादशाह के अत्याचारों का आतंक एक सीमा तक अवश्य कम हुआ। इस स्थिति में वे उनके सुपुत्र, श्री गुरु नानक साहिब के दशम रूप बाल गोबिंद राय जी के नेतृत्व में पहले से अधिक संख्या में तथा स्वैइच्छा के साथ जुड़ने लगे। भाई लक्खी शाह ने नवम् गुरु जी की देह का अंतिम संस्कार अपने घर को आग लगाकर और भाई जैता जी ने गुरु जी के पावन शीश को अत्यंत बिखड़े रास्तों से होते हुए श्रद्धा सहित लाकर भारत वर्ष के जन साधारण में सिक्ख समुदाय के प्रति पहले से कहीं अधिक झुकाव बना दिया। देश के कोने-कोने से लोग दशम पातशाह जी के नेतृत्व में एकत्रित होने लगे। नौ वर्ष की आयु में उनके द्वारा गुरु-पिता जी के बलिदान ने करुणा के साथ अपूर्व साहस भर दिया। वे सिक्ख लहर के अत्याचार विरोधी इरादों पर पूरी तरह डट गए।

श्री अनंदपुर साहिब में गुरु जी के नेतृत्व में उनके सिक्ख सैनिक शक्ति को बढ़ाने लगे। वे शस्त्रबद्ध होने लगे। अपना स्वाभिमान बचाने का यही एक मात्र रास्ता ही तो भारत वर्ष के लोगों के लिए रह गया था। गुरु जी ने इस दिशा में श्री अनंदपुर सहिब के इर्द-गिर्द के पहाड़ी राजाओं को अपने राष्ट्रीय धर्म-युद्ध में साथ जोड़ने का प्रत्येक संभव प्रयास किया लेकिन अधिकतर राजाओं में हिंदू धर्म की जात-पात का भिन्न-भेद दूर न किया जा सका, जिसका परिणाम, गुरु जी तथा सिक्खों के बढ़ रहे प्रताप से उनकी ईर्ष्या की ज्वाला प्रचंड होने में निकला। प्रथम चरण में कुछ पहाड़ी राजाओं के सैनिकों के साथ गुरु जी के सिक्खों की मुठभेड़ें और बाद में कई लड़ाईयां भी हुईं, जिनमें पहाड़ियों को मुंह की खानी पड़ी। इनमें राजा भीम चंद की भूमिका सबसे अधिक नकारात्मक रही। राजा फ़तहि शाह के श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ काफी अच्छे संबंध थे परंतु उसकी बेटी का विवाह राजा भीम चंद के पुत्र के साथ हो जाने से उसको गुरु जी से न चाहते हुए भी दूरी बनानी पड़ी। पहाड़ी राजाओं में नाहन का राजा मेदनी प्रकाश एक मात्र ऐसा था, जिसने गुरु जी के निर्मल उद्देश्यों को पूर्णत: समझा और गुरु जी को प्रत्येक संभव सहयोग भी दिया। यहां तक कि उसकी रियास्त में गुरु जी ने एक दुर्ग का भी निर्माण करवाया तथा यमुना नदी के किनारे अपनी साहित्य तथा विशेषत: कविता को आगे बढ़ाने हेतु निर्मल गतिविधियों को सरअंज़ाम दिया। यह स्मरण रहे कि जहां सतिगुरु जी स्वयं एक उच्चकोटि के कवि हुए हैं वे इसके साथ-साथ सभी कवियों के महा कद्रदान थे। वे अच्छी कृतियों पर उनको दिल खोल कर बड़े पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करते थे।

गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब को विद्या, साहित्य तथा संगीत का केंद्र बनाया। यह बात यहां उल्लेखनीय है कि इनमें से संगीत कला को औरंगज़ेब ने कट्टर मज़हबी दृष्टिकोण के कारण

बहुत नुकसान पहुंचाया था। सतिगुरु जी स्वयं संगीत कला के बहुत गहन ज्ञाता तथा साज़िंदे भी थे। आप जी मृदंग, जोड़ी तथा सिरंदा बजाने में बहुत प्रवीण थे। सहित्य की खोज अनुवाद और शोधन करने हेतु गुरु साहिब ने खोजी विद्वानों की सेवाएं लीं। आप जी सभी प्रकार के हुनरमंदों के महा कद्रदान थे। अच्छे कारीगरों को श्री अनंदपुर साहिब लाने के आप जी ने विशेष प्रयास किए। दशमेश पिता जी की पसर चुकी शोभा के कारण भाई नंद लाल जी जैसे आलम फाज़िल और उच्चतम कोटि के कवि गुरमति दरबार का हिस्सा बने। गुरु जी के संरक्षण में भाई जी ने स्मरणीय अत्यंत सुंदर काव्य रचनाएं रचित कीं। गुरु साहिब की सच्ची कीर्ति भाई साहिब ने अति अनुपम शब्दों, शैली तथा भावना में की है। यह स्मरणीय तथा उल्लेखनीय है कि गुरबाणी और भाई गुरदास जी की रचनावली के अतिरिक्त केवल भाई नंद लाल जी की ही रचना को श्री हरिमंदर साहिब तथा अन्य गुरुद्वारों में कीर्तन गायन किए जाने का गौरव हासिल है।

सतिगुरु जी का अल्पकालीन जीवन इतने अधिक और इतने ज्यादा आश्चर्यजनक महाकार्यों से भरपूर है कि इस जीवन को कलमबद्ध करने के वक्त प्रत्येक कलमकार बस नमन ही करेगा। प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ के ये 'पुरख भगवंत' शीर्षक से प्रकाशित गुरु जी के जीवन वृत्तांत के प्रारंभिक शब्द इस विचार बिंदु को पकड़ने में हमारी काफी सहायता कर सकते हैं कि :

"गुरु पातशाह जी ने इस जीवन कहानी में अपनी काव्य रूप आत्म कथा का नाम 'बचित्र नाटक' रखा। उनके जीवन काल में घटित प्रत्येक घटना साखी और वार्ता असचर्ज है और पड़ने-सुनने वाले को भी विस्माद में ले जाती है। ठीक और सच्ची बात यह है कि अन्य पैगंबर जिस आयु में अपना संग्राम आरंभ करते हैं, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उस ३३ वर्ष की आयु में खालसा पंथ सृजित कर प्रभु दर पर यह विंतियां भी करने लग गए थे कि *'शस्त्रन सिउ अति ही रण भीतर जूझ मरउ तउ साच पतीजै ॥'* दशमेश पिता जी जीवन भर संसार के बड़े मैदान में तुजुर्बेकार खिलाड़ियों की तरह खेलते रहे।"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तिव अनेक पक्षीय तथा अनगिनत पासारों वाला व्यक्तित्व है और प्रत्येक पासार ऊंचाई में अपना उदाहरण स्वयं ही है। गुरु जी अद्वितीय योद्धा हैं। वे अद्वितीय तीरंदाज़ तथा तेग के धनी हैं। वे अद्वितीय घुड़सवार हैं। उनका शारीरिक रूप भी बेहद मनमोहक है और वह उनके व्यक्तित्व के सभी पक्षों को एक साथ प्रतिचिंतत करने लगता है। दशमेश पिता जी ने अपने युग के ही नहीं सभी युगों तथा भाषाओं में सिरमौर कवि माने जा सकते हैं। उन जैसी ख़्याल की उड़ान, विस्मय जनक कल्पना शक्ति तथा अत्यंत ऊंचे विचारों की फूल मालाएं कहीं और से मिलनी मुश्किल हैं। उन्होंने जितने विभिन्न छंदों में पूर्ण प्रवीणता दर्शायी है वह भी अपना उदाहरण स्वयं ही है। गुरु जी ने सांप्रदायिक तथा कौमी एकता का जो सरोकार मध्य युग में लोगों के सामने रखा वह उस युग से बहुत आगे था और जो विश्व दृष्टि और मानवतावाद का सरोकार उभारा वह भी और कहीं से मिलना नामुमकिन है। उनका ३५०वां प्रकाश उत्सव मनाते हुए हमें उनके व्यक्तित्व और उनकी बहुपक्षीय देन के सम्बंध में गहन विवेचन करके वर्तमान की सभी उलझनों का अनुकूल समाधान ढूंढना चाहिए। ❂

दशमेश पिता के बलिदानों का साक्षी : पौष का महीना

-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल*

संवत् १७६१ बिक्रमी का पौष मास (दिसंबर-जनवरी, १७०४-०५ ई.) सिक्ख इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यही वह महीना है जिसमें सरवंशदानी साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मानवता की रक्षा के लिए अपने संपूर्ण परिवार को शहीद करवा दिया।

श्री अनंदपुर साहिब का घेरा : सन् १६९९ ई. की वैसाखी को खालसा पंथ के सृजन के पश्चात् श्री अनंदपुर साहिब बड़ी तेज़ी से एक आर्थिक एवं सैनिक शक्ति के रूप में उभरने लगा। पहाड़ी राजाओं और मुगल सूबेदारों से यह बर्दाश्त नहीं हुआ। पहाड़ी राजाओं और मुगलों ने गुरु जी के विरुद्ध कई लड़ाईयां लड़ीं लेकिन उन्हें हर बार पराजय का मुंह देखना पड़ा।

अंततः खालसे को परास्त करने के लिए एक बड़ा सैनिक गठबंधन बना जिसमें सरहिंद और लाहौर के सूबेदारों के अलावा बिलासपुर का राजा, कांगड़े का राजा और पड़ोसी पहाड़ी राजा शामिल थे। बाद में कुल्लू, मंडी, जम्मू, चंबा आदि के राजा भी इस जुटबंदी में आ मिले।

इस तरह बने इस लश्कर ने मार्च, १७०४ ई. में श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। सिक्ख लगातार संघर्ष करते रहे। घेरा आठ महीने तक खिंच गया।

सिक्खों के निरंतर आग्रह के कारण गुरु जी १७०४ ई. की मध्य रात्रि को परिवार सहित सिक्खों को साथ लेकर श्री अनंदपुर साहिब को छोड़कर निकल पड़े।

परिवार बिछोड़ा : शत्रु ने सरसा नदी पर गुरु जी पर हल्ला बोल दिया। नदी के तट पर घमासान युद्ध हुआ। सिंघों ने शत्रुओं को लोहे के चने चबवा दिए। इस अफरा तफरी में गुरु-परिवार बिछुड़ गया। गुरु जी बड़े साहिबज़ादों एवं ४० सिक्खों के साथ जैसे-तैसे चमकौर पहुंचे। छोटे साहिबज़ादों एवं माता गुजरी जी को गंगू रसोइया अपने गांव ले गया। माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी किसी तरह भाई मनी सिंघ जी के साथ दिल्ली पहुंच गए।

चमकौर का युद्ध : चमकौर पहुंचने पर श्रद्धालु सिक्ख चौधरी बुद्धी चंद ने गुरु जी से आग्रह किया कि विपत्ति की इस घड़ी में वे उसकी हवेली में आ जायें ताकि खुले मैदान के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित होकर शत्रु का सामना किया जा सके। गुरु जी ने आग्रह स्वीकार कर लिया।

पीछा कर रही फौज ने हवेली को आ घेरा। एक ओर गुरु जी, दो साहिबज़ादे और लगभग चालीस सिंघ.. वहीं दूसरी ओर लाखों की फौज। भयानक जंग छिड़ गई। सिंघ पांच-पांच के जत्थों में हवेली से बाहर आते और आखिरी दम तक शत्रुओं को मारते-मारते शहीद हो जाते। गुरु जी हवेली की छत पर एक मोर्चा बांधे तीरों की वर्षा कर रहे थे। गुरु जी के घातक तीरों ने मुगल सिपहसालार नाहर ख़ान और गैरत ख़ान को मार गिराया और ख़्वाजा मुहम्मद मरदूद को जख़्मी करके भगा दिया। सिर्फ चालीस सिक्ख लाखों के लश्कर का डटकर मुकाबला

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

Final

करते रहे और शहादत का जाम पीते गए।

बड़े साहिबज़ादों की शहादत : आखिरकार बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी ने गुरु-पिता से आज्ञा ली और पांच सिंघों को साथ ले जंग में कूद पड़े। बाबा जी ने अपने साथियों के साथ अनगिनत दुश्मनों को मृत्यु के घाट उतारा और अंततः शहादत प्राप्त की। इसके तुरंत बाद दूसरे साहिबज़ादे बाबा जुझार सिंघ जी पांच सिंघों को साथ ले युद्ध-भूमि में आ गये। बाबा जुझार सिंघ जी ने भी बड़े भाई के समान ही युद्ध-कौशल का परिचय दिया और साथियों के साथ शहीदी प्राप्त की।

दशमेश पिता जी ने साहिबज़ादों की शहादत पर गरज कर फ़तह बुलाई। मात्र ४० सिंघों के प्रतिरोध के कारण लाखों की फौज दिन भर जंग करके भी हवेली पर कब्ज़ा न कर सकी। यह सिंघों की बड़ी विजय और मुगलों की सबसे बड़ी पराजय थी। इस तरह दिसंबर, १७०४ ई का वह दिन रक्त रंजित होकर समाप्त हुआ, जिसने दो साहिबज़ादों और गुरु जी के प्यारे सिंघों की शहादत हुई। जिस हवेली में यह युद्ध लड़ा गया था, वहां आज गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

पांच सिंघों ने 'खालसे' को पुनर्गठित करने के उद्देश्य से गुरु जी को हवेली से निकल जाने का 'गुरमता' दिया। गुरु जी ने सोच-विचार पांच सिंघों के आदेश को शिरोधार्य किया। भाई संगत सिंघ को अपनी पोशाक पहनाई और गुरु जी हवेली से बाहर निकल गये।

छोटे साहिबज़ादों एवं माता गुजरी जी की शहादत : उधर छोटे साहिबज़ादे और माता गुजरी जी गंगू रसोइए के साथ थे। पहले तो गंगू उन्हें अपने गांव खेड़ी (सहेड़ी) ले गया। माता गुजरी जी के पास कीमती सामान देखकर और ईनाम के बारे में सुनकर गंगू के मन में लालच आ गया। उसने मोरिंडा शहर के कोतवाल को ख़बर भेज कर माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादों को गिरफ्तार करवा दिया। इन्हें सरहिंद के ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया गया।

अगले दिन बाबा ज़ोरावर सिंघ जी एवं बाबा फ़तहि सिंघ जी को सरहिंद के सूबेदार वज़ीर ख़ान की कचहरी में लाया गया। सात और पांच वर्ष के बच्चों (साहिबज़ादों) को बुरी तरह धमकाया गया और कई प्रकार के लालच दिए गए। परंतु दोनों साहिबज़ादे बिलकुल ही विचलित नहीं हुए।

सरहिंद के दीवान दुष्ट सुच्चा नंद ने सूबेदार को उकसाया कि ये सांप के बच्चे हैं, इन्हें छोड़ दिया तो बड़े होकर ये अपने पिता की तरह ही हमारे विरोधी बन जायेंगे। इनका अभी काम-तमाम कर देना चाहिए।

ऐसे समय में मलेरकोटला के नवाब शेर मुहम्मद ख़ान ने 'हाअ' का नारा लगाया। उसने कहा कि छोटे बच्चों को यातना देना कायरता है। हमारी दुश्मनी इनके पिता से है, उसी से निपटेंगे। इन्हें छोड़ दिया जाये परंतु सुच्चा नंद अपनी ज़िद पर अड़ा रहा।

अंततः काज़ी ने फतवा जारी कर दिया कि ये कसूरवार हैं, इन्हें दीवार में ज़िंदा चिनवा दिया जाए। बाद में दोनों छोटे साहिबज़ादों को दीवार में चिन शहीद कर दिया गया। माता गुजरी जी भी ठंडे बुर्ज में शहीदी प्राप्त कर गईं।

गुरु-घर के श्रद्धालु टोडर मल ने लाखों रुपये देकर माता जी और छोटे साहिबज़ादों की देह हासिल की और सोने के सिक्के बिछाकर ज़मीन ली और उस ज़मीन पर अंतिम संस्कार सम्पन्न किए।

छोटे साहिबज़ादों को जिस जगह दीवार में चुनवाया गया था, वहां आजकल गुरुद्वारा

Final

फ़तहिगढ़ साहिब सुशोभित है और जहां साहिबज़ादों का दाह संस्कार हुआ वहां गुरुद्वारा जोती सरूप साहिब स्थित है।

माछीवाड़े में गनी खां नबी खां की सहायता : चमकौर की गढ़ी से निकल कर गुरु जी माछीवाड़े के जंगलों में पहुंचे। शाही लश्कर गुरु जी का पीछा करते हुए यहां भी पहुंच गया। माछीवाड़ा के दो निवासी नबी खां और गनी खां गुरु-घर के प्रेमी थे। इन्होंने गुरु जी के यहां कुछ समय सेवा-कार्य भी किया था। शाही फौज़ के माछीवाड़ा घेर लेने की ख़बर जब दोनों भाइयों को मिली तो उन्होंने गुरु जी को 'उच्च का पीर' बनाकर पलंग पर बैठाया और पलंग को कंधों पर उठा लिया। रास्ते में मुगल लश्कर के अधिकारियों ने जब पूछा कि ये कौन हैं?' तो नबी खां, गनी खां ने कहा कि हमारे 'उच्च के पीर' हैं। मुगल अधिकारियों ने ज्यादा पूछताछ नहीं की और इस तरह गुरु जी घेरे से बाहर निकल गये।

'जफ़रनामा' की रचना : गुरु जी इससे आगे मालवा क्षेत्र में 'दीना कांगड़' पहुंचे। यहां गुरु जी ने औरंगज़ेब के अत्याचारों का विरोध करते हुए फारसी में एक चिट्ठी लिखी, जो 'जफ़रनामा' के नाम से प्रसिद्ध है। 'जफ़र' का अर्थ है जीत और 'नामा' का अर्थ है पत्र. . . अर्थात् 'जीत का पत्र' या 'विजय पत्र'।

यह 'जफ़रनामा' भाई दया सिंघ जी औरंगाबाद में औरंगज़ेब तक पहुंचाकर आये। औरंगज़ेब 'जफ़रनामा' पड़कर बौखला गया और अपने किए पर पश्चाताप करने लगा उसने गुरु जी से मिलने की इच्छा प्रकट की, जो कभी पूरी नहीं हुई।

इस प्रकार पौष का यह महीना गुरु-परिवार से अनेक कुर्बानियां लेकर समाप्त हुआ।

Final

धर्म की सिरमौर सल्तनत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

(पृष्ठ १० का शेष)

सिक्ख कुर्बान कर देने के बाद भी माछीवाड़े के जंगल में अकेले रातें बिताते परमात्मा का आभार मानते दिखे और लक्खी जंगल में प्रभु-महिमा की रौनक लगाई।

श्री पटना साहिब में अवतार लेकर बाल सुलभ कलोल करते श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के करिश्माई व्यक्तित्व में जो रंग खिले नज़र आए श्री हजूर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरआई सौंपते वैसे ही चमकीले, निर्दोष और मनमोहक दिखाई दिए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पूरा जीवन मानवता के आकाश पर उगे ऐसे सूर्य की तरह है जिससे सदा प्रेम, सहजता, उदारता, कृपा, संरक्षा और सदभाव की किरणें निकलती रहीं और एक एक कण को प्रकाशित करती रहीं। वे धर्म की सम्पूर्ण व्याख्या थे और उनके निकट जाने के बाद किसी ग्रंथ, किसी तर्क, किसी तथ्य की आवश्यकता नहीं रह जाती। उनका ३५०वां प्रकाश पर्व मनाना सोचने का एक अवसर है कि गुरु साहिब तो जीवन की हर सांस में बस जायें, हर पल उनकी दिखाई राह आखों के सामने रहे और मन में खंडे बाटे की पाहुल से मिली निर्मलता कभी कम न हो।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से संबंधित ऐतिहासिक अस्थान

*-बीबी मनमोहन कौर**

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म पिता श्री गुरु तेग बहादर जी व माता गुजरी जी के गृह १६६६ ई. में पटना साहिब (बिहार) में हुआ। आप जी अपने बचपन के प्रथम वर्ष पटना साहिब में व्यतीत करने के उपरांत पिता श्री गुरु तेग बहादर जी के आदेश के अनुसार श्री अनंदपुर साहिब (पंजाब) आ गए। यहीं पर गुरु पिता जी ने आप जी के लिए भांति-भांति की विद्या, घुड़सवारी, तीर अंदाज़ी, निशानेबाज़ी आदि का प्रबंध किया। आप जी ने गुरमति की जानकारी गुरु-घर के ग्रंथी मुंशी साहिब चंद जी से, फारसी की विद्या काजी नूरदीन सलोह से और संस्कृत की विद्या मटन निवासी पंडित किरपा राम जी से प्राप्त की। आप जी ने ९ वर्ष की अल्प आयु में ही अपने पिता जी को मज़लूमों की रक्षा करने हेतु शहादत देने के लिए दिलेरी से दिल्ली की ओर रवाना किया। पिता जी की शहादत के उपरांत गुरु-पिता के आदेश के अनुसार जब आपको गुरुआई प्राप्त हुई तो ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी के वंशज़ बाबा राम कुइर जी ने गुरुआई की रस्म अदा की। गुरुआई मिलने के उपरांत आप जी को समकालीन बादशाह और राजाओं द्वारा बेहद विरोधता भरी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। आप जी एक धार्मिक आगु और विद्वान होने के साथ-साथ एक महान योद्धा और जरनैल भी साबित हुए। आप जी ने श्री अनंदपुर साहिब के इर्द-गिर्द पांच मज़बूत किलों का निर्माण करवाया। आप जी ने संगत को घोड़े, शस्त्र, गोली-सिक्का और अन्य फौजी साधन भेटा के रूप में लाने के लिए और धर्म से अपना जीवन अर्पण करने लिए तैयार-बर-तैयार सिंघ सजने के हुक्मनामे भेजे। सिक्ख धर्म की अपनी रहित-मर्यादा और विलक्षण स्वरूप निश्चित करने के लिए आप जी ने १ वैसाख, १७५६ बिक्रमी को तख़्त श्री केसगढ़ साहिब (श्री अनंदपुर साहिब) में वैसाखी वाले दिन संगत का इकट्ठ कर, पांच प्यारों का चुनाव कर खालसा पंथ की साजना की। आप जी ने अपने से पूर्व गुरु साहिबान के पद चिन्हों पर चलते स्त्री जाति को भी समानता का अधिकार देते हुए जहां माता साहिब कौर जी को खालसे की माता होने का रुतबा प्रदान किया, वहीं मुक्तसर साहिब की जंग के बाद माता माई भागो जी को सिंघों के जत्थेदार होने की पदवी प्रदान की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अपने जीवन काल में लगभग १४ युद्ध लड़ने पड़े। आप जी के चारों साहिबज़ादों में से बड़े दो साहिबज़ादे चमकौर साहिब की जंग में शहीद हुए उपरांत छोटे दोनों साहिबज़ादों को सरहिंद के सूबेदार ने दीवार में चिनकर शहीद कर दिया। इन सबके बावजूद गुरु साहिब अडोल, दृढ़ और चढ़ती कला में रहे। इतना सब कुछ होने के बावजूद आप जी ने साहित्य रचना और अन्य कार्यों में भी महत्त्वपूर्ण योगदान डाला। जब औरंगज़ेब ने राग गायन करने, विद्या के स्रोत-स्थान पाठशालाओं

** #८३६३, गली नं. २, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर-१४३००१*

और संस्कृत आदि भाषाओं पर पूरी तरह से अंकुश लगा दिया था, उस समय आप जी ने औरंगज़ेब के हुक्म की परवाह न करते हुए कीर्तन की परंपरा जारी रखी और अलग-अलग भाषाओं और साज़ों का ज्ञान रखने वाले माहिरों को अपने दरबार में विशेष स्थान दिया। आप जी ने श्री अनंदपुर साहिब में ही पंजाबी, हिंदी, फारसी, संस्कृत आदि की विद्या देने का प्रबंध किया। पाउंटा साहिब में आप जी ने साहित्य रचना करने/करवाने के लिए भिन्न-भिन्न जाति और भाषाओं में माहिर उन ५२ कवियों को अपने दरबार में विशेष सम्मान दिया, जिन्होंने संस्कृत साहित्य को भिन्न-भिन्न भाषाओं में लिप्यंतरण करने का काम बहुत ही दिलचस्पी और निपुणता से सम्पूर्ण किया।

मुगल बादशाह औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नांदेड़ पहुंचे। यहां पर आप जी ने माधो दास बैरागी को गुरमति के पथ पर लाते हुए, अमृत की बख़्शिश करने के उपरांत बंदा सिंघ नाम देकर मुगल हकूमत के साथ टक्कर लेने हेतु जत्थेदार स्थापित कर पंजाब की ओर रवाना किया। आप जी ने श्री गुरु अरजन देव जी के द्वारा संपादित किए गए आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में तलवंडी साबो के स्थान पर नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी को संकलित कर पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को सम्पूर्णता बख़्शी और नांदेड़ की धरती पर सदा के लिए सिक्ख-पंथ का गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को नियत कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरुआई की बख़्शिश करने के पश्चात् गुरु जी ज्योति-जोति समा गए। आप जी अपने जीवन में बहुत सारे स्थानों पर प्रचार-यात्रा के लिए गए। आप जी जहां-जहां पर भी गए, वहीं-वहीं गुरुद्वारा साहिब सुशोभित हैं। अब जबकि इस महीने जनवरी २०१७ में आप जी की जन्म शताब्दी पटना साहिब (बिहार) में मनाई जा रही है तो आएं! आप जी के जन्म स्थान पटना साहिब (बिहार) में गुरु जी से संबंधित गुरुद्वारा साहिबान के बारे में जानकारी प्राप्त करें :-

तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब : तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब सिक्खों के पांच तख़्तों में से एक तख़्त है। यह बिहार की राजधानी पटना में मुहल्ला सुनारटोली में सुशोभित है। इस पवित्र स्थान पर ही दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश हुआ था। यह श्री गुरु नानक देव जी के एक सिक्ख सालस राए जौहरी का रिहायशी स्थान था। यहां पर श्री गुरु नानक देव जी सालस राए जौहरी के घर, उसकी विनम्रता भरी विनती पर पहुंचे थे। इस स्थान को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अतिरिक्त श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की पावन चरण स्पर्श प्राप्त है। तख़्त साहिब पर श्री गुरु गोबिंद साहिब जी का पालना, चार तीर, एक छोटी कृपाण, एक छोटा खंडा, एक छोटी कटार, चंदन का कंघा, हाथी दांत की खड़ाएं, गुरु जी बाल अवस्था में जो गुरमुखी अक्षर पैंती लिखते रहे हैं, उनके भी कागज़ पर चिन्ह मिलते हैं। माता गुजरी जी की चंदन की खड़ाएं, एक पुराना चोला और कई हुक्मनामें तख़्त साहिब में रखे हुए हैं। गुरुद्वारा साहिब के नाम पर २२५ एकड़ ज़मीन और बाकी पुरानी सिक्ख रियासतों द्वारा काफी वार्षिक जागीरें भी हैं।

गुरुद्वारा साहिब बाल लीला मैनी संगत : गुरुद्वारा साहिब बाल लीला मैनी संगत तख़्त श्री हरिमंदर जी के नज़दीक ही सुशोभित है। यह राजा

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

Final

अद्वितीय शख़्सियत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

जगत् गुरु खालसा पंथ के बानी (सृजक) सरवंशदानी, संत-सिपाही महान् जरनैल (सेनापति) युग-पुरुष, निर्भय क्रांतिकारी, उच्चकोटि के कवि महान् विद्वान, चिंतक, दार्शनिक, दीन-दुखियों के रक्षक, निराश्रतों, निसहायों को गले से लगाने वाले, खंडे-बाटे का अमृत छकाकर तथा लंगर को मर्यादा में बांधकर ऊंच-नीच का भेदभाव खत्म करने वाले, रणजीत नगाड़ा की रीति चलाने वाले महान रहबर, साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ३५० वां प्रकाश गुरु पर्व पूरे विश्व में अति चाव, उत्साह, उल्लास और श्रद्धा-भावना के साथ मनाया जा रहा है। उनकी अद्वितीय, शिरोमणि एवं महान् शख़्सियत के भिन्न-भिन्न पक्षों के वर्णन के प्रयत्न विश्व के भिन्न-भिन्न विद्वानों व लेखकों द्वारा, इतिहासकारों द्वारा होते रहे हैं, हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। वास्तव में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक विराट व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे सम्राटों के सम्राट, महान् सम्राट थे। ऐसे महान् सम्राट, जिन्होंने जन-साधारण के सम्मान, स्वतंत्रता, शासन, न्याय के लिए युद्ध लड़े और अपने लिए एक भी युद्ध नहीं लड़ा।

प्रकाश होने से लेकर ज्योति-जोत समाने तक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन संघर्षमयी, क्रांतिकारी रहा। जितने गुण उनमें थे, इतने सारे गुण किसी एक व्यक्तित्व में मिलने असंभव बात लगती है। भाई नंद लाल जी 'गंजनामा' में लिखते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख़्सियत सच को रौशन करने वाली, नौं मशालों का नज़ारा दर्शाने वाली और झूठ व कुसति (कुसत्य) की रात के अंधेरे को नाश करने वाली है। उनके नाम में आई 'बे' अमर ज़िंदगी वाली है, शरण में आने वालों को बख़्शने वाली है। 'नून' की सुगंध भक्तों को निवाजने वाली है। 'दाल' मौत के जाल को तोड़ देने वाली है और 'सीन' जीवन की पूंजी है। उनकी शिक्षा व आज्ञा का नगाड़ा नौ जहानों में बज रहा है। वे सिक्खों के साथ कितना प्यार करते हैं इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। हम उनके अनन्य सेवक हैं, उनके बोल मीठे हैं परंतु ऐसे जादू भरे कि मुर्दों में जान डाल देते हैं। फिर वे बेहोशी नहीं, होश वाली मस्ती देते हैं।

उनके एक दरबारी कवि हंस राम जी ने अति सुंदर कहा है, "जिन राजाओं के दरबार में जाने के लिए लोग महीनों तक तरसते हैं, वे गुरु-दरबार में दरबान, सेवक बने देखे जा सकते हैं।"

अमृत राय जी ने भी खूब कहा है कि आप जी के व्यक्तित्व में से नौ रस झर रहे हैं। गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपाण के आगे कोई ठहर नहीं सकता। फिर धर्म का जो मूल शर्म है, वह इन्हीं के पास है यही कहना बनता है कि शांति के सागर हैं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, वीर रस में गुंथे, रण विजयी और बख़्शिशें करने में उनका कोई सानी नहीं। एक और कवि लक्खन राय जी का विचार है कि श्री गुरु नानक देव जी की चलाई लहर की रक्षा श्री

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

Final

गुरु गोबिंद सिंघ कलम व तेग के साथ कर रहे हैं। मंगल राय कहते हैं कि श्री अनंदपुर साहिब में आनंद है और वैरी सहमे फिरते हैं।

इतिहासकार बैनर्जी बयान करते हैं कि "इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हिंदोस्तान की कुछ चुनिंदा महान शख़्सियतों में से हैं। उनकी शख़्सियत सर्वकालीन है।"

प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान, खोजकर्ता, चिंतक व दार्शनिक प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ दशमेश पिता जी के बारे में लिखते हैं, "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में पैगंबर, रक्षक, संत, कवि, भक्त, कलाकार, सुधारक, रूहानी रहबर, बांट छकने वाले, विद्वान, सभी बोलियों के माहिर, जत्थेदार, नीतिकर्त्ता, जरनैल, संत-सिपाही, परोपकारी, सिद्ध-योगी, उत्तम तीरंदाज़, तलवार के धनी, सहिष्णुता व नम्रता के पुंज, कौम के कामयाब आगु, घुड़सवार, सांसारिक कष्ट हरने वाले, निशानची, जगत-आगु, माया में उदासी, निरवैर, निडर, मज़लूमों के संरक्षक और लेखक तथा अन्य बहुत से गुण मिला सकते हैं। गुरु जी ने जिस महान कार्य को हाथ में लिया वह एक पवित्र एवं आवश्यक था। उस कार्य को उन्होंने पूरा भी किया। जुल्म का मुकाबला करने के लिए गुरु जी ने जो योजनाएं व नीतियां बनाई वे उनकी एक अलौकिक समझ का सबूत हैं। रसातल में से जनता को निकालकर गुरु जी ने उसे चढ़दी कला बख़्शिश की। मुरझाए चेहरों पर वे रौनक लाए। कमज़ोर मनों को बलवान किया। मौत से डरने वाले लोगों में मरने का चाव भर दिया। लोगों की मुर्दा रूहों में जान डाल दी।"

इतिहासकार लतीफ़ लिखता है, "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का लक्ष्य ऊंचा था और उन्होंने जिस काम को हाथ में लिया, वह महान् था। साधारण समझ रखने वालों को वे एक टूटे दिल वाले मनुष्य लगेंगे परंतु यह सब उनकी बरकत ही है कि मुर्दा व कुचले हुए लोगों ने ही राजनैतिक वर्चस्व एवं स्वतंत्रता प्राप्त की।" लतीफ़ आगे लिखता है, "ख़तरे व तबाही के बीच भी गुरु जी ने हौसले का दामन नहीं छोड़ा। युद्ध के मैदान में उनकी ज़रूरत तथा बहादुरी देखने लायक होती थी। बेशक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने लक्ष्य को पूरा होता देख न सके, परंतु मानी हुई बात है कि उनकी कृपा से ही अनियंत्रित लोग एक लड़ी में पिरोए गए और योद्धा बने। गुरु जी स्वयं रूहानी रहबर, युद्ध में निर्भय योद्धा, अपनी मसनद पर सच्चा पातशाह और संगत में बैठे हुए एक फ़कीर लगते थे।"

एक और इतिहासकार कनिंघम दशम पातशाह जी के बारे में लिखता है, "केवल सांसारिक सफलता ही किसी की महानता की निशानी नहीं। महानता तो सदैव आदर्श व लक्ष्य की होती है। जिस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु लीडर या आगु लगा हो, वह उसकी महानता का पैमाना है। जब हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ज़ालिमों को खत्म करने का मिशन देखते हैं, तब उनके बड़प्पन और महान् व्यक्तित्व के बारे में एकमत होना पड़ता है। उनका स्थान महापुरुषों की कतार में बहुत ऊंचा है। सिक्खों में पहले गुरु साहिबान की कृपा से असीम जज़्बा भरा जा चुका था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ऐसी रूह फूंकी (भरी) कि न केवल सिक्खों के मनों को ही बदल दिया, बल्कि हर पक्ष से बलवान एवं मज़बूत (सुदृढ़) कर दिया। सिक्खों की पहचान संसार भर में अलग हो गई और उन्होंने वे करिश्में कर डाले जो अन्य किसी व्यक्ति द्वारा न हो सके।"

गार्डन गुरु जी की महिमा का वर्णन इन

शब्दों में करता है, "जनता की मुर्दा हड्डियों में ज़िंदगी की लहर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ही दौड़ाई। गुरु जी में धार्मिक अगुआ, शाह, योद्धा और नीतिज्ञ के सभी गुण विद्यमान थे। उस विकट समय में केवल वे ही सिक्खों का सही नेतृत्व कर सकते थे। उन्होंने सिक्खों में शक्ति की पूजा का चाव भरा। यही कारण है कि कृपाण को रहित का अंग बनाया।"

मैकालिफ़ लिखता है कि गुरु जी की जादुई ताकत थी; उनके उपदेशों का जादुई असर आम लोगों पर हुआ, जिसने कुचले हुए लोगों को संसार के मशहूर योद्धा बना दिया। सिक्ख गुरुओं से पहले दुनिया के किसी भी जरनैल ने उन आदमियों को संगठित करने का ख़्याल तक नहीं किया था, जिन्हें पड़ोसी दुत्कार रहे थे परंतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन तथाकथित निम्न जाति के लोगों में ऐसी शक्ति भरी, कि वे योद्धा बन उभरे और फिर योद्धा भी ऐसे जिनकी दृढ़ता, बहादुरी तथा वफ़ादारी ने अपने आगू को कभी मायूस न किया। गोकुल चंद नारंग एक अलग अंदाज़ में इस विचार को पेश करता है, "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चिड़ियों को शाही बाज़ों का शिकार करने का ढंग सिखाया है।"

लाला दौलत राय ने भी बहुत खूब कहा है, "जिन शुद्रों की बात भी कोई नहीं था पूछता, जिन्हें दुत्कारा व फटकारा जाता था, जो ज़िल्लत और गुलामी में जीवन गुज़ार रहे थे, उनको विश्व के योद्धाओं के मुकाबिल ला खड़ा करना सिर्फ और सिर्फ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ही काम था।

साधू टी. एल. वासवानी ने इस संबंध में लिखा है कि जो काम हज़ारों मिलकर भी न कर सके, वह एक (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) ने ही कर दिखाया। जो पीसकर मिट्टी में मिलाए जा रहे थे और दीन-हीनों की भांति रहने को विवश कर दिए जाते थे, उनको खुद के पैरों पर खड़ा किया। गले से लगाया और 'गुरु का बेटा' कहा, उन्हें अमृत से निवाज़ा, सरदार बनाया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश ही इसीलिए हुआ कि वे *'धर्म चलावन, संत उबारन, दुष्ट दोखीअन मूल उपारन'।* गुरु जी स्वयं के बारे में फरमान करते हैं कि मैं उस परम पुरख (परमात्मा) का दास हूं और जगत का तमाशा (खेल) देखने के लिए आया हूं। रहित मर्यादा की उच्चता (श्रेष्ठता) तथा सुच्चता (पवित्रता) की महानता दृढ़ करवाते हुए फरमान करते हैं कि मुझे सिक्ख प्यारा नहीं। रहित प्यारी है। धर्म (नियमों व सिद्धातों) का पालन करना और अनुशासन में रहना, नैतिक, मूल्यों की रक्षा करना, सत्य पर पहरा देना, झूठ न बोलना, मीठे वचन बोलना और मुंह से किसी को कड़वा-बुरा न बोलना आदि रहित-मर्यादा के अंग हैं। गरीबों, मज़लूमों की रक्षा करनी। सिदक, संतोष, सब्र पर कायम रहना। बाणी व बाणा का आदर' करना इत्यादि रहित मर्यादा के उल्लेखनीय व उदाहरणीय गुण, चिन्ह हैं।

सर चार्लस गफ़ (Gough) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को विश्व का एक उत्तम दूरदर्शी, चढ़दी कला वाला (अदम्य साहस वाला) पवित्र, आशावादी और धार्मिक रंग को आभा बख़्शने वाला नायक (आगू) मानता है। एलफिंस्टन (Elphinstone) और बरन्स (Burns) भी गुरु गोबिंद जी की उपमा व महिमा गाते हुए उन्हें एक नई कौम साजने वाला लिखते हैं। सभी लेखक एवं इतिहासकार गुरु जी का यशोगान करने में एक जुबान, एक मत हैं। वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को मैदान का शूरवीर, मसनद का शाह व सिक्ख संगत में फकीर लिखते हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का स्थान कवि

Final

के रूप में अलग ऊंची महानता रखता है। केवल ४२ वर्ष की आयु में इतनी महान रचनाओं को लिखना एक करिश्में से कम नहीं। उनकी कई रचनाएं श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने के उपरांत सरसा नदी में बह गईं। जो कुछ हमारे पास हैं, उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वे एक महान कवि थे। 'श्री शस्त्र नाम माला', 'वार श्री भगउती जी की', 'चंडी चरित्र', 'चरित्र पखियान', 'ज़फ़रनामा', 'फ़तहिनामा', 'दसम ग्रंथ', 'जापु साहिब', 'चौपई साहिब', उनकी महान् व अमर रचनाएं हैं। 'दसम ग्रंथ' में रचित रचना के बारे में सिक्ख विद्वानों में मतभेद हैं कि इसकी सारी रचना दशम पिता जी की नहीं हैं।

औरंगज़ेब को 'फ़तहिनामा' लिखते समय उन्होंने लिखा, "तुझे अहंकार है अपनी चालाकी पर, कुटिल चालों पर और मुझे गर्व है खरी (सच्ची) बात पर तथा प्रभु के विश्वास में।" यथा :

"तुरा तुरक ताजी बि मकरो रिया।
मरा चारी साज़ी बि सिदको सफा।"

गुरु जी द्वारा बख़्शिश की गई अमृत की दात की महानता सदैव कायम रहेगी। उनके द्वारा सिक्खों को बख़्शिश किए गए पांच ककारों के बारे में प्रसिद्ध विद्वान एडमंड कैंडलर (Edmond Chandler) लिखता है, "सिक्खों को रहित देनी और उस हेतु पांच ककारों (केश, कंघा, कड़ा, कृपाण, कछिहरा) का चुनाव करना, उनके व्यावहारिक (अमली) फिलासफर होने का एक ज़िंदा सबूत है। उस वास्तविक दार्शनिक ने जहां सोच बदलवाई, वहीं सूरत भी बदल दी। पांच चिन्हों को देने का भाव (अर्थ) ही यह था कि सिक्ख एक अमली फिलासफर बन जाए। केश जत्थेबंदी के लिए, कड़ा भ्रमों को तोड़ने के लिए, विश्व नागरिक बनाने के लिए, कछिहरा सच्चवित्रता (जाति-सत्य) का प्रतीक एवं पर-तन गामी न होने का हुक्म। कंघा, सिक्खी केशों संग निभाने का संकल्प। स्वच्छता को कायम रखने का प्रण। कृपाण गाय, गरीब की रक्षा तथा स्वतंत्र राजनीति के लिए।"

गुरु जी के हुक्मों को मानने के लिए प्रत्येक सिक्ख पाबंद है। उनके आदेशनुसार ही हर सिक्ख (कोई भी) कब्रों, मज़ारों की पूजा नहीं करता है। सिक्ख के लिए नशे का सेवन विवर्जित है। किसी देहधारी गुरु पर श्रद्धा नहीं लाता या रखता। केवल आदि गुरु, हर युग में अटल, आदि ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना गुरु मानता है। इसमें भरोसा व श्रद्धा रखता है। एक अकाल पुरख का सिमरन करता है।

उनका ३५० वां प्रकाश पर्व मनाते हुए तथा हर वक्त हमें याद रखना चाहिए कि वे किसी जाति-पाति या देश, प्रांत के आगु नहीं थे, बल्कि संपूर्ण जगत व मानवता के आगु थे। गोकुल चंद नारंग के अनुसार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने राष्ट्रीयता को ही धर्म बना दिया।

भाई गुरदास जी (दूसरे) दशमेश पिता जी के विषय में लिखते हैं,

"वहि उपजिओ चेला मरद का मरदान सदाए।
जिनि सभ प्रिथवी कउ जीत करि नीसान झुलाए।
तब सिंघन कउ बखस करि बहु सुख दिखलाए।
फिर सभ प्रिथवी के ऊपरे हाकम ठहिराए।
तिनहूं जगत संभाल करि आनंद रचाए।
तह सिमरि सिमरि अकाल कउ हरि हरि गुन गाए।
वाह गुरु गोबिंद गाजी सबल जिनि सिंघ जगाए।. . .
तब सभ तुरकन कउ छेद करि, अकाल जपाए।
सभ छत्रपति चुनि चुनि हते, कहूं टिकनि न

पाए। . .
तब जग मैं धरम परगासिउ, सचु हुकम चलाए।
यह बारह सदी निबेड़ करि गुर फते बुलाए।
तब दुसट मलेछ सहिजे खपे, छल कपट उडाए।
इउं हरि अकाल के हुकम सों रण जुध मचाए।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अत्याचार, अधर्म, ज़ब्र, अन्याय के विरुद्ध लड़ते हुए धर्म-निष्पक्षता, सहिष्णुता, मानवता, धर्म, न्याय, मानवाधिकार, समानता, स्वतंत्रता, प्रेम, सद्भावना की रक्षा की है। वे एक ऐसी अद्वितीय महान् शक्ति हैं, जोकि देश, कौम तथा विश्व की सदैव आगवानी करती रही है और करती रहेगी। कवि संतोख सिंघ ने बहुत खूब व उपयुक्त कहा है, "अगर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी न होते तो हिंदोस्तान में जुल्म का राज्य कभी भी खत्म न होता।" विश्व इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नाम अंकित है। उनका नाम प्रत्येक सिंघ, सिंघनी, भुजंगी के हृदय पटल पर अंकित है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नाम खालसा पंथ की चढ़दी कला का प्रतीक है। उनका ३५०वां प्रकाश उत्सव मनाते हुए संपूर्ण विश्व, समूह सिक्ख समुदाय को और उनके श्रद्धालुओं को परमोल्लास, हर्ष, प्रसन्नता का एहसास हो रहा है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से संबंधित ऐतिहासिक अस्थान *(पृष्ठ ४६ का शेष)*

फ़तहि चंद मैनी की रिहायशगाह थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बचपन में अपने साथियों के साथ यहां खेलने आया करते थे। यहां पर गुरु साहिब जी की पवित्र निशानियां आज भी संभाली हुई हैं।

गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग, पटना : गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग पटना साहिब में तख़्त साहिब के नज़दीक ही सुशोभित है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार यहां पहली बार बाल गुरु, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को मिले थे। यहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के हाथ का कड़ा आज भी सुरक्षित है।

गुरुद्वारा साहिब (कंगन घाट) श्री गुरु गोबिंद सिंघ घाट : गुरुद्वारा साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ घाट पटना में तख़्त श्री हरिमंदर जी के नज़दीक गंगा के किनारे उस स्थान पर सुशोभित है, यहां गुरु साहिब बचपन में अपने मित्रों के साथ खेला करते थे। यहां गुरु साहिब जी ने पंडित शिव दत्त से भेंट हुई थी।

गुरुद्वारा साहिब हांडी वाली संगत, दापुर : बिहार राज्य के पटना शहर के नज़दीक एक गांव दानापुर को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पावन स्पर्श प्राप्त है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के बुलावे पर जब बाल गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी माता गुजरी जी व मामा किरपाल चंद जी के साथ पटना से पंजाब आ रहे थे तो रास्ते में यहां विराजे थे। गुरु जी की आमद पर यहां एक वृद्ध माता ने आप जी को मिट्टी की हांडी में खिचड़ी पका कर खिलाई थी। स्रोतों के अनुसार गुरु साहिब की पावन आमद की यादगार वह हांडी आज भी यहां सुरक्षित है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख़्सियत

*-स. गुरदीप सिंघ**

साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बेजोड़ शख़्सियत को अपनी अपनी सीमित बुद्धि अनुसार समकालीन और बाद के इतिहासकारों, खोज कर्ताओं, कवियों, श्रद्धालु जनों की तरफ से गुणगान करने का प्रयत्न होता चला आ रहा है। यदि एक ने गुरु जी को मरद-अगंमड़ा और 'आपे गुर चेला' कह कर दर्शाया है तो दूसरे ने सरवंश दानी, अद्वितीय योद्धा, धर्म रक्षक और परोपकारी कह कर गुणगान किया है। कुछ लोगों ने उनको पाखंड प्रहारक, संत-सिपाही, पंथ का वाली कहकर सम्मान दिया है। अन्य मतों में गुरु जी को महान कवि, खालसा पंथ की सृजना करने वाले और एक अकाल पुरख का पुजारी कह कर नमस्कार किया है।

संसार भर के इतिहासकारों और महान व्यक्तियों ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख़्सियत के बारे में इस प्रकार अपने विचार रखे हैं :-

प्रिं सतिबीर सिंघ : साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अद्वितीय शख़्सियत ऐसी है जिसका मूल्यांकन करना सहज ही नहीं नामुमकिन भी है। ४२ वर्ष की आयु में जो करतब, बख़्शिशें, युद्ध श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किए उनका जायज़ा लेना कठिन है। इतने महान कार्य कर लेना किसी करामात से कम नहीं।

कवि अमृत राय जी : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समकालीन कवि अमृत राय जी ने लिखा है कि कायरों (गीदड़) को शेर बनाकर युद्ध में भिड़ा देना, एक हलवाई और उदासी से समय के जरनैल को मरवा देना। ऐसा कार्य गुरु जी द्वारा ही संभव है। जब रणजीत नगाड़ा बजाया जाता तो ऐसी जोशीली आवाज़ पैदा होती कि पहाड़ी राजे अंदर ही दुबक जाते।

बंगाल के इतिहासकार बैनर्जी : बैनर्जी ने अपनी पुस्तक 'एवोलेशन ऑफ दा खालसा' में लिखा है कि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हिंदोस्तान की उन महान हस्तिओं में से हैं जिनकी प्रतिभा अटल है। गुरु जी में पैगंबर, रक्षक, संत, कवि भक्त, कलाकार, सुधारक, रूहानी, आगू, बांटकर खाने वाले, विद्वान, विभिन्न भाषाओं के माहिर, नीतिवान, जरनैल, संत-सिपाही, परोपकारी, तीर-अंदाज़, उदारचित, तेग के धनी, सहनशीलता, निर्माणता, घुड़सवार, निशानेबाज़, जगत-गुरु, निडर, निरवैर, लेखक आदि अनेकों गुण मिल सकते हैं

मुहम्मद लतीफ़ : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्देश्य ऊंचा था और जिस कार्य को उन्होंने आरंभ किया वह महान था। साधारण समझ रखने वालों को यह शायद हारे हुए दिल वाली शख़्सियत लगे परंतु यह सब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बरकत और महानता है कि वे निर्जीव और पिछड़े हुए लोग जत्थेबंद हो गए, जिन्होंने राजनीतिक प्रभुता और आज़ादी प्राप्त की।

लाला दौलत राय : एक ही व्यक्ति में सभी गुण मिलने बहुत मुश्किल बात है परंतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हर तरफ से बहुमुखी प्रतिभा वाले

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०*

सम्पूर्ण शख़्सियत थे। वे महा कवि, धार्मिक नेता, चोटी के सुधारक, महान विद्वान, बहुत बड़े बलवान योद्धा और जरनैल थे। लोगों के सच्चे सहायक और आगू थे। लोगों का प्यार दिल में लेकर सच्चे जज़्बे से उन्होंने अपने उद्देश्य की ओर बढ़ना आरंभ किया तो अपने सरवंश को शहीद करवाने से भी संकोच नहीं किया। असफलता का शब्द गुरु जी के कोष में नहीं था। वे जो चाहते थे, वे करके गए।

इन्दू भूषण बैनर्जी : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भारत वर्ष की उन कुछ महान हस्तियों में से हैं जिनका व्यक्तित्व सदीवी है। उन्होंने विश्व के इतिहास में नवीन शक्तियों को जन्म दिया। उन्होंने पराजित हो चुकी श्रेणियों में एक नवीन शक्ति वाली कौम (खालसा पंथ) बनाई। वे लोग जो पहले नीच और अपवित्र समझे जाते थे और दुरकारे जाते थे, अब सम्मानित किए जाने लगे।

कनिंघम : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख़्सियत और उपदेशों ने सिक्खों के मन का ही काया कल्प नहीं किया बल्कि उनका शारीरिक डील-डौल ही बदल दिया। आप जी ने सिक्खों में ऐसी रूह फूंकी कि सिक्ख हर प्रकार से बलवान और मज़बूत हो गए।

गार्डन : जनता के मुर्दा ढांचे में जीवन की नई लहर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के उपदेशों ने डाली। गुरु जी में धार्मिक आगू, एक शहंशाह, बलवान योद्धा और ऊंचे नीतिवान के सारे गुण मौजूद थे। गुरु जी ने अपनी अगुवाई में सिक्खों को शक्ति का धारणी बनाया। यही कारण है कि तलवार (कृपाण) को सिक्खों की रहत का अंग बना दिया गया।

गफ : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संसार के एक अत्यधिक बुद्धिमान, सदैव चढ़दी कला में विचरने वाले, पवित्र जज़्बे से ओत-प्रोत, आशावादी, धार्मिक रंग में रंगे हुए वह महानायक थे जिन्होंने अमृत की रस्म द्वारा कौम का नए सिरे से निर्माण किया।

एलफिनस्टन : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जाति-पाति के सभी भिन्न-भेद अपने सिक्खों में से दूर कर दिए। प्रत्येक इन्सान को, जिसने सिक्ख मज़हब को धारण किया है, चाहे वह मुसलमान था, हिंदू अथवा ब्राह्मण था, सभी को समान समझा।

मैकरेगर : यदि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के कार्यों को देखें, उनके धर्म-सुधार और कौम-निर्माण के कार्यों को देखें और साथ ही निजी बहादुरी और दुख-तकलीफों में दृढ़ता की कहानी पढ़ें और अंततः शत्रुओं और विपत्तियों के विरुद्ध मुकाबले में उनको विजय प्राप्त करते देखें तो हमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को ऊंचा गिनने में कोई संदेह नहीं होगा, हम समझ लेंगे कि सिक्ख क्यों आज तक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की याद को सम्मान के रूप में मनाते हैं।

सी एच पेन : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पहले प्रमुख हुए हैं जिन्होंने लोक-राज को राजसी और धार्मिक क्षेत्र में व्यवहारिक रूप देकर अपनाया, इस प्रकार आप जी ने संगठित धर्म को पंचायती नियमों के अधीन करके प्रत्येक व्यक्ति को अपना स्वाभिमान पूरी तरह से मानने और प्रफुल्लित करने का अवसर दिया।

सर जान मैलकाम : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्देश्य सभी सिक्खों को एक समान बनाना था और यह दर्शाना था कि उनकी उन्नति केवल उद्यम और परिश्रम पर निर्भर होगी। वह यह बात भली-भांति जानते थे कि निम्न जातियों के लोगों को और मुर्दा दिल इन्सानों को उत्साह और सम्मान देकर उभारना कितना आवश्यक

है। उन्होंने अपने सिक्खों के नाम तक बदल दिए और 'सिंघ' शेर बना दिया।

मैकालिफ़ : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में एक जादू-सी शक्ति थी। उनके उपदेशों का साधारण लोगों पर जादू-सा प्रभाव पड़ा। उन्होंने गिरे हुए एवं दबे हुए लोगों को संसार के प्रसिद्ध योद्धा बना दिया। सिक्ख गुरुओं से पहले किसी जरनैल ने उन (दबे-कुचले) व्यक्तियों को संगठित करने का ख़्याल तक नहीं किया था जिनको पड़ोसी दुत्कारते रहे थे।

साधू-टी. ऐल वासवानी : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन-उद्देश्य द्वारा धर्म के साथ-साथ शक्ति और देश भक्ति भी मिला दी। उन्होंने अपने आप को *'परम पुरख का दास'* ही समझा। उन्होंने कहा कि जो केवल अपने ही जीवन और स्वार्थ को मुख्य रखेगा वह मेरा सिक्ख नहीं बन सकेगा। जो धर्म और लोक सेवा के लिए अपने प्राण देगा, वही मेरी निकटता प्राप्त कर सकेगा।

सर गोकुल चंद : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चारों जातियों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) को मिलाकर एक जाति ही कर दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी रहतानमें में लिखते हैं कि परमात्मा के दर्शन श्रद्धा की आंख के माध्यम से खालसे के सारे लौकिक शरीर में ही किए जा सकते हैं। यानि खालसा समाज एक ऐसा समाज था जिसमें छोटे से छोटे और बड़े से बड़े सभी एक जैसे थे।

अल्ला यार खां योगी :-

करतार की सुगंद है नानक की कसम है
जितनी भी हो गोबिंद की तारीफ़ वुह कम है।
(सहीदानि वफा)

भाइ नंल लाल जी :-

नासिरो मनसूर गुर गोबिंद सिंघ ईज़दि मनजूर गुर गोबिंद सिंघ ॥
हक्क हक्क आगाह गुर गोबिंद सिंघ शाहि शहनशाह गुर गोबिंद सिंघ ॥(गंज नामा फारसी)

जोति बिगास में भाई नंद लाल जी लिखते हैं कि जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सिफत-सलाह का वर्णन करना असंभव है तो वह इस किताब के पर्दे में कैसे समा सकती है?

चू तौसीफ़स आमद फ़ज़ूं अज़ हिसाब
कुजा गुंजद अंदर हजाबि किताब ॥१७४॥

ये हैं अलग-अलग धर्मों से सम्बंधित बुद्धिजीवियों और इतिहासकारों के श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति विचार ऐसे बेमिसाल प्रतिभा वाले पैगंबर की शख़्सियत का वर्णन करना शब्दों के वश में नहीं। अपनी बात अल्ला यार खां योगी के इन शब्दों में समाप्त करनी चाहता हूं :

हरचंद मेरे हाथ में पुर ज़ोर कलम है
सतिगुर के लिखूं वसफ कहां ताबि-रकम है ॥



Final

धन्य श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

-डॉ. अमृत कौर

भाई गुरदास जी के यह शब्द उस महान तेजस्वी, तपस्वी, महान योद्धा, परोपकारी, साहिबे-कमाल, सरवंशदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महान प्रतिभा को उजागर करते हैं जिनको ब्यान करने के लिए शब्द-भंडार की सीमा ही नहीं है। ४२ वर्ष की आयु में इतने कार्य किए, अकाल पुरख ने आप जी के अंदर इतने गुण संजोये जिनकी गिनती करनी या उन गुणों को जानना भी असंभव है। प्रसिद्ध इतिहासकार कनिंघम का कहना है कि 'श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन को पढ़ने के लिए तेज़ घोड़े की रफ्तार चाहिए।'

श्री गुरु नानक देव जी की जोति के दसवें वारिस, माता गुजरी जी के लाल, श्री गुरु तेग बहादर जी के लाड़ले फरज़ंद, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री पटना साहिब की धरती पर सन् १६६६ ई में प्रकाश धारण किया। पटना निवासी इस बाला प्रीतम, चोज़ी प्रीतम से बहुत खुश थे। मन की जानने वाले बाल गोबिंद राय जी ने राजा फ़तहि चंद की रानी की गोदी में बैठ, उसको मां पुकार प्रसन्न किया, पंडितों व वज़ीरों का घमंड तोड़ा।

श्री अनंदपुर साहिब पहुंच आप जी अनेक भाषाओं के ज्ञाता बने और शस्त्र विद्या में निपुण हुए। नौं साल की आयु में ही अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को दिल्ली शहादत के लिए भेज कर सिद्ध कर दिया कि वे कितने उदारचित्त, धर्म रक्षक, हर धर्म का सत्कार करने वाले महान फिलासफर थे।

पिता जी की शहीदी उपरांत आप जी ने संत-सिपाही बन खालसा पंथ की साजना कर लोगों में नई जाग्रति, नई चेतनता जगाई। गीदड़ों को शेर बनाया और यह सच कर दिखाया कि :

सवा लाख से एक लड़ाऊं।
तभी गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।

इस लिए संगत आपको प्यार और सत्कार से बाज़ां वाले, कलगियां वाले, नीले के शाह सवार, फौजों वाले, दुष्ट दमन, आपे गुर चेला आदि कई उपमाओं से याद करती है।

आप एक रूहानी रहबर, नीति-निपुण, कर्मशील, निर्भय, निरवैर योद्धा भी थे।

गुरु जी महान साहित्यकार थे। आप जी ने बहुत सारी बाणी रची जैसे जापु साहिब, अकाल उसतति, चंडी दी वार, सवैये आदि। आप जी की सारी बाणी दसम ग्रंथ में अंकित है। आप जी ने अपनी बाणी में प्रभु के गुणों और उनकी स्तुति की है। आपके पास ५२ कवि थे। भाई नंद लाल जी ने तो अपनी फारसी में रची कविता में आपके अनेक गुणों का ब्यान किया है जैसे :

नासिरो मनसूर गुर गोबिंद सिंघ, ईज़दि मनज़ूर गुर गोबिंद सिंघ ॥
हक्क रा गंजूर गुर गोबिंद सिंघ, जुमला फैज़ि नूर गुर गोबिंद सिंघ ॥
हक्क हक्क आगाह गुर गोबिंद सिंघ, शाहि शहनशाह गुर गोबिंद सिंघ ॥

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

*१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), फोन : ९८१५१-०९९५७

Final

इंकलाबी गुरु दशम पातशाह

*-बीबी गुरमीत कौर**

खालसा पंथ के सृजनहार, संत-सिपाही, सरवंशदानी, महान कवि, दूरदर्शक, नीतिवान, सम्पूर्ण मनुष्यता के रहबर, साहिबे-कमाल, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी विश्व के युग-पलटाने वाले महान पुरुष थे। आप जी की बहुपक्षीय शख़्सियत का स्थान ले सकना असंभव है। आप जी ने भारतीय इतिहास को एक ऐसा इंकलाबी मोड़ दिया कि न केवल हिंदोस्तानियों के गले में पड़ी शताब्दियों से गुलामी की जंज़ीरें ही नहीं टूटी बल्कि ब्राह्मणवाद की वर्षों से चली आ रही जाति-पाति और छूआ-छूत की जंज़ीरें भी टूटनी शुरू हो गई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ऊंच-नीच, कर्मकांड आदि को समाप्त कर खंडे बाटे की पाहुल छकाकर सबको समानता का अधिकार दिया। ऐसा धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक इंकलाब आज तक संसार में न कोई लाया है और न ही कोई ला सकेगा।

धार्मिक इंकलाब : गुरु जी ने अन्य धर्मों के बानियों (मुखियों) की तरह अपनी प्रशंसा नहीं की बल्कि उन्होंने स्वयं को अकाल पुरख का चाकर बताया है। गुरु जी ने व्यर्थ के कर्मों-धर्मों के पड़े वहम-भ्रम को दूर किया और लोगों की रुचि वास्तविक धर्म की तरफ मोड़ी और अच्छाई को चारों तरफ फैलाया तथा बदी को संसार से नष्ट किया। आप जी ने खालसे के बारे में कहा है कि खालसा जाति-पाति और ऊंच-नीच के भेदभाव से रहित हैं। हक-सच की कमाई करना, वंड (बांटकर) छकना, सरबत्त का भला करना यह सब गुरसिक्खी के लक्षण हैं ऐसा खालसा सदैव राज करेगा।

राज करेगा खालसा,
आकी रहे न कोइ।
खुआर होए सभ मिलैगे,
बचे सरन जो होइ।

गुरु साहिब के जीवन का मुख्य उद्देश्य यह था कि लोगों को जुल्म और बदी के विरुद्ध मुकाबला करने के समर्थ बनाया जाए और समय आने पर इंकलाब का झंडा बुलंद किया जाए। गुरु साहिब के जीवन का उद्देश्य था कि अत्याचारी लोगों का नाश करना तथा धर्म का प्रचार करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गुरु साहिब ने सबसे पहले लोगों की सोच में इंकलाब लाया। लोगों का हौसला बुलंद किया और उनकी आत्मा को जगाने के लिए गुरु साहिब ने स्वयं बाणी रची और अपने दरबारी कवियों से भी साहित्य रचना करवाई। दूसरा, दबी-कुचली और मनोबल खो चुकी भारतीय जनता को उन्होंने चढ़दी कला का नारा दिया। सन् १६९९ ई. की वैसाखी वाले दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर एक ऐसा परिवर्तन लाया जो न पहले कभी किसी ने देखा था और न ही आगे दिखेगा। इस अलौकिक खेल का भेद तब खुला जब एक-एक खालसा, सवा-सवा लाख के साथ टकराने लग पड़ा। खंडे बाटे का अमृत छकते ही सिक्खों के तन-मन में एक इन्कलाबी मोड़ आया।

* ***Asst. Research Scholar, S.G.P.C. Sri Amritsar.***

Final

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और सिक्ख धर्म के उत्थान से पहले उस समय का भारतीय मानव अधूरा था क्योंकि उसके पास अगर शक्ति थी तो भक्ति नहीं थी, अगर भक्ति थी तो शक्ति नहीं थी। इस लिए शताब्दियों से गुलाम तथा कमज़ोर भारत वर्ष को एक ऐसे दल की ज़रूरत थी, जिसके पास शक्ति और भक्ति दोनों हो, क्योंकि भक्ति-शक्ति को उत्साहित कर अन्याय करने से रोकती है। गुरु जी के मन में विचार था कि एक ऐसे पंथ की सृजना की जाए जो जुल्म की आग को बुझाकर उसके स्थान पर अमन, शांति तथा इन्साफ का अस्तित्व लाए। गुरु जी एक ऐसी सेना की रचना करना चाहते थे जो कि जुल्म का टाकरा करे। अंततः तथाकथित गुरु जी ने सन् १६९९ ई को वैसाखी वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की सृजना की। ऊंच-नीच का भेदभाव मिटाकर सबको एक स्तर पर ला खड़ा किया। गुरु जी ने बताया कि प्रभु का स्वरूप मूर्तियों और भ्रमों, फोकट कर्मों आदि में प्राप्त नहीं किया जा सकता। वह तो विनम्रता तथा सिदक-दिली में है, अकाल पुरख की पूजा सच और सच दिली में है, उसको किसी नष्ट हो जाने वाली वस्तु के साथ सम्बंधित करना, उसकी ऊंची और पावन शान को नीचे गिराना है। वह खालसे में प्रकाश करता है और खालसा वह है जो सच्चा है, पावन है।

खालसा मेरो रूप है खास ॥
खालसे महि हौ करो निवास ॥ . .
खालसा मेरो पिंड परान ॥
खालसा मेरी जान की जान ॥

सामाजिक इंकलाब : गुरु जी के समय समाज के हालात सम्पूर्ण तौर पर बहुत खराब चल रहे थे। हिंदू धर्म की जाति-पाति की फिलासफी ने एक अकाल पुरख द्वारा पैदा किए गए लोगों के बीच अंतर डाला हुआ था। प्रेम सम्बंधों के साथ मिलकर रहना, इकट्ठे बैठकर खाना तो एक तरफ तथाकथित ऊंची जात के लोगों के साथ तथाकथित नीच जाति के लोगों का स्पर्श करना भी उन्हें भ्रष्ट कर देता था। तथाकथित नीच जाति के लोगों को धार्मिक स्थानों पर जाने की मनाही होती थी। मनुष्य का जन्म लेकर भी वह एक पशुओं की भांति जीवन व्यतीत करते थे। प्रभु भक्ति करने की मनाही शताब्दियों से पड़े इस अलगाव को मिटाने के लिए गुरु जी ने कमर कस ली। जिन पांच प्यारों को आप जी ने अमृत छकाया उनमें से तीन तथाकथित निम्न श्रेणी के थे। गुरु जी ने जाति-पाति के बीज का नाश किया। पांच प्यारों को एक ही बाटे में अमृत छकाकर फिर स्वयं उनसे अमृत पान किया तभी प्रसिद्ध है।

वाहु वाहु गोबिंद सिंघ आपे गुर चेला।

गुरु जी ने एक और इंकलाब लाया जो था सिक्ख औरतों को पुरुषों के समान पाहुल छकाने का। जहां एक सिक्ख को सिंघ बनाया वहां स्त्रियों को भी सिंघनियां बनाया। अमृत छकाकर स्त्रियों को अबला से सबला बना दिया। सिक्ख स्त्रियों के बहादुरी के कारनामे सिक्ख इतिहास में भरे पड़े हैं। गुरु जी के परोपकारों की अटूट श्रृंखला है। सिक्ख कौम को नशों से मुक्त कराना आपका एक महान परोपकार है। आज संसार के सभी देश नशे की लपेट में हैं। सिगरेट पीने वाले लाखों लोग कैंसर जैसी भयानक बीमारी से पीड़ित हैं। पश्चिमी देशों में आज यह एक भयानक समस्या का रूप धारण करती जा रही है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दूरंदेशी सदका आज से ३५० वर्ष पहले ही सिक्ख कौम को आने वाले समय में इस घातक

रोग से बचाने हेतु तंबाकू के सेवन को बज्जर कुरहित (पाप) बताकर इसके सेवन करने वाले को पतित करार देकर इस पर सख़्त पाबंदी लगा दी थी। आज यह बात गर्व से कही जा सकती है कि इन बुराईयों से बचने के लिए आज संपूर्ण संसार अनेकों मुश्किलों का सामना कर धन खर्च कर और अनेकों साधन जुटाकर जूझ रहा है गुरु जी के सिक्ख इन बिमारियों से पूरी तरह मुक्त हैं। संसार का इतिहास गवाह है कि जिन कौमों में नशे की लत पड़ गई वह गुलाम हो गईं। यह संतोषजनक पहलू है कि अमृतधारी नशे की लत से बचा हुआ है। धन्य हैं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जो अपनी कौम को इस मौत के धुएं से बचा गए।

आर्थिक इंकलाब : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी धार्मिक और सामाजिक इंकलाब के साथ-साथ खालसे की आर्थिक हालत में भी इंकलाब लेकर आए। गुरु जी ने सम्पूर्ण सिक्खों को ईमानदारी से किरत करने और वंड छकने का सिद्धांत दिया। उन्होंने सिक्खों को अपनी आमदनी से दसवंध निकालने के लिए कहा। यह दसवंध किसी भी रूप में हो सकता है गरीबों, अनाथों, विधवा स्त्रियों आदि को बिना किसी जाति-पाति, रंग-भेद, नसल या देश में अंतर किए बिना सहायता की जा सकती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने संत-सिपाही का एक ऐसा शक्तिशाली और महान जीवन-सिद्धांत दिया है जो अब तक कुर्बानियों की रोज़ाना नयी शिखरें छू रहा है। शहादत की भावना और शक्ति, महान जीवन सिद्धांत से पैदा होते हैं। संत-सिपाही के महान जीवन-सिद्धांत के धारणी खालसे ने न केवल युद्ध के मैदान में ही वीरता दिखाई बल्कि जीवन के क्षेत्र में इसने कमाल दिखाया है। हम कह सकते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान इन्कलाबी गुरु थे जिन्होंने सवैहीनता की जड़े उखाड़ कर स्वाभिमान तथा गौरव का जीवन व्यतीत करने की राह दिखाई।

धन्य श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

(पृष्ठ ५५ का शेष)

कादिरि हर कार गुर गोबिंद सिंघ, बेकसां-रा
यार गुर गोबिंद सिंघ ॥
हक्क हक्क अंदेश गुर गोबिंद सिंघ, बादशाह
दरवेश गुर गोबिंद सिंघ ॥

शाही ठाठ के मालिक होते हुए भी आप जी हमेशा निरमान और नम्रता में रहते। आप जी का समस्त जीवन गरीबों, मज़लूमों, की भलाई में गुज़रा, नई कौम 'खालसा पंथ' की साजना की।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर जी की शहीदी, माता की शहीदी और पुत्रों की शहीदी पर आंसू नहीं बहाए बल्कि उस परमात्मा का शुक्र किया और अपने खालसे पर गर्व प्रकट किया :

इन पुत्रन के सीस पर वार दिए सुत चार,
चार मुए तो क्या हुआ, जीवित कई हज़ार ॥

सर्वगुण संपूर्ण, गुणी निधान, धार्मिक आगू, सागर जैसे विशाल, प्रभु जैसे दयालु, बादशाही जलाल, दरवेशों के कमाल, कलम और कृपाण के धनी, संतों के उद्धारक, दुष्टों के संघारक, गंभीर, हकीकी, पुरुख भगवंत, साहिबे-कमाल, दूरअंदेश, विज्ञानी, स्वाभिमानी तथा चढ़दी कला वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व विलक्षण एवं अद्वितीय ही था।

गुरबाणी चिंतनधारा : १०८

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सलोकु मः १ ॥
दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥
तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥
बलिहारी कुदरति वसिआ ॥
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥
जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥
तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥
कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥ (पन्ना ४६९)

प्रस्तुत सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने इस रहस्य का उदघाटन किया है कि किस प्रकार सुख इन्सान के लिए दुख-रूप हो जाते हैं क्योंकि सुखों में सुखदाता परमेश्वर भूल जाता है और फिर दुख आ घेरते हैं। फिर दुखों को औषधि रूप मानते हुए गुरु जी ने समझाया है क्योंकि दुख में परमेश्वर याद आता है। साथ ही यह भी समझाया है कि परिपूर्ण परमेश्वर सर्वत्र समाया हुआ है और संसार में वही कुछ घटित हो रहा है जो ईश्वर करता है।

गुरु पातशाह श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि विपत्तियां, मुसीबतें अर्थात् दुख जीवों का इलाज बन जाते हैं तथा सुख (खुशियां) दुख का कारण बन जाता है। जिस सुख में वह परमेश्वर याद नहीं रहता अर्थात् सुखों के सागर परमेश्वर को भुलाना ही दुखों को निमंत्रण देना है।

अकाल पुरख वाहिगुरु जी! तूं ही सब कुछ करने वाला कर्त्ता पुरख हैं। हे कर्त्ता पुरख! जो कुछ भी करता है तूं ही करता है, तेरे बिना मैं कुछ भी करने में समर्थ नहीं अर्थात् तूं ही सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है मेरी औकात कुछ भी नहीं जो तेरे बिना कुछ कर सकूं।

हे रमईया! कण-कण में रमण करने वाले प्रभु, ज़र्रे-ज़र्रे में व्यापक सृजनहार प्रकृति में सर्वत्र समाए हुए प्रभु! मैं तुझ से बलिहार (कुर्बान) जाता हूं। तेरा कहीं अंत नहीं है अर्थात् तेरे आदि-अंत का भेद कोई नहीं पा सकता। रहाउ ॥ सारी सृष्टि (जगत-रचना) में तेरा ही नूर है अर्थात प्रकाश है अंत तेरे नूर से ही सब नूरी है, अस्तित्व में हैं। तूं सर्वत्र एक रस व्यापक है। तू सदा कायम रहने वाला है अर्थात् अटल है। तेरी उपमा अकथनीय है अर्थात् तेरी शोभा अनंत है। जिस जिसने तेरी सिफत-सलाह की अर्थात् तेरी गुण-गायन किए उस उसका इस भवसागर से पार उतारा हो गया अर्थात् तेरी उपमा करने वाले आवागमन से पूर्णतया मुक्त हो गए। अतिंम पंक्ति में गुरु पातशाह हमारा मार्ग दर्शन करते हुए समझाते हैं कि तूं भी उस पारब्रह्म परमेश्वर की सिफत-सलाह कर, उसका गुणगान कर एवं मन में यह सच्ची भावना बना कि ईश्वर जो कुछ भी कर रहा है वह भला ही है अर्थात् सर्वकला समर्थ प्रभु जो कुछ भी करता है वही श्रेष्ठ है सर्वोत्म है, क्योंकि उसके क्रिया-

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

Final

कलाप में किसी की कोई दख़ल अंदाजी नहीं।

उपरोक्त सलोक में गुरु साहिब ने सुख और दुख में निहित रहस्य को प्रकट किया है। यह इन्सानी फितरत है जब इन्सान के पास सुखों के साधन बहुतापता से आ जाते हैं तब वह उनमें गलतान हो जाता है और परमेश्वर को भुला देता है जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि जीव को दातें (प्रभु के दर से मिले पदार्थ) तो प्यारे लगने लगते हैं लेकिन वह सब कुछ देने वाले प्रभु को भूल जाता है लेकिन इससे प्रभु को कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन जो उसे भुला देता है उसकी ज़िंदगी में दुख ही दुख प्रवेश कर जाते हैं जैसा कि पावन बाणी में समझाया है :

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥
(पन्ना १३५)

परमेश्वर को भुला देने से माया के भोग पदार्थों को दुखों में परिवर्तित होते क्षण भर की भी देरी नहीं लगती और ऐसी अवस्था में किसी के आगे दुखड़ा रोने का कोई लाभ नहीं क्योंकि ऐसे में जीव के अपने ही कर्मों का दोष होता है और कोई कुछ नहीं कर सकता। लेकिन गुरु साहिब ने 'दुख' को इलाज बताकर कलयुगी जीवों को इस हकीकत से रूबरू करवाया है कि वास्तव में जब इन्सान दुखों से घिरा होता है तभी उसे परमेश्वर याद आता है और इस तरह दुख के कारण ही वह प्रभु को याद करता है, अरदास करता है और जहां प्रभु का सिमरन हो उस सर्वकला समर्थ परमेश्वर के चरणों में अरदास हो, जीव को अपनी गलती का एहसास हो वहां परमेश्वर फिर से जीव की झोलियां सुखों से भरपूर कर देता है। लेकिन असल भाग्यशाली तो वे हैं जो गुरु-कृपा से सुखों में भी परमेश्वर को याद रखते हैं तथा हर पल उसी सुखों के दाते प्रभु का शुक्राना करते हैं।

साथ ही समझाया है कि जीव को किसी प्राप्ति का गुमान (अहंकार) नहीं करना चाहिए। क्योंकि सब कुछ करने एवं करवाने में वह मालिक समर्थ है और किस पल क्या हो जाए कोई नहीं जानता। अत: उस बेअंत-अनंत सर्वकला समर्थ प्रभु से बलिहार (न्यौछावर) जाना चाहिए। सब में उसी की ज्योति है उसी की कीर्ति करते हुए सबमें उसी का नूर जान कर सबसे प्यार का व्यापार करना चाहिए। उसके गहरे भेदों को जानने की कोशिश करना व्यर्थ है और यह जीव का मकसद भी नहीं है।

म : २ ॥
जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥

इस सलोक में दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी ने धर्म के मूल उद्देश्य को स्पष्ट किया है, केवल बाहरी तौर पर किसी के ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि होने से कुछ भी सिद्ध होने वाला नहीं; जब तक कि वह अपने कर्त्तव्य को क्रियाविंत रूप नहीं दे देता। लेकिन सबका प्रमुख धर्म गुरु साहिब ने प्रभु का सिमरन बताया है और इस तथ्य को जानने वाला प्रभु का ही रूप समझो।

श्री गुरु अंगद देव जी का पावन फरमान करते हैं कि योगियों का (प्रमुख) धर्म ज्ञान प्राप्ति बताया गया है अर्थात् योगी ज्ञान द्वारा ही प्रभु को प्राप्त कर सकते हैं। ब्राह्मणों का धर्म वेद शास्त्रों की विचार करना। क्षत्रियों का धर्म शूरवीरों वाले काम करना। शुद्रों का धर्म दूसरों की सेवा करना परंतु सभी का प्रमुख धर्म ईश्वर का स्मरण करना है।

गुरदेव कथन करते हैं कि यदि कोई मनुष्य इस तथ्य (वास्तविकता) को समझे तो स्पष्ट हो जाएगा कि संसार के समस्त मनुष्यों के लिए एक ही धर्म है और वह है ईश्वर का सिमरन अर्थात् परमेश्वर का नाम जपना। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो व्यक्ति इस रहस्य को समझ लें, मैं उसका दास हूं और वह मनुष्य प्रभु का ही रूप है।

इस सलोक द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी ने धर्म को जाति के अनुसार विभाजित करने वाले धर्म के ठेकेदारों के उस विश्वास को ठुकराते हुए मनुष्य हेतु केवल एक ही धर्म बतलाया है और वह है प्रभु का सिमरन।

वास्तव में गुरबाणी आशयानुसार वह परमेश्वर किसी विशेष आयोजन-प्रयोजन कर्मकांड या किसी धर्म अथवा जाति विशेष द्वारा वश में आने वाला नहीं है क्योंकि ये समस्त आडंबर मनुष्य द्वारा निर्मित हैं अर्थात् इन्हें बनाने वाला ईश्वर नहीं अपितु मनुष्य ही है। ईश्वर ने तो सबको एक समान ही बनाया है उसने कोई भेद नहीं किया और सब कुछ उसके वश में है लेकिन वह परमात्मा भक्तों के वश में है गुरबाणी प्रमाण है :

ना तू आवहि वसि तीरथि नाईऐ ॥
ना तू आवहि वसि धरती धाईऐ ॥
ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥
ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥
सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥
तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥
(पन्ना ९६२)

भक्तों को उस परमेश्वर का ही ताण (बल) है। गुरबाणी में अनेकों बार ऐसे भक्तों से बलिहार जाने का ज़िक्र आया है जैसा कि श्री गुरु अंगद देव जी का पावन फरमान है :

हउ तिसु ढाढी कुरबाणु जि तेरा सेवदारु ॥
हउ तिसु ढाढी बलिहार जि गावै गुण अपार ॥
(पन्ना ९६२)

म : २ ॥
एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥४॥

दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा उच्चारण किए गए इस सलोक में भी उस परमेश्वर को सर्वकला समर्थ मानते हुए समस्त देवी-देवताओं की परम आत्मा मानते हैं और जो जीव आत्मा-परमात्मा का भेद समझ लेता है वह माया के प्रभाव से रहित परमेश्वर का ही रूप हो जाता है।

श्री गुरु अंगद देव जी पावन फरमान करते हैं कि एक पारब्रह्म परमेश्वर ही समस्त देवताओं की आत्मा है। देवताओं के भी देवों की आत्मा है अर्थात् वह ईश्वर परम आत्मा है। जो मनुष्य इस गूढ़ रहस्य कि परमात्मा ही आत्मा है को जान लेता है तो नानक (श्री गुरु नानक साहिब) उसका दास (सेवक) है और ऐसा व्यक्ति ही माया के प्रभाव से रहित परमेश्वर का ही रूप है। श्री गुरु अंगद देव जी आत्मा और परमात्मा की एक रूपता के रहस्य को जानने वाले को निरंजन (माया के प्रभाव से परे) परमात्मा का ही रूप मानते हैं तथा स्वयं को इस परम अवस्था तक पहुंचे हुए व्यक्ति का दास मानते हैं।

वास्तव में बाणी में इसी रहस्य का उदघाटन किया गया है कि किस प्रकार जीवात्मा एवं परमात्मा एक ही रूप है। जैसा कि पावन बाणी का संदेश है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
(पन्ना ४४१)

अत: मन का मूल स्वरूप ज्योतिमय है और उसे अपने मूल को जानने हेतु प्रेरित एवं प्रबोधित

Final

किया गया है और इसके विपरीत जब मन माया के प्रभाव के अधीन होकर अपने जीवन मार्ग से भटक जाता है तो आवागमन के चक्करों में भटकता रहता है। जैसा कि गुरबाणी में प्रमाण स्वरूप यह शबद अंकित है :

मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि ॥
माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि ॥
(पन्ना ४४१)

गुरबाणी आशयानुसार माया के प्रभाव से रहित केवल परमेश्वर का नाम है अगर कोई उस परिपूर्ण परमेश्वर का नाम जप कर मनन करना जाने। जैसा कि जपु जी साहिब की बाणी में श्री गुरु नानक पातशाह जी का पावन फरमान है :

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ (पन्ना ३)

और ऐसी अवस्था जिन्हें नसीब हो जाती है वही खालिस मार्ग के अनुगामी बनते हैं यथा भक्त कबीर जी की बाणी का प्रमाण है :

कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥ (पन्ना ६५५)

लेकिन ऐसी उच्चावस्था के मालिक इस संसार में कोई विरले ही हैं। जो यह तथ्य जानते हैं कि आत्मा पारब्रह्म परमेश्वर का ही रूप है। इस भेद को जो जान लेता है वही माया रहित प्रकाश स्वरूप है। उसी परमावस्था को प्राप्त हुए (खुश नसीब) जीवों पर तो गुरु साहिब स्वयं ही बलिहार जाते हैं। उपरोक्त सलोक में क्रिसनं शबद परमात्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है।

म : १ ॥
कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह जी ने मिट्टी के घड़े का दृष्टांत देकर समझाया है कि जिस प्रकार पानी घड़े में टिका रहता है लेकिन पानी के बिना घड़े का निर्माण नहीं हो सकता ठीक उसी प्रकार ज्ञान से बंध मन टिकता है लेकिन गुरु के बिना ज्ञान संभव नहीं है।

गुरु पातशाह जी पावन फरमान करते हैं कि जैसे पानी (जल) घड़े आदि बर्तन में ही पड़ा हुआ (भरा हुआ) एक स्थान पर एकत्र रहता है अर्थात् टिका रहता है लेकिन पानी के बिना घड़ा बन नहीं सकता अर्थात् घड़े को बनाने के लिए पानी चाहिए उसके बिना घड़े का निर्माण नहीं। (ठीक वैसे ही) गुरु के ज्ञान से बंधा यह मन एकाग्र रहता है अर्थात् इसमें ठहराव (टिकाव) आता है अर्थात् यह गुरु-ज्ञान उपदेश की बदौलत विकार ग्रस्त नहीं होता। लेकिन गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं।

अत: जिस प्रकार घड़े में बंधा हुआ जल एक जगह पर टिका रहता है उसी तरह ज्ञान में बंधा हुआ मन स्थिरता में टिका रहता है। लेकिन जैसे पानी के बिना घड़े का निर्माण नहीं हो सकता उसी प्रकार गुरु के ज्ञान के बिना यह चंचल मन एक जगह टिक नहीं सकता। इस तथ्य को इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि गुरु के बिना ज्ञान मनुष्य के अंदर टिक नहीं सकता। गुरबाणी में सच्चे गुरु की महिमा का बहुतायता से वर्णन किया गया है क्योंकि गुरु के बिना विवेक-बुद्धि की प्राप्ति नहीं। गुरबाणी आश्यानुसार गुरु के बिना न तो जीवन-युक्ति और न ही मुक्ति मुमकिन है। गुरु के बिना जीवन में अज्ञान का अंधेरा व्यापक हो जाता है और जिसके फलस्वरूप जीवन मार्ग की समझ नहीं आती गुरु के बिना सुरति, सफलता तथा मुक्ति संभव नहीं यथा गुरबाणी प्रमाण है :

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥
गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ (पन्ना १३९९)

Final

गुरु शबद दो अक्षरों के सुमेल से बना है गु+रु जिसका अर्थ भी स्पष्ट है 'गु' अर्थात् अंधेरा 'रु' अर्थात् प्रकाश अत: स्पष्ट है गुरु- जो अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर तथा नश्वरता से अमरता की ओर ले जाए। दशम् पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हमें शबद रूपी गुरु से दिशा-निर्देश लेकर जीवन में विचरण करने तथा आध्यात्मिक मार्ग में प्रभु मिलाप का मार्ग भी शबद द्वारा ही मुमकिन है इस तथ्य को उजागर किया है।

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ।
गुरू ग्रंथ जी मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभु को मिलबो चहे खोज सबद मैं लेह।
(पंथ प्रकाश)

अत: इस अमृतमयी बाणी से दिशा-निर्देश लेकर इसके अनुसार जीवन बना कर संसार रूपी भवसागर से पार उतरा जा सकता है। समर्थ गुरु ईश्वर की अपार रहमत से ही प्राप्त होता है। यथा गुरबाणी प्रमाण है :

पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी जीवन युक्ति है जहां समस्त खुशियों का आनंद लेते हुए जीवन दायित्वों को बाखूबी निभाते हुए मुक्तावस्था प्राप्त हो जाती है यथा पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की पावन बाणी इस संदर्भ में अंकित है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ (पन्ना ५२२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में गुरु साहिबानों की पावन ज्योति शबद रूप में समाहित है यथा :

एका जोति जोति है सरीरा ॥
सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ॥ . .
बाझु गुरू को सहजु न पाए गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ (पन्ना १२५)

अवश्यकता है तो पावन बाणी को श्रद्धा विश्वास एवं प्रेम भाव से पढ़-सुनकर हृदय में बसाने की।

पउड़ी ॥
पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥
जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥
ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥
पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥
मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु पातशाह जी ने कर्म फिलासफी के तथ्य को उजागर किया है तथा कलयुगी जीवों की एक ओर भ्रांति को तोड़ा है कि कहीं पढ़ा-लिखा इन्सान इस भ्रम में न रहे कि उसके कर्मों का कोई लेखा-जोखा उस मालिक की दरगाह में नहीं होगा और न ही अनपढ़ (अशिक्षत) व्यक्ति को इस बात का फिक्र करना चाहिए कि वह अनपढ़ रह गया तो मालिक की दरगाह में मेरा क्या होगा? असल में वहां तो जीव के मातृ लोक में किए गए कर्मों का फैसला होना है, दुनियावी पढ़ाई-लिखाई अथवा बाहरी ज्ञान का नहीं।

गुरु पातशाह जी पावन फरमान करते हैं कि अगर पढ़ा-लिखा व्यक्ति कुकर्मी (गुनहगार) हो तो इसका यह अर्थ नहीं कि (ईश्वर की दरगाह में) उसके गुनाहों (पापों) की सज़ा माफ है। (और इसके विपरीत) अनपढ़ व्यक्ति अगर वह बेगुनाह है अर्थात् अगर उसने पाप कर्म नहीं किए तो उसे मार पड़ेगी। कहने का अभिप्राय पढ़े-लिखे व्यक्ति को इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि दुनियावी ज्ञान की बदौलत उसके सब गुनाह माफ हैं और अनपढ़ व्यक्ति को इस बात कि तनिक भी चिंता नहीं करनी चाहिए कि अगर पढ़े-लिखे को दरगाह में मार

पड़ रही है। मेरा क्या हश्र (हाल) होगा? क्योंकि वहां मालिक की दरगाह पर तो कर्मों को आधार पर फैसला होता है। अत: पढ़े-लिखे अथवा अनपढ़ होने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

मनुष्य इस दुनिया में जिस तरह की करनी करता है उसका नाम वैसा ही विख्यात (प्रसिद्ध) हो जाता है। इस लिए संसार में रहते हुए कोई मंदी-कर्मी अर्थात् कुकर्म न किए जाएं जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य को जीवन रूपी बाज़ी हार कर मालिक की दरगाह में जाना पड़े।

पढ़े-लिखे अथवा अनपढ़ होने से कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वहां तो जीवों के द्वारा किए गए कर्मों पर ही विचार होता है। जो इस जगत में अपनी इच्छा अनुसार चलते हैं वे ईश्वर की दरगाह में दंड (सज़ा) के भागीदार बनते है अर्थात् दंड भोगते हैं।

उपरोक्त पउड़ी में स्पष्ट किया गया है कि कोई भी व्यक्ति अपनी दुनियावी किसी तरह की प्राप्ति के भ्रम-भुलेखे में अथवा गुमान में उसे ईश्वरीय दरगाह की प्राप्ति समझने की गुस्ताखी न कर बैठे क्योंकि यह ज्ञान मान-सम्मान सब यही धरा रह जाना है इसके अनुसार तेरी जी हजूरी मालिक की दरगाह में हरगिज़ नहीं होने वाली वहां तो इस जगत में किए गए तेरे पाप और पुण्य कर्मों का फैसला होना है और वह भी पूरी पारदर्शिता से सौ फीसदी न्याय पूर्वक। जैसा कि जपु जी साहिब की पावन बाणी में भी श्री गुरु नानक देव जी ने इसी तथ्य को उजागर किया है :

करमी करमी होइ वीचारु ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥
कच पकाई ओथै पाइ ॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥ *(पन्ना ७)*

अर्थात् मालिक की दरगाह में जीव के प्रत्येक कर्म का लेखा-जोखा होता है। उसके दरबार में संत जन (नेक कर्म करने वाले) ही शोभा पाते हैं बख़्शिश करने वाले परमेश्वर द्वारा उसकी दरगाह का सच्चा निशान पड़ता है। प्रत्येक जीव के सच एवं झूठ का निर्णय होता है और वहीं सच्ची परख होती है। उसकी दरगाह में पहुंच कर ही मालूम होता है कि किस की करनी श्रेष्ठ है और किस की निष्कृष्ट क्योंकि वहां सब स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने की कोशिश तो करते हैं लेकिन ईश्वर को कोई धोखा नहीं दे सकता।

विचारणीय बिंदू इस दुनिया में झूठ-फरेब, रिश्वतखोरी से सच को झूठ साबित किया जा सकता है लेकिन उसकी दरगाह में कोई प्रपंच नहीं, कोई रिश्वत नहीं वहां फैसला करने वाला सच्चा न्यायधीश वह परिपूर्ण परमेश्वर अकाल पुरख वाहिगुरु है। अत: हर पल उस परमेश्वर के भय में रहकर निर्मल कर्म करने चाहिए। क्योंकि वह परिपूर्ण परमेश्वर घट-घट की जानने वाला है, अंतर्यामी है। उससे कोई पर्दा नहीं। इस संसार में मन, वचन अथवा कर्म से किए गए प्रत्येक कर्म का लेखा उस मालिक को देना ही पड़ता है, इसलिए समय रहते इन्सान को सुचेत हो जाना चाहिए।

वेश कीमती श्वासों को व्यर्थ के पाप कर्मों में न गंवा कर हमें नेक कर्म करने चाहिए। मोह-ममता के जाल में फंस कर जीव जिनके लिए पाप कर्म करता है उन्होंने कर्मफल का भागीदार हरगिज़ नहीं बनना। अत: नेक कर्म करें ताकि नेक संस्कारों को हम अपने साथ उकेर कर मालिक की दरगाह में शोभा पाएं और हमारा लोक-परलोक सफल हो जाए। यही अरदास वाहिगुरु के चरणों में हर रोज़ करनी है।

ख़बरनामा

सिंघ साहिब ज्ञानी तरलोचन सिंघ जी की तसवीर केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय में सुशोभित की गई।

श्री अमृतसर : १२ दिसंबर : गुरमुख शख़्सियत, नाम-बाणी के रसीए, पंथक सोच के धारणी तथा सिक्खी प्रचार के पुंज, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब के भूतपूर्व जत्थेदार स्वर्गीय सिंघ साहिब ज्ञानी तरलोचन सिंघ जी की तसवीर श्री दरबार साहिब के केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय में सुशोभित की गई। उनकी तसवीर से पर्दाकशी की रस्म सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब, सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ जत्थेदार तख़्त श्री केसगढ़ साहिब श्री अनंदपुर साहिब, सिंघ साहिब ज्ञानी इकबाल सिंघ जत्थेदार तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब (बिहार) तथा प्रो किरपाल सिंघ बडूंगर, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने अदा की। इससे पहले सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के कीर्तनीए भाई राय सिंघ के रागी जत्थे द्वारा इलाही बाणी का कीर्तन कर संगत को निहाल किया तथा अरदास भाई सलविंदर सिंघ ने की।

इसके उपरांत संगत से गुरमति विचारों की सांझ डालते हुए प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, अध्यक्ष, शिरमोणि गु. प्र. कमेटी ने कहा कि इन्सानी जीवन-मूल्यों पर पहरा देने तथा अपनी निर्माणिक सोच को पंथक कार्यों में लगाकर सिक्ख कौम को नयी दिशा प्रदान करने वाली महान शख़्सियत सिंघ साहिब ज्ञानी तरलोचन सिंघ जी भूतपूर्व जत्थेदार तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब एक सच्चे पंथक सेवादार थे, जिन्होंने ग्यारह वर्ष तख़्त श्री केसगढ़ साहिब की सेवा-संभाल सिंघ साहिब के रूप में पूरी निष्ठा व दियानतदारी से निभाकर सेवा की एक अलौकिक मिसाल कायम की।

सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने समागम में हाज़िर संगत को अपने संबोधन में कहा कि सिक्ख धर्म के प्रचार व प्रसार की मुहिम को प्रचंड करने वाले, पंथक एकता के धारणी तथा संगत में सेवा के संकल्प को उभारने वाले ज्ञानी तरलोचन सिंघ जी बेशक शारीरिक रूप से तीन वर्ष पहले सदीवी बिछोड़ा दे गए हैं किंतु उनके द्वारा किए गए पंथक कार्यों की बहुमूल्य यादें हमेशा हमारे अंग-संग बसती रहेंगी। इसी उद्देश्य के मद्देनज़र शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष प्रो किरपाल सिंघ बडूंगर की योग्य अगुवाई तले कार्यकारिणी द्वारा लिए गए फैसले के अनुसार ज्ञानी जी की तसवीर केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय में सुशोभित करना समूचे पंथ के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम के महान शहीदों, पंथ को चढ़दी कला करने वाली तथा सिक्खी के ध्वज को विश्व स्तर पर बुलंद करने वाली प्रमुख शख़्सियतों की तसवीरों को केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय में सुशोभित करना अपनी विरासत को संभाल करने वाले बहुमूल्य कार्य हैं। जिस सदका हमारी आने वाली पीढियां उन महान पंथक शख़्सियतों के कार्यों तथा सिक्खी के गौरवशाली इतिहास से अवगत होकर अपनी विरासत के साथ जुड़ सकेंगी। इसके उपरांत प्रो. किरपाल सिंघ जी बंडूगर, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ तथा सिंघ साहिब ज्ञानी

Final

इकबाल सिंघ ने स्वर्गीय सिंघ साहिब ज्ञानी तरलोचन सिंघ जी की धर्म पत्नी बीबी अवतार कौर, सपुत्र स. हरदेव सिंघ तथा उनकी दोनों सपुत्रियां बीबी परमिंदर कौर और बीबी राजविंदर कौर को सिरोपा देकर सम्मानित किया।

इस मौके सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ के अतिरिक्त मुख्य ग्रंथी सचखंड श्री हरिमंदर साहिब, सिंघ साहिब ज्ञानी जोगिंदर सिंघ वेदांती भूतपूर्व जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब, स. अमरजीत सिंघ चावला जनरल सचिव, स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवढ सदस्य कार्यकारिणी, स, गुरनाम सिंघ जस्सल सदस्य, स. अजैब सिंघ अभ्यासी सदस्य धर्म प्रचार कमेटी, स. रत्न सिंघ जफ़रवाल, बाबा तीरथ सिंघ जी श्री अनंदपुर साहिब, स. सतपाल सिंघ अम्बेंस्डर ऑफ सिक्ख धर्म, बाबा हरिदयाल सिंघ जत्था हरीआं वेलां तरणा दल, बाबा सवरन सिंघ सरा पत्तण, स. हरदलबीर सिंघ शाह, स. सुखदेव सिंघ भूरा कोहना निजी सचिव, स. हरभजन सिंघ मनावां, स. बलविंदर सिंघ जौड़ा सिंघा, स. रणजीत सिंघ तथा डॉ. परमजीत सिंघ सरोआ अतिरिक्त सचिव, स. सुलक्खण सिंघ भंगाली मैनेजर श्री दरबार साहिब, स. सिमरजीत सिंघ उप सचिव, स. कुलविंदर सिंघ रमदास उप सचिव, स. मुखतार सिंघ मैनेजर तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब, स. लखविंदर सिंघ, स. हरजिंदर सिंघ तथा स. इकबाल सिंघ अतिरिक्त मैनेजर, ज्ञानी सुखविंदर सिंघ भूतपूर्व मुख्य ग्रंथी तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, भाई गुरदियाल सिंघ, बाबा सवरन सिंघ, भाई जगदेव सिंघ प्रभात ज़ीरकपुर, स. कुलदीप सिंघ कपूरथला, स. जगतार सिंघ कुराला, भाई राम जी दास (बालू राम जी) तथा भाई दिलदार सिंघ आदि हाज़िर थे।

प्रो. किरपाल सिंघ बंडूगर ने तृतीय कक्षा में पढ़ती बच्ची के स्कूल प्रबंधकों द्वारा ज़बरन केश कत्ल करने की कड़ी निंदा की।

श्री अमृतसर : १५ दिसंबर : प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने मदर प्राईड स्कूल सर्क्यूलर रोड़, दीनानगर के डायरेक्टर तथा उसके पुत्र द्वारा तृतीय कक्षा में पढ़ती बच्ची के केश कत्ल करने की सख़्त शब्दों में निंदा की है। प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने कहा कि केश सिक्ख की पहचान है तथा किसी बच्ची के ज़बरन केश कत्ल करना कोई छोटा अपराध नहीं बल्कि बहुत ही शर्मसार करने वाली अभाग्यपूर्ण घटना है। उन्होंने कहा कि स्कूल प्रबंधकों द्वारा की गई गलती माफ करने योग्य नहीं है। उन्होंने कहा कि इस घटना के घटित होने से देश-विदेश में बैठे सिक्खों के मनों को भारी ठेस पहुंची है। उन्होंने कहा कि एक सिक्ख को अपनी सिक्खी केशों संग निभाने का गुरु साहिब द्वारा उपदेश दिया गया है किंतु प्रबंधकों द्वारा ऐसी घटिया हरकत के कारण सिक्खों के सिदक को ठेस पहुंचाई गई है। उन्होंने प्रशासन को ज़ोर देकर कहा कि दोषी स्कूल प्रबंधकों के खिलाफ़ सख़्त कार्यवाही की जाए।

ज़िक्रयोग्य है कि उक्त स्कूल की तृतीय कक्षा की विद्यार्थी ईशा सपुत्री स. मंगल सिंघ स्कूल में दो चोटियां करने की बजाए एक चोटी करके आई थी। सारा दिन स्कूल में कलास अटैंड करने के बाद जब शाम को वह अपने घर जाने लगी तो स्कूल के डायरेक्टर के पुत्र ने उसको एक चोटी किए हुए देख लिया। इस पर उसने अपने पिता जो स्कूल का डायरेक्टर था, के साथ मिलकर बच्ची के ज़बरन केश काट दिए।

Final